!! ओं जयहिन्द् सनातन वेदधर्मो विजयतेतराम् !!

ओं

!! जय हिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि !!

!! ओम्कार भजन दर्शन !!

—: सम्पादक : —

धर्मधुरंधर ! महामहोपदेशक ! सद्गुरुदेव ! व्याख्यान वाचस्पति ! श्रोत्रिय ब्रह्मविद्-वरिष्ठ ! सनातन धर्मगुरु ! श्री हरेराम-ब्रह्मर्षि महाराज !

—: सुप्रकाशक :—

सनातन धर्मोपदेशक ! श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ! पंडित श्री गुरुदेव हरेराम ब्रह्मर्षि महाराज ! पताः—ऋषि आश्रम ! पंडितजीकी पोळ ! सारंगपुर ! पो. मु. अमदावाद ! देश गुजरात !

मूल्य रू. ६—०—०





!!जयहिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि!!

!! ओम्कार भजन दर्शन !!



श्री वीर विजय प्री प्रेसमां देसाई मगनभाई छोटाभाईए
छाप्युं सलापोस क्रोसरोड, अमदावाद

!! ओम्कार भजन दर्शन !!

!! ग्रन्थ स्वरूप दर्शन !!



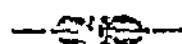
! जय ओं ! ओं ब्रह्म स्वरूप सौ जन्य-धन्य सज्जनो ! ब्रह्मर्षि महाराज के सप्रेम आशीर्वाद! विदित करने का यह है कि:—

अनुभव सिध्ध स प्रमाण शास्त्र ग्रन्थो का शोध करके जय हिन्द सनातन वेद धर्म की रक्षा और प्रचार के लिये:—



!! जय हिन्दे श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि !!

!! ओम्कार भजन दर्शन !!



ओम्कार भजन दर्शन नाम का ग्रन्थ हमने सुः प्रसिध्ध किया है! इस ग्रन्थ में शौर्यवान प्रभाववंत हिन्दी ओम्कार मन्त्र के उपदेश भजन है ! . .

अखिल विश्व में मनुष्य प्राणि मात्र को सर्व समय में भगवान परंब्रह्मदेव का ध्यान भजन करने का और ब्रह्म मन्त्र ओम्कार का जप करने का जन्म सिध्ध संपूर्ण अधिकार है !!

शुक्ल यजुर्वेद ! कृष्ण यजुर्वेद ! ऋग्वेद ! सामवेद ! अथर्ववेद ! अध्याय ! मन्त्र ! हिन्दी भाषानुवाद स प्रमाण है !

चार वेद के उपनीपद. ईशावास्य ! कठ ! प्रश्न ! मांडुकय तैत्तिरीय ! छान्दोग्य ! बृहदाराण्यक ! श्वेताश्वतर ! कैवल्य ! गर्भ ! पशुपत ! रुद्र रहस्य ! मैत्रायणि ! गोपाल-तापनि ! शाटयायनी ! शांडिल ! तारसार ! योगतत्व ! आत्म प्रबोध ! नारायण ! ध्यान बिन्दु ! तेजो बिन्दु ! अथर्वशिर ! अथर्व शिख ! अमृतनाद ! योगचूडामणि ! असे अकसो बारा उपनिषद् ओम्कार मन्त्र में सप्रमाण है !

मानव धर्मशास्त्र ! मन्त्र शास्त्र ! मुक्त-शास्त्र ! तन्त्र शास्त्र ! महर्पि ब्रह्मर्षि पाणी-नीय व्याकरण शास्त्र ! शिव स्वरोदय शास्त्र ! योग शास्त्र ! षड् दर्शन शास्त्र ! ओम्कार मन्त्र में अनेक शास्त्र स प्रमाण है !



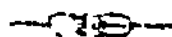
शुक्ल यजुर्वेद कल्पसूत्र ! वेदांग याज्ञवल्क्यशिक्षा ! सर्वानुक्रम सूत्र ! प्रातिशाख्य-सूत्र ! आपस्तम्ब धर्म सूत्र ! बोधायन धर्म सूत्र ! छान्दोग्य परिशिष्ट सूत्र ! ओम्कार मन्त्र में स प्रमाण है !



शुक्ल यजुर्वेद दीर्घ पाठ संहिता ! कृष्ण यजुर्वेद संहिता ! कैलास संहिता ! वायु-संहिता ! ज्ञान संहिता ! सनत् कुमार-संहिता ! सुत संहिता ! मनु संहिता ! विश्वेश्वर संहिता ! ओम्‌कार मन्त्र में स प्रमाण है !



भागवत महापुराण ! देवी भागवत महापुराण ! महा शिव पुराण ! महा विष्णु पुराण ! महा गरुड पुराण ! सूर्य पुराण ! कूर्म पुराण ! लिंग पुराण ! मार्कंडेय पुराण ! स्कन्द पुराण ! वायु पुराण ! अैसे अढार पुराण ओम्कार मन्त्र में स प्रमाण है !



महर्षि वाल्मिक रामायण ! योगवासिष्ठ-महा रामायण ! महा भारत ! भगवद्-गीता ! उत्तर गीता ! शांकर वेदान्त ! ओम्कार मन्त्र में स प्रमाण है !



महाराष्ट्र देश के सु प्रसिद्ध महासिध्ध संत ज्ञानेश्वर महाराज का ओम्कार मन्त्र उपदेश स प्रमाण है !



महाराष्ट्र देश के सु प्रसिध्ध संत तुकाराम भक्तराज का ओम्कार मन्त्र उपदेश अभंग काव्य स प्रमाण है !



पंजाब देश के सु प्रसिध्ध महासिध्ध गुरु नानकजी महाराज का ओम्कार मन्त्र भजन उपदेश स प्रमाण है।



भगवान् महेश्वर महादेव शंकरका अवतार! जगद् गुरु आद्य शंकराचार्य का ओम्कार मन्त्र उपदेश स प्रमाण है!

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वति का ओम्कार मन्त्र उपदेश स प्रमाण है!

वँगाल देशके स्वामी विवेकानन्द महाराज का ओम्कार मन्त्र उपदेश स प्रमाण है !



स्वामी रामतीर्थ महाराज का ओम्कार मन्त्र उपदेश स प्रमाण है !



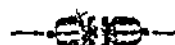
महाराष्ट्र देश के सुप्रसिद्ध महासिद्ध ब्रह्मचारी समर्थ राम स्वामी महाराज का ओम्कार मन्त्र उपदेश धर्मज्ञान शिक्षा स प्रमाण है !



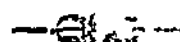
हिमालय के भगवान बोधायन महर्षि की अति प्राचीन ओम्कार् ब्रह्म मन्त्र कल्प विद्या !



! परंब्रह्म व्याहृति मन्त्र कल्प विद्या !



ओं महादेवी महालक्ष्मी श्री देवी कल्पविद्या मन्त्र अर्थ स प्रमाण है !!



चारो वेदो के मन्त्र अर्थ स प्रमाण है !



सर्पभय नाशक मन्त्र उपदेश स प्रमाण है!



धर्म धुरंधर! सनातन धर्मगुरु! ब्रह्मर्षि-
महाराज के प्रवचन उपदेश स प्रमाण है !!



भगवान् धन्वन्तरी के आयुर्वेद चरक संहिता
की धर्मज्ञानशिक्षा! सुश्रुत संहिता की धर्म-
ज्ञान शिक्षा! कृष्ण–यजुर्वेद धर्मज्ञान शिक्षा!
आदेश उपदेश मन्त्र अर्थ स प्रमाण है !



!!ओम्कार भजन दर्शन ग्रन्थ!! धर्म नीति
भक्ति ज्ञान वर्धक सर्वोत्तम सन्मार्ग दर्शक
उपदेशक है। मनुष्य जीवनका महान्
उध्धारक है !



!! ओम्कार भजन दर्शन ग्रंथको मंगाकर
पूज्य, प्रेमी, प्रिय, सज्जनोको प्रचार
करो !! दान भेट समर्पण करो !!



ओम्कार भजन दर्शन ग्रन्थ मूल्य रू. २ पोष्टेज. वी. पो. अलग है !



अपना नाम गाँव, पोष्ट, स्टेशन, ता. जी. पुरा शुध्ध–पता लिखो !



ग्रंथ मंगानेका पताः—

धर्म धुरंधर ! सनातन धर्मगुरु ! श्री हरे राम ब्रह्मर्षि महाराज !



ऋषि आश्रम, पंडितजीकी पोळ, सारंगपुर, पो० मु० अमदावाद !! देश गुजरात !!





‼ अनुक्रम नाम संख्या दर्शन ‼

अनुक्रम नाम | पृष्ठ संख्या



जयहिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि

ओम्कार भजन दर्शन



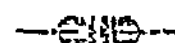
!! भज मन ओं ब्रह्मनिरन्तरम् !

—: अर्थ :—

हे ! मन ! सदा ओं ब्रह्म का ध्यान भजन करो !!



!! जय ओं नमः !!



ओं

!! जय हिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार भजन दर्शन !!

!!ग्रन्थ प्रारम्भ मंगल दर्शन!!।। १ ।।

!! ओं !! जय हिन्द सनातन वेदधर्मो
विजयतेतराम्!!
हिन्दुस्तान का सदा जय हो!
अखिल विश्व में सनातन वेद धर्मका
जय जय विजय हो !!!



!! ओं !! गणपतिं प्रियपति निधिपतिं हवामहे !!

विश्व के परमेश्वर, आनन्द के महेश्वर, ऐश्वर्य के सर्वेश्वर, ऐसे परंब्रह्म भगवान् का ध्यान धरकेः—

!! जयहिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार भजन-दर्शन !! नामका ग्रन्थ हम प्रारम्भ करते है. ! ! !



!! श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि उपदेश दर्शन !!



मानव जन्म धर्याका मान,
करना तप यज्ञ बहु दान;
धरना ब्रह्मस्वरूपका ध्यान,
करना ओम मन्त्रका गान;

मात पिता गुरु जन को मान,
सूर्य अग्नि को सन्मान;

चेतन चतुर पुरुष को ज्ञान,
गुरुदेव ब्रह्मर्षि विज्ञान ॥ १ ॥



सत् चित् आनंद सुख कंद,
जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म; ॥ २ ॥



जय ओम् नमो जय ओम् नमो–
जय ओम् नमो जय ओम् ॥ ३ ॥



भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम् ॥ ४ ॥

–: अर्थ :–

हे मन ! सदा ओम् ब्रह्मका भजन कर ॥५॥



॥ श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि-वन्दन दर्शन ॥॥२॥



ब्रह्मर्षि गुरुदेव वंदनं,जय मंगल आनंद करम्. ॥१॥

आसन चन्दन पुष्प अर्पणं,
दिव्य वस्त्र शणगार धरम्. ॥ २ ॥

पय साकर नवनीत अर्पणं,
मंगल आरति प्रेमकरम्. ॥ ३ ॥

ब्रह्मर्षि चरणामृत पानं,
ब्रह्मज्ञान प्रकाश करम्. ॥ ४ ॥

गुरु ब्रह्मर्षि भेट प्रदानं,
प्रेमीजन उध्धार करम्. ॥ ५ ॥

ब्रह्मर्षि महाज्ञान स्वीकारं,
ब्रह्मरूप तद्रूप करम्. ॥६॥

ब्रह्मर्षि गुरुदेव दर्शनं,
धन धन जीवन्मुक्त करम्. ॥ ७ ॥



॥जय ओम् भजन दर्शन.॥॥ ३ ॥



(राग–मन्त्र ओम् को हरदम जपते रहो)



ओम् जय ओम् जय ओम् गाते रहो,
अहं ब्रह्म की धुन लगाते रहो. ॥ओम्०॥ १ ॥

ब्रह्म सत् चित् आनंद समझी रहो,
जीव ब्रह्म की एकता करते रहो. ॥ओम्०॥२॥

शुभ संपत दैवी मिलाते रहो,
श्रद्धा भक्ति से ध्यान लगाते रहो.॥ओम्०॥३॥

ब्रह्म जीव जगत एक जाणी रहो,
वेद धर्मका पालन करते रहो. ॥ओम्०॥४॥

तप संयम साधन सिध्ध करो,
कर्म ब्रह्म समर्पण करते रहो. ॥ओम्० ॥५॥

ब्रह्म सद्गुरु सेवामें प्रेमी रहो,
ब्रह्म विद्याके चिन्तन करते रहो.॥ओम्०॥६॥

गुरु ब्रह्मर्षि उपदेश सुनते रहो,
ब्रह्मरूप में तद्रूप बनते रहो. ॥ ओम्०॥७॥

॥ मन्त्र ओम् भजन दर्शन.॥॥४॥

(राग—ओम् जय ओम् जय ओम् गाते रहो.)

मन्त्र ओम् को हरदम जपते रहो,
ध्यान ब्रह्मका निशदिन धरते रहो. ॥मन्त्र०॥१॥

सन्ध्या सायं प्रातः करते रहो,
अग्निहोत्रमें घृत होम देते रहो. ॥मन्त्र०॥२॥

तर्पण देव ऋषि पितृ करते रहो,
वैश्वदेव भोजन बली देते रहो. ॥मन्त्र०॥३॥

गुरु ब्रह्म स्वरूपको पूजते रहो,
सदा विप्र सु पूज्यको वन्दन करो. ॥मन्त्र०॥४॥

धन जोवन विद्यादि मद न धरो,
यज्ञ दान तप जप करते रहो. ॥मन्त्र०॥५॥

ब्रह्म विद्याक स्वाध्याय पढते रहो,
श्रवण मनन कर्तव्य करते रहो. ॥मन्त्र०॥६॥

शूर सत्यवादी धीर वीर बनो,
मनोजित अभय ने उदार रहो. ॥मन्त्र०॥७॥

श्रध्धा भक्ति से धर्मकी वृध्धि करो,
धर्म वेद सनातन पालन करो. ॥ मन्त्र० ॥ ८ ॥

नित्य योगका अभ्यास करते रहो,
गुरु ब्रह्मर्षि ज्ञान समझते रहो. ॥ मन्त्र० ॥ ९ ॥

!! मधुवन ब्रह्म भजन दर्शन. !! ॥५॥

अनुभव दर्शन ब्रह्म हुवा,
मधुवनमे यमुना के तटमें. ॥ अनु० ॥ १ ॥

प्रणव नादकी धुन लगनमें,
ज्योति ब्रह्मकी झलक रहा. ॥ अनु० ॥ २ ॥

परा भक्ति में प्रेम लगा कर,
अनहद आनन्द आय रहा. ॥ अनु० ॥ ३ ॥

निरंजन देव सदा दे दर्शन,
हरदम लक्ष्य लगाय रहा. ॥ अनु० ॥ ४ ॥

स्वरूप ब्रह्मकी जब ईच्छा हो,
तन्मय ध्यान लगाय रहा. ॥ अनु० ॥ ५ ॥

परब्रह्मका दर्शन करके,
आनन्द आज अपार हुवा. ॥ अनु० ॥ ६ ॥

ब्रह्मर्षि गुरुदेव कहत है,
मानव जन्म कृतार्थ हुवा. ॥ अनु० ॥ ७ ॥



॥चैतन आनन्द भजन दर्शन॥ ॥६॥



चैतन आनन्द ब्रह्म हुं छुं, ॥ ध्रुव ॥
असंग व्यापक ब्रह्म हुं छुं,
सत्य सनातन ब्रह्म हुं छुं. ॥ चैतन० ॥ १ ॥

मंगल ज्योति ब्रह्म हुं छुं,
ओम्कार अक्षर ब्रह्म हुं छुं. ॥ चैतन० ॥ २ ॥

मन वाणी पर ब्रह्म हुं छुं,
अलख निरंजन ब्रह्म हुं छुं ॥ चैतन० ॥ ३ ॥

हुं छुं ब्रह्म अखंड ए मानो,
ब्रह्म निरंजन धाम पामो ॥ चैतन० ॥ ४ ॥

ब्रह्मर्षि गुरुदेव गावे,
ब्रह्म स्वरूप मय हो जावे ॥ चैतन० ॥ ५ ॥



!! परब्रह्म मन्त्र भजन दर्शन. !! ॥७॥



पर ब्रह्म मन्त्र ओम्, जपवो ओम् ओम् ओम्,
जपवो ओम् ओम् ओम्,
जपवो ओम् ओम् ओम्. ॥ पर० ॥ १ ॥

वेद शास्त्रो नो ए सार,
जपवो ओम् ओम् ओम्. ॥ पर० ॥ २ ॥

ऋषि मुनि सिध्धोनो आदेश,
जपवो ओम् ओम् ओम्. ॥ पर० ॥ ३ ॥

भजे ए ब्रह्मा विष्णु महेश,
जपवो ओम् ओम् ओम्. ॥ पर० ॥ ४ ॥

सर्व मन्त्रोमां ए श्रेष्ठ,
जपवो ओम् ओम् ओम् ॥ पर० ॥ ५ ॥

सर्व दुःख संकट हरनार,
जपवो ओम् ओम् ओम् ॥ पर० ॥ ६ ॥

गुरुदेव ब्रह्मर्षि उपदेश,
जपवो ओम् ओम् ओम् ॥ पर० ॥ ७ ॥

॥परब्रह्म मन्त्र भजन दर्शन.॥ ॥८॥



परब्रह्म मन्त्र ओम् जपवो ओम् ओम् ओम्,
जपवो ओम् ओम् ओम्,
जपवो ओम् ओम् ओम्. ॥पर०॥१॥

तारा मां जेम चन्द्र शोभे,
मन्त्रो मां ए ओम्. ॥ पर० ॥ २ ॥

नित्य निरंजन निर्गुण ब्रह्म,
सिध्ध सनातन ओम्. ॥ पर० ॥ ३ ॥

आकाशे जेम सूरज शोभे,
जीवन मां ए ओम्. ॥ पर० ॥ ४ ॥

सिध्ध सकलनुं दैवत ए छे,
योगीयोनो ओम्. ॥ पर० ॥ ५ ॥

साधक ने सिध्धि बहु दे छे,
सूक्ष्म वेद ओम् ॥ पर० ॥ ६ ॥

गुरु ब्रह्मर्षि आज्ञा ए छे,
सर्वे जपवो ओम् ॥ पर० ॥ ७ ॥



!! श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि स्वागत-पूजन गीतदर्शन !! ॥९॥



जय जय आनंद मंगल आज,
पधारो ब्रह्मर्षि गुरुराज. ॥ जय० ॥ १ ॥

समर्पण आसन सद्गुरुदेव,
विराजो ब्रह्मर्षि गुरुदेव. ॥जय० ॥ २ ॥

समरपुं चन्दन सुमनहार,
दिव्य वस्त्रोने शणगार. ॥ जय० ॥ ३ ॥

नवनीत पंचामृत उपहार,
समरपुं षड्रस भोजन थाळ. ॥जय० ॥४॥

प्रकाशक दीप सुगंध अपार,
आरति आनन्द मंगल आज. ॥जय०॥५॥

समरपुं रत्न सुवर्ण अपार,
मनोहर हीरा मोती हार. ॥जय०॥ ६ ॥

सद्गुरु चरणामृतनु पान,
पावन मंगल परम महान. ॥जय०॥७॥

गुरु ब्रह्मर्षि दर्शन पूजन,
जय जय हो गुरुराज. ॥जय०॥८॥

कहे गुरुदेव ऋषिदर्शनथी,
धन धन जीवन आज. ॥जय०॥९॥



॥ गुरू ब्रह्मर्षि तप योग प्रभाव दर्शन ॥ ॥१०॥



ओम् आनंद आनन्द देव,
जय जय ब्रह्मर्षि गुरुदेव. ॥ ध्रुव० ॥

गुर्जर सोरठ पाटण कानम,
वाकळ विविध प्रदेश,

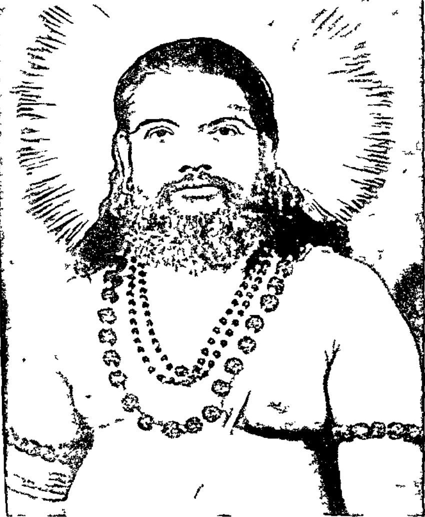
ओं

शुक्ल यजुर्वेद प्रसिद्ध

ओंकार दर्शन । ॥११॥

[illegible] ॥ १ ॥ ओम्कार मन्त्र [illegible] ॥ १ ॥ शुक्ल यजुर्वेद [illegible] १५ प्रमाणम् ॥

[illegible] ॥ २ ॥ ओम् मन्त्र आ- [illegible] व्यापक: पूर्ण ब्रह्म स्वरूप ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ ओम्कार एकाक्षर [illegible] सर्व यज्ञ सत्कर्म में स्मरण करो. [illegible] यजुर्वेद अध्याय चालीस मन्त्र १५,१८, प्रमाणम् ॥



श्री हरराम ब्रह्मर्षि महाराज

ऋषि आश्रम ... **अमृतसर**

वेदांग शिक्षा प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥१२॥



प्रणवं प्राक् प्रयुन्जित व्याहृतिस्तदनन्तरम् ।
सावित्रीं चानु पूर्वेण ततो वेदान्समारभेत् ॥४॥

प्रथम ओम्कार पढो पिछे भूर्भुवः स्वः ए तीन व्याहृति पढो पिछे तच्छवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धिमहि, धियो जोनः प्रचोदयात् ओं ! ए सूर्य ब्रह्मका गायत्रि छन्दमें गुंथा हुवा गायत्रि ब्रह्म मन्त्र पढ कर के वेदशास्त्र पढने का समारंभ करो. ॥ ४ ॥

शुक्ल यजुर्वेद महर्षि याज्ञवल्क्य ब्रह्मर्षि वेद शिक्षा मन्त्र २१–२२ प्रमाणम् ॥



वेदांग व्याकणर शास्त्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन!॥ १३



ओम् अभ्यादाने ॥ ५ ॥ ओम्मन्त्र का उच्चार करते करते सर्व प्रकारके दान ब्रह्मार्पण करते रहो, ॥ ५ ॥

ओम् शब्दस्य प्लुतः स्याद आरम्भे ओम् ॥६॥ ओम् मन्त्रका महा उंचे स्वरसे उच्चार करके सर्व कार्यका प्रारंभ करो. ॥ ६ ॥

ओमित्येकाक्षरम् ॥ ७॥ ओं एक अक्षरका मन्त्र ब्रह्म स्वरूप है ॥ ७ ॥

महर्षि पाणीनीय व्याकरण अष्टाध्यायी सूत्र १८, २, २७ प्रमाणम् ॥



शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य सूत्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥ १४ ॥



ओम्कारः स्वाध्यायादौ ॥ ८ ॥

वेदशास्त्रके वेदाध्ययन, स्वाध्याय, सर्व प्रकारके कार्य प्रारम्भ में प्रथम उंचे स्वरसे ओम्कार मन्त्र पढो. ॥ ८ ॥

ओम्काराथकारौ ॥ ९ ॥ ओम्कार मन्त्र, और अथ शब्द दो शब्द मंगल वाचक है, ओम्कारं वेदेषु ॥ १० ॥ सर्व वेदोमें ओम्कार ब्रह्ममन्त्र श्रेष्ठ है ॥ १० ॥



शुक्ल यजुर्वेद सर्वानुक्रम सूत्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन! ॥१५॥



ओम् इति नाम निर्देशो ब्रह्मणः ॥ ११ ॥

परब्रह्मका वाचक स्वयंभु ओम्कार मन्त्र हैं ॥११॥

ओमिति परमाक्षरस्य योगिनामालंबभूतस्य परस्य ब्रह्मणः प्रणवाख्यस्यास्थूलादि गुण युक्तस्य ब्रह्मऋषि छन्दो गायत्र्यं परमात्मा देवता ब्रह्मारम्भे विरामे च याग होमादिपु शान्ति पुष्टि कर्मसु चान्येष्वपि काम्यनैमित्तिकादिषु सर्वेषु विनियोगः ॥ १२ ॥

ओम् एक अक्षरका ब्रह्म मन्त्र योगियो का साधन है सूक्ष्म व्यापक स्वयंभु परब्रह्म मन्त्रं ओम्कारको--प्रणव कहते है ओम्कार मन्त्रका ब्रह्मऋषि है गायत्रि छन्द है परमात्मा देवता है वेदशास्त्र अध्ययन के प्रारंभ में और संपूर्ण में यज्ञ, होम, शान्ति, पुष्टि कर्म, काम्य-कर्म, नैमित्तिक कर्म, अन्य सर्व कार्य में आदि और अन्तमें ओम्कार मन्त्र उच्चार करना एहि सर्व मनुष्य को वेदोका उपदेश आदेश आज्ञा है.

शुक्ल यजुर्वेद सर्वानुक्रम सूत्र अध्याय चार प्रमाणम् ॥ १२ ॥

—ॐ—

शुक्ल यजुर्विधान प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥१६॥



ओमित्येकाक्षरस्य परब्रह्मणो नामधेयं वेदारंभे समाप्तौ च जप होमादिषु शान्ति पुष्टि कर्मसु चैतत् प्रयुज्यते ॥

एतत् विदित्वा सर्वविद्भवति एत दुपास्य रवि सिध्धि भागू भवति--कल्याणतरो भवति ॥ १३ ॥

एकाक्षर ओम्कार परब्रह्मका मन्त्र है वेदशास्त्रके पठन पाठनमें जप, होम, शान्ति, पुष्टि, यज्ञ, सर्व प्रकारके कर्म मात्र में प्रारंभ और समाप्तिमें ओमकार मन्त्रका उच्चार करो॥

ए वेद उपदेश आज्ञा पालन करनेवाले सर्वज्ञान विज्ञानको पाते है.

भगवान् सूर्यदेवके वरदान पात्र होते हे महामोक्ष परब्रह्मरूप होते है ॥ १३ ॥



आपस्तम्ब धर्मसूत्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !॥१७॥



ओम्कार स्स्वर्ग द्वारम् ॥ १४ ॥

ओम्कार ब्रह्म मन्त्रका जप करनेवाला मनुष्य स्वर्ग मोक्षको पाता हे ॥ १४ ॥



शुक्ल यजुर्वेद कल्पसूत्र सुप्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !॥१८॥



ओम्कारः सर्वे वेदेषु ॥ १५ ॥

ऋग्वेद, कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चारवेद, ब्राह्मणमन्त्र, वेदो के सर्वे उपनिषद सर्वमें परब्रह्ममन्त्र ओम्कारका भजन करने कि आज्ञा उपदेश है. ॥ १५ ॥

ओम्कारश्चाथ शब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा कंठं भित्वा विनिर्यातौ तस्मान्मांगलिकावुभौ ॥ १६ ॥

पूर्वे सृष्टि के प्रारंभमें भगवान् ब्रह्माने

ओम्कार मन्त्र और अथ शब्दका मंगल उच्चार किया तबसे सनातन हिन्दु वेद धर्म शास्त्र में ओम्कार मन्त्र पर मंगल है. ॥ १६ ॥

शुक्ल यजुर्वेद कल्पसूत्र प्रमाणम् ॥



भगवान् बोधायन सूत्र सुप्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥ १९ ॥



प्रणवाद्यास्तथा वेदाः प्रणवे पर्यवस्थिताः ।
वांगमयं प्रणवं सर्व तस्मात् प्रणवमभ्यसेत् ॥१७॥

सर्व वेदो ओम्कार मय है सर्व प्रकारकी

वाणी ओम्कारमय है सर्व वेदो से प्रथम प्रणव मंगल ओम्कार मन्त्र है,

सर्व मनुष्यो सदाकाल ओम्कार मन्त्रका जप करो. ॥ १७ ॥

प्रणवेन विहीनं यत् तन् मन्त्रं प्राणहीनकम् । सर्व मन्त्रेषु मन्त्राणां प्राणः प्रणव उच्यते ॥ १८ ॥

सर्व प्रकारके मन्त्रोमें मन्त्रोका प्राणरूप प्रणव ओम्कार मन्त्र हि है ।

ओम्कार मन्त्र रहित जगतका कोई भि मन्त्र का जप दैवतहोन निष्फल है ॥१८॥

दर्शन शास्त्र सुप्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥२०॥



तस्य वाचकः प्रणवः ॥ १९ ॥

परब्रह्मका भजन करनेवाले प्राणिमात्रको परब्रह्मका वाचक प्रणव ओम्कार मन्त्र है. ॥ १९ ॥

तज्जपस्तदर्थ भावनम् ॥ २० ॥

अहं ब्रह्मास्मि—में ब्रह्म स्वरूप हुं—ए विचार के साथ प्रणव ओम्कार मन्त्रका सदा जप करो ॥ २० ॥

पातंजल योगदर्शन शास्त्रसमाधिपाद सूत्र ॥ २७–२८ ॥



मुक्तशास्त्र प्रसिद्ध ओम्कार दर्शन ! ॥२१॥



युंजीत प्रणवे चेतः प्रणवो ब्रह्म निर्भयम् ।
प्रणवे नित्य युक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित्
॥ २१ ॥

हे सज्जन स्त्री पुरुषो ! अपना चित्त ओम्कार मन्त्र जपमें एक स्थिर करो. ओम्कार मन्त्र निर्भय ब्रह्म स्वरूप है ओम्कार ब्रह्ममन्त्रका जप करनेवाला सर्वत्र सदा निर्भय है ॥ २१ ॥

प्रणवोह्यपरं ब्रह्म प्रणवश्च परः स्मृतः ।
अपूर्वो अन्तरो बाह्यो न परः प्रणवो व्ययः
॥ २२ ॥

प्रणव ओम्कार मन्त्रको परं ब्रह्म कहते- है परं ब्रह्म ओम्कार स्वरूप है सबसे प्रथम पीछे अन्तर बाह्य ओम्कार ब्रह्म मन्त्र सर्व व्यापक है ॥ २२ ॥

मुक्तशास्त्र प्रमाणम् ॥



योगविद्या शिव स्वरोदय शास्त्र प्रसिध्य ओम्कार दर्शन ! ॥२२॥



प्रणवः सर्व वेदानां ब्राह्मणो भास्करो यथा।
मृत्युलोके तथा पूंज्यः स्वरज्ञानि पुमानपि ॥ २३ ॥

मनुष्य लोकमें स्वरज्ञानवाला योगी श्रेष्ठ है ब्राह्मण और सूर्यदेव श्रेष्ठ पूज्य है सर्व वेदोमे प्रणव ओम्कार मन्त्र श्रेष्ठ है. ॥ २३ ॥

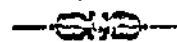


तन्त्र शास्त्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥२३॥



मन्त्रादौ प्रणवः कार्यः मन्त्रान्ते प्रणवः पुनः । शिरः पल्लव संयुक्तः मन्त्रः कामदुघो भवेत् ॥ २४ ॥

सर्व मन्त्रके जपमें आदि और अन्तमें ओम्कार मन्त्र लेना शिर और पल्लव में ओम्कार मन्त्र जपने से मन्त्र कामधेनु जैसा ईच्छित फल देता है ॥ २४ ॥



धर्म शास्त्र प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥२४॥



ब्रह्मणः प्रणवः कुर्यादादावन्ते च सर्वदा ॥
स्रवत्यनों कृतं पूर्वं पुरस्ता च्च विशीर्यति ॥२६॥

वेदशास्त्रके पठन पाठनमें आदि अन्तमें महादीर्घ उंचे स्वरसे ओम् मन्त्रका उच्चार सदा काल करो.

पठन पाठन के प्रारम्भ अने पूर्ण में ओम् मन्त्रका उच्चार नहि करते है उनका अध्ययन विस्मरण हो जाता है और सर्व ज्ञान भूल जाता है. ॥ २६ ॥

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः ॥
वेदत्रयान्निरदुहद् भूर्भुवः स्वरितीति च ॥ २७॥

ब्रह्माजीए ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, तीनो वेदोका सार अकार, उकार, मकार, ए तीन अक्षर और भूर्भुवः स्वः ए तीन महाव्याहृति श्रेष्ठ कहा है. ॥ २७ ॥

ओम्कार पूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्ययः ॥
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥२८॥

अविनाशी अजर अमर परब्रह्मका मन्त्र प्रथम ओम्कार, भूर्भुवः स्वः ए तीन महाव्याहृति, और तच्छवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्यधिमहि, धियोजोनः प्रचोदयात्, सूर्यदेवत ए तीन पद समजो वेदका श्रेष्ठ सार है. ॥२८॥

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परंतपः ।
सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात् सत्यं विशिष्यते
॥ २९ ॥

ओम् एक अक्षरका परंब्रह्म मन्त्र है.
प्राणायाम करना परं श्रेष्ठ तप है.
गायत्रि मन्त्र से महान् मन्त्र कोइ नहि है.
मौन व्रतसे सत्य व्रत विशेष श्रेष्ठ है.॥२९॥

धर्मशास्त्र मनुसंहिता अध्याय दो श्लोक –७४, ७६, ८१, ८३ प्रमाणम् ॥ अग्नि-पुराण–अध्याय–१६५, २१५, श्लोक ५ ॥ भविष्यपुराण ब्रा० ५०१ ॥



उपनिषद् ब्रह्मविद्या सुप्रसिध्ध-ओम्कार दर्शन !

॥ २५ ॥



ओम्कार पूर्वं हि योगोपासनं यानि-नित्यानि पुण्यतमानि कर्माणि दान, यज्ञ, तप, स्वाध्याय, जप, ध्यान, सन्ध्योपासन, प्राणायाम, होम, देव, पैत्र्य, मन्त्रोच्चार, ब्रह्मरम्भादीनि यच्चान्यत् किन्चिच्छ्रेयस्तत् सर्वं प्रणवमुच्चार्य प्रवर्तयेत् समापयेच्च ॥ ३० ॥

सर्व नित्यकर्म, नैमित्तिक कर्म, सर्वपुण्य सत्कर्म, सर्व प्रकारके योग उपासना ओम्कार मन्त्रके उच्चार करके प्रारंभ करना ! मन्त्रका उच्चार, वेदका पठन पाठन, दान, यज्ञ, तप, स्वाध्याय, जप, ध्यान, सन्ध्या, पूजा, प्राणायाम, यज्ञ, होम, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, और अन्य सर्व प्रकारके कल्याणकारी सत्कर्म समस्त ओम् मन्त्रका उच्चार कर के प्रारंभ करना और संपूर्ण करना ॥ ३० ॥

सामवेद छान्दोग्यपरिशिष्ट प्रमाणम् ॥



ओम्कारः संप्रास्रवत् तद्यथा शंकुना सर्वाणि पर्णानि सन्तृणान्येव सोम्कारेण सर्वावाक् सन्तृणोंकार एवेदृं सर्वमोंकार

एवेदगुं सर्वम् ॥ ३१ ॥

ओम्कार सर्वत्र व्यापक है जैसे सर्व वृक्ष के पत्ते अंतर्गत रेषाओसे ओतप्रोत होते है वैसे ओम्कारसे सर्व वाणी ओतप्रोत ओम्कारमय है॥ ३१ ॥

सामवेद छान्दोग्य उपनिषत् खंड २३ अध्याय दो प्रमाणम् ॥



सर्वे वेदा यत् पद मामनंति तपांसि सर्वाणि च यद्द वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत् ते, पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमिति ॥३२॥

चारो वेद जिस पदकी इच्छा करते है सर्व प्रकारके तप जिसका महिमा कहते है जिस पदकी ईच्छासे ब्रह्मचर्य पालन

करते है वो पद सार रूपसे कहते है ब्रह्म-स्वरूप ओमकार है. ॥ ३२ ॥

कृष्ण यजुर्वेद कठ उपनिषद् अध्याय प्रथमो वल्ली दो मन्त्र १५ प्रमाणम् ॥

अथ हैनं भारद्वाजो याज्ञवल्क्य मुवाचाथ कै र्मन्त्रैः परमात्मा प्रीतो भवति स्वात्मानं दर्शयति तन्नो ब्रूहि भगव इति ॥ स होवाच याज्ञवल्क्यः ओमिति ॥ ३३ ॥

एक समयमें भारद्वाज ऋषि, महर्षि–याज्ञवल्क्य मुनिको कहते है.

हे भगवन् ! कौन मन्त्रका जप भजन करनेसे परं ब्रह्मदेव प्रसन्न होते है, और आत्म ब्रह्मका अद्वैत ऐक्य ज्ञान विज्ञान प्रकाश होता है वो हमको कहो.

महर्षि याज्ञवल्क्य कहते है ओम् मन्त्र का जप भजन करो.

स्वस्वरूप आत्मब्रह्मका दर्शन अनुभव ज्ञान होगा, भगवान् परंब्रह्मदेव प्रसन्न होगा ! ॥ ३३ ॥

शुक्ल यजुर्वेद तारसार उपनिषद प्रमाणम् ॥



ब्रह्मवादिनो वदन्ति ओमित्यात्मानं युंजीतै तद्वै महोपनिषदं देवानां गुह्यं य एवं वेद ब्रह्मणो महिमान माप्नोति ॥३४॥

ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मर्षि महर्षियो कहते हे कि तीव्र आत्मबलसे ओम् ब्रह्मस्वरूप में एकता करो एहि देवताओका गुप्त तत्व उपदेश है, जो मनुष्य इस तत्वोपदेशको

जानता है वे ब्रह्मपद्को पाता है. ॥ ३४ ॥

आत्मन मरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम् ॥
ध्यान निर्मन्थनाभ्यासाद् देवं पश्येन् निगूढवत्
॥ ३५ ॥

अरणीके नीचे और उंचे दो पात्रको एकतासे घर्षण करने से अग्नि प्रगट होता है, एवं ओम्कार मन्त्रका तीव्र वेगसे मनसे जप करो, में ब्रह्मस्वरूप हुं दृढ ध्यान भावना धरो, व्यापक सूक्ष्म अदृश्य परंब्रह्मदेव का दर्शन होगा. ॥ ३५ ॥

कृष्ण यजुर्वेद, श्वेताश्वतर उपनिषद्, ध्यान-विन्दु उपनिषद्, कैवल्य उपनिषद् प्रमाणम् ॥



प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्य मुच्यते ॥
अप्रमत्तेन वेधव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥३६॥

वीर पुरूष कुशलतासे धनुष्य पर बाण चढा कर निशान लक्ष्य वेधमें तन्मय होता है.

एवं मुमुक्षुभक्त अनन्य प्रेमसे मनसे ओम्कार मन्त्रका जाप करके 'अहंब्रह्मास्मि'– मैं ब्रह्म हुं ए सद्विचार से ब्रह्ममय हो जाता है ॥ ३६ ॥

कृष्ण यजुर्वेद, ध्यानबिन्दु उपनिषद्, रुद्र हृदय उपनिषद्, मार्कंड पुराण, अध्याय –४२, वायुपुराण, अध्याय २०, लिंगपुराण, अध्याय ९१, देवी भागवत, स्कन्ध ७ अध्याय ३५ प्रमाणम् ॥

ओमिति तिस्रोमात्रा एताभिः सर्वमिद मोतं प्रोतं च ॥ ३७ ॥

अ, उ, म्, ए तीन अक्षरका ओम्कार मन्त्र विश्वमें व्यापक है. ॥ ३७ ॥

सामवेद मैत्रायणी उपनिषद् प्रमाणम् ॥

ओमित्येवं ध्यायन् स्तथात्मानं युंजीत ॥३८॥

आत्मा ब्रह्मकी एकता करो, में ब्रह्मस्वरूप हुं ध्यान विचार करो, ओम्कार मन्त्र का जाप करो. ॥ ३८ ॥

सामवेद, मैत्रायणी उपनिषद, कृष्णयजुर्वेद, क्षुरिक उपनिषद्, देवीभागवतपुराण, स्कन्ध सात अध्याय ३५ प्रमाणम् ॥

दीर्घ प्रणव सन्धानं सिधान्त श्रवणं परम् ॥ ३९ ॥

वहुत समय अद्वैतब्रह्म वेदान्त-सिध्धान्त से में ब्रह्मस्वरूप हुं श्रवण, मनन, निदिध्यास करो, ओम्कार ब्रह्ममन्त्र सप्रेम जप करो. ॥ ३९ ॥ कृष्ण यजुर्वेद योगतत्व उपनिषद् प्रमाणम् ॥



ओमित्ये तदक्षर मुदगीथ मुपासीत ॥४०॥

ब्रह्ममन्त्र ओम्कार का उंचे स्वरसें गान करो, सप्रेम सदाकाल जप करो. ॥ ४० ॥ सामवेद छान्दोग्य उपनिषद् प्रमाणम् ॥



ओमिति ब्रह्म ओमितिदगुं सर्वम् ॥ ४१ ॥

ब्रह्ममन्त्र ओम्कार है ओम्कार ब्रह्म सें सर्व विश्वव्यापक है. ॥ ४१ ॥

कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरी उपनिषद् अष्ट-अनुवाक् प्रमाणम् ॥



ओमित्ये तदक्षर मिदगुं सर्वं मोम्कार एव ॥ ४२ ॥

ओम् मन्त्र ब्रह्मस्वरूप है अखिल विश्व-ओम्कार ब्रह्मसे व्यापक है ॥ ४३ ॥

शुक्ल यजुर्वेद वृहदारण्यक उपनिषद् प्रमाणम् ॥



ओमित्ये तदक्षर मिदगुं सर्वम् ॥ ४३ ॥

ओम् मन्त्र ब्रह्मरूप है ओम्कार ब्रह्मसे सर्व जगत व्यापक है. ॥ ४२ ॥

अथर्व वेद मांडुक्य उपनिषद् प्रमाणम् ॥



अकार, उकार, मकार, इति ओम् ॥४४॥

अ, उ, म्, ए तीन अक्षरो मिलकर ओम् होता है ॥ ४४ ॥

अथर्व वेद शांडिल्य उपनिषद् प्रमाणम् ॥



ओम्कार मात्रमखिलम् ॥ ४५ ॥

संपूर्ण जगत् ओम्कार ब्रह्ममय है ॥४५॥

कृष्ण यजुर्वेद अक्षि उपनिषत् प्रमाणम् ॥



गर्भे चेतसा ओम्कारं चिन्तयति ॥ ४६ ॥

प्राणि मात्र माताके शरीर मन्दिर में चित्त से ओम्कार मन्त्र का चिन्तन भजन करता है.

स्त्री पुरुष छोटा वडा सर्व मनुष्य मात्र को ओम् मन्त्रका उच्चार करना जप गान भजन करना जन्मसिध्ध अधिकार हक्क है. ॥ ४६ ॥

कृष्ण यजुर्वेद गर्भ उपनिषद् प्रमाणम् ॥



तत् प्रणव हंस सूत्रेणैव ध्यान माचरन्ति ॥४७॥

में ब्रह्मस्वरूप हुं ध्यान विचार दृढ करो. ओम्कार मन्त्रका जप करो. ॥ ४७ ॥

अथर्ववेद पाशुपत ब्रह्म उपनिषद् प्रमाणम् ॥



इडया वायुमापूर्य पूरयित्वोदरस्थितम् ॥
ओम्कारं देह मध्यस्थं ध्यायेज् ज्वालावली वृतम् ॥ ४८ ॥

चन्द्रभेदन प्राणायाम--चन्द्रनाडीसे वायु खेंचकर कुंभक करके शरीर मन्दिरमें हृदय मंडल में अपार तेजोपुंज ज्योति ज्वालामें ओम्कार ब्रह्मका ध्यान करो. ॥ ४८ ॥

कृष्ण यजुर्वेद ध्यानविन्दु उपनिषद् ॥

हृत्पद्म कर्णिका मध्ये स्थिर दीपनिभाकृतिम्। अंगुष्ठमात्रमचलं ध्यायेद् ओम्कार मीश्वरम् ॥ ४९ ॥



देह देवलमें हृदय मन्दिरमें स्थिर--गंभीर दीप ज्योति प्रकाशरूप सूक्ष्म ओम्कार ब्रह्म भगवानका ध्यान करो. ॥ ४९ ॥

कृष्ण यजुर्वेद ध्यानविन्दु उपनिषत् प्रमाणम्॥



पद्मासन समारुह्य समकाय शिरोधरः ।
नासाग्रदृष्टिरेकान्ते जपेद् ओम्कार मव्ययम्॥५०॥

एकान्तमें शरीर मस्तक सिधा करके पद्मासनसे बैठकर भ्रकुटिमें दृष्टि स्थिर करो, ब्रह्मस्वरूप ओम्कार मन्त्रका जप करो. ॥५०॥

सामवेद योगचूडामणि उपनिषद् प्रमाणम्॥



ओमित्ये तदक्षरं परंब्रह्म तदेवो पासितव्यम् ॥५१॥

परंब्रह्म स्वरूप ओम्कार मन्त्र है, ओम्कार मन्त्रका ही जप ध्यान भजन करो. ॥ ५१ ॥

शुक्ल यजुर्वेद तारसार उपनिषद् प्रमाणम्. ॥



ओमित्यात्मान मव्यग्रो ब्रह्मण्यग्नौजुहोति यत् ।
ज्ञान यज्ञः स विज्ञेयः सर्व यज्ञोत्तमोत्तमः ॥५२॥

स्थिर मनसे ओम्कार मन्त्रका जप करो में ब्रह्मस्वरूप हुं ऐसा ब्रह्म अग्निमें होम करो, ए सर्वश्रेष्ठ महायज्ञोमें ज्ञान यज्ञ महाश्रेष्ठ है. ॥ ५२ ॥

शुक्लयजुर्वेद शाटयायनीय उपनिषद् प्रमाणम्. ॥



ओमित्येकाक्षरम् । अकार, उकरो, मकार इति ॥ ५३ ॥

एक अक्षरका ओम्कार ब्रह्म मन्त्र अ, उ, म्, ए तीनो अक्षर एक होकर होता है ॥ ५३ ॥

कृष्ण यजुर्वेद नारायण उपनिषद् प्रमाणम्. ॥



प्रणवात् प्रभवो ब्रह्मा प्रणवात् प्रभवोहरिः ।
प्रणवात् प्रभवोरुद्रः प्रणवो हि परोभवेत् ॥५४॥

ओम्कारसें ब्रह्मा ओम्कारसें विष्णु, ओम्कारसें महादेव प्रगट होते है ओम्कार परंब्रह्म स्वरूप है. ॥ ५४ ॥



प्रणवः सर्वदा तिष्ठेत् सर्व जीवेषु भोगतः ।
अभिरामस्तु सर्वासु ह्यवस्थासु ह्यधो मुखः॥५५॥

सर्व प्राणि मनुष्य शरीरमें ओम्कार ब्रह्म सुखका अनुभव करता है, सर्वदा सर्व अवस्थामें अन्तरमें आनंद प्रकाश करता है. ॥ ५५ ॥

अकार, उकार, मकारश्चेति त्रयोवर्णाः ॥५६॥

अ, उ, म्, ए तीन अक्षरकी एकतासे ओम् मन्त्रका उच्चार होता है ॥ ५६ ॥

शुचि वाप्यशुचि र्वापि यो जपेत् प्रणवं सदा ।
न स लिप्यति पापेन पद्मपत्र मिवाम्भसा ॥५७॥

पवित्र के अपवित्र स्थितिमे भी जो ओम्कार मन्त्रका सदा जप करता है, वो परं पवित्र है, जैसे कमलपत्रको जलका स्पर्श नहि होता है, वैसे ओम्कार मन्त्रका जप करनेवाले को पाप कभि स्पर्श नहि कर सकता है. ॥ ५७ ॥

सामवेद योग चूडामणि उपनिषद्व प्रमाणम्. ॥



सकृदुचारितमात्रः सएष उर्ध्वन्नामयतीत्योंकारः ॥
प्राणान् सर्वान् परमात्मनि प्रणामयतीत्ये तस्मात् प्रणव. ॥ ५८ ॥

केवल एकहि वार उच्चार करने से

प्राणवायु की गति उर्ध्व करने से ओम्कार कहते है, सर्व प्राणवायु को परब्रह्ममें स्थीर करनेसे प्रणव कहते है. ॥ ५८ ॥

कृष्ण यजुर्वेद, अमृतनाद उपनिषद्, अथर्ववेद, अथर्वशिख, उपनिषद्, अथर्वशिर उपनिषद् प्रमाणम् ॥



सर्व विघ्न हरोमन्त्रः प्रणवः सर्व दोषहा ।
एवं अभ्यास योगेन सिध्धिरारभ संभवा ॥५९॥

ओम्कार मन्त्रका मन्त्रयोग जप करनेसे सर्व पापका प्रलय होता है, सर्व प्रकारके विघ्नका विनाश होता है, मन्त्रयोगका अभ्यास करनेवालेको मन्त्रसिध्धि प्रगट होजाति है. ॥ ५९ ॥

कृष्ण यजुर्वेद् योगतत्व उपनिषद् प्रमाणम् ॥



मांगल्यं पावनं धर्म्यं सर्वकाम प्रसाधनम् ।
ओम्कारं परमंब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकम् ॥ ६० ॥

ओम्कार मन्त्र परंब्रह्म स्वरूप है, सर्व मन्त्रो में महान श्रेष्ठ है, सर्व मनइच्छा संपूर्ण करता है, धर्मके मंगलकार्यकी वृध्धि करता है, महान पवित्र करनेवाला है. ॥६०॥



यस्तु द्वादश साहस्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम् ।
तस्य द्वादशभि र्मासैः परंब्रह्म प्रकाशते ॥६१॥

जो मनुष्य प्रतिदिन नित्य नियमसे एकाक्षर ब्रह्म मन्त्र ओम्कारका वारा हजार जप करता है, उनको वारा महिनेमें परंब्रह्मदेवका दर्शन होता है. ॥ ६१ ॥



सर्वेषामेव पापानां संघाते समुपस्थिते ।
तारं द्वादशसाहस्र मभ्यसे च्छेदनं हि तत् ॥६२॥

जो मनुष्यको सर्वपाप महापापका फल महान दुःख भय, प्राप्त होवे, उसका नाश करनेके लिये नित्य ओम्कार महामन्त्रका बारा हजार जप करो. ॥ ६२ ॥

सामवेद संन्यास उपनिषद् अध्याय दो मन्त्र १०३–१०४ प्रमाणम्



ब्रह्म प्रणवानु सन्धानेन कृतकृत्यो भवति ॥

जो मनुष्य में ब्रह्म हुं ऐसा भावसे ओम्कार मन्त्रका जप ध्यान भजन करता है, वो कृतारथ कृत्यकृत्य होता है ॥ ६३ ॥

अथर्ववेद परमहंस परिव्राजक उपनिषद् ॥



ओं

!! जय हिन्द श्रीगुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार भजन दर्शन !!



!!ग्रंथ मध्य मंगल दर्शन!! २६



!! ओं !! जय हिन्द सनातन वेद धर्मो विजयतेतराम् !!

हिन्दुस्तानका सदा जय हो !

अखिल विश्वमें सनातन वेद धर्मका

जय जय विजय हो !!

!!ओं!! गणपतिं प्रियपतिं निधिपति हवामहे ! !

विश्वके परमेश्वर ! आनंदके महेश्वर ! ऐश्वर्यके सर्वेश्वर ! ऐसे परंब्रह्म भगवानका ध्यान धरकेः—

!! जय हिन्द श्रीगुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार भजन दर्शन !! नामका ग्रन्थ हम, मध्यमें लाये है !!



श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि उपदेश !



मानव जन्म धर्या का मान,
करना तप यज्ञ वहु दान;

धरना ब्रह्मस्वरूपका ध्यान,
करना ओम्मन्त्रका गान ॥
मात पिता गुरुजनको मान,
सूर्य अग्निको सन्मान;
चेतन चतुर पुरुषको ज्ञान,
गुरुदेव ब्रह्मर्षि विज्ञान ॥२॥



सत् चित् आनंद सुखकन्द,
जयजय ओम् निरंजन ब्रह्म ॥२॥



जय ओम् नमो, जय ओम् नमो,
जय ओम् नमो. जय ओम् ॥२॥



!भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम् ! ॥३॥

अर्थः—हे मन! सदा ओम् ब्रह्मका भजन कर ॥ ३ ॥



महापुराण भागवत प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ! ॥ २७ ॥



उत्थायापर रात्रान्ते प्रयताः सुसमाहिताः ।
स्मरन्ति प्रणवं सत्यं मुच्यन्ते ह्येनसो खिलात् ॥६४॥

रात्रिके अंतमें ब्रह्म मुहूर्तमें स्थिर मनसें ब्रह्म मन्त्र ओम्कारका स्मरण किर्तन भजन करनेसे मनुष्य सर्व प्रकारके पापसे, मुक्त होकर पवित्र होता है. ॥ ६४ ॥

भागवत महापुराण स्कन्ध आठ अध्याय चार प्रमाणम्. ॥



मन्त्राणां प्रणव स्त्रिवृत् मे स्वरूपम् ॥ ६५ ॥

उंचास्वरसें उच्चारवाला ओम्कार मन्त्र परंब्रह्मकी विभूति है ॥ ६५ ॥

भागवत महापुराण स्कन्ध ११ अध्याय १६ प्रमाणम्. ॥



ततोभूस्त्रिवृदोम्कारो ब्रह्मः साक्षाद वाचकः ॥६६॥

महा दीर्घस्वर, उच्चारवाला ओम्कार मन्त्र साक्षात् ब्रह्मका वाचक है. ॥६६॥

स सर्व मन्त्रो पनिषद् वेदवीजं सनातनम् ॥६७॥

ओम्कार मन्त्र सनातन वेद धर्मका वीज है सर्व मन्त्रोका तत्वसार है. ॥६७॥

भागवत महापुराण स्कन्ध १२ अध्याय छो, (६) श्लोक ३९, ४१ प्रमाणम्. ॥



देशे शुचौ समे राजन् संस्थाप्यासनमात्मनः ।
स्थिरं समं सुखं तस्मिन्नासीतर्ज्वंग ओमिति ॥६८॥

महर्षि शुकदेव मुनि कहते है, हे राजा–परिक्षित! परंपवित्र एक सरिखा शुध्ध स्थानमें शरीरको स्थिर सिधा सुखरूप करके आसनमें बैठो स्थिर मनसे ओम्कार मन्त्रका जप करो. ॥ ६८ ॥



धनुर्हि तस्य प्रणवं पठन्ति।
शरन्तु जीवं परमेव लक्ष्यम् ॥६९॥

जैसे धनुष्यपर बाण चढाकर लक्ष्यनिशानको लगाता है वैसे ओम्कार मन्त्रका जप करो और में ब्रह्म हुं ऐसा आत्मा ब्रह्मकी एकता करो ॥ ६९ ॥

भागवत महापुराण स्कन्ध ७ अध्याय १५ श्लोक ३१–४२ प्रमाणम् ॥

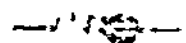


एवं प्रणव संयुक्त प्राणमेव समभ्यसेत् ।
दशकृत्वस्त्रिपवणं मासादर्वाग् जितानिलः ॥७०॥

नित्य नियमसें प्रातःकाल, मध्यान्ह-काल, सायंकाल ओम्कार मन्त्रका जप करते करते दश प्राणायाम करे, एक मासके अंदर प्राणायाम सिध्ध होता है. ॥ ७० ॥



भागवत महापुराण स्कन्ध ११ अध्याय १५ श्लोक ३५ प्रमाणम् ॥



महाशिव पुराण सुप्रसिध्ध

ओम्कार दर्शन ! २८

—ॐ—

संसारमें प्रवृत्तिवाले स्त्री पुरुषोंने धीरे स्वरसे ओम्कार मन्त्रका उच्चार करना ॥ ७१ ॥

संसारमें निवृत्तिवाले विरक्त स्त्री पुरुषोंने ओम्कार मन्त्रका उच्चार ऊंचे स्वरसे करना ओम्कारका निर्भय भजन करनेमें मनुष्य महानन्दित होता है ॥७२॥

आत्मज्ञानकी सिद्धि ओम्कार मन्त्रका जप करनेसे होती है ॥७३॥

शिव-शंकर-महादेव स्वरूप ओम्कार मन्त्रका जप ध्यान भजन करो ॥७४॥

महाशिवपुराण विश्वेश्वर संहिता अध्याय १७ श्लोक १७ प्रमाणम् ॥

भगवान् महादेव कहते है ! हे महासती देवी पार्वति ! काशीपुरीमें प्राणत्याग करनेवाले सर्व जीवको सर्व मन्त्र शिरोमणि ब्रह्ममन्त्र ओम्कार मन्त्र मैं उपदेश करता हुं ॥ ७५ ॥

महाशिव पुराण कैलास संहिता अध्याय ३ श्लोक दस प्रमाणम् ॥

ओम्कार स्वरूप महादेवको नमस्कार है !
शिव-शंकर-महादेव वाचक ओम्कार है !

ओम्कार मन्त्रका जप करनेसे क्षणमात्र में सर्व पापका नाश होता है. ॥ ७६ ॥

महा शिवपुराण, कैलाससंहिता, अध्याय ११, श्लोक २२, ४६, ॥ प्रमाणम् ॥



एकाक्षरं परंब्रह्म ओम्कारः पर उच्यते ॥ ७७ ॥

एक अक्षरका ओम्मन्त्र परंब्रह्म स्वरूप है— और परंब्रह्म ओम्कार स्वरूप है ॥ ७७ ॥

महाशिवपुराण, सनत्कुमारसंहिता, अध्याय ६, ३७, ४० ॥ प्रमाणम् ॥



ओम्कारं चिन्तयानस्य तस्य तुष्टोस्म्यहं सदा ॥ ७८ ॥

भगवान् महादेव कहते है !

ओम्कार मन्त्रका जप करनेवाले सर्व मनुष्यको में सदा प्रसन्न हुं. ॥ ७८ ॥

महा शिवपुराण, सनत्कुमार संहिता, अध्याय १३, ॥ प्रमाणम् ॥



ओम्कारं ध्यायते धीरो विबुध्येनान्तरात्मना ॥ ७९ ॥

ज्ञानी मनुष्य में ब्रह्म हुं ऐसा ध्यान धरता है.

ओम्कार मन्त्रका जप करता है. ॥७९॥

महा शिवपुराण, सनत्कुमार संहिता, अध्याय, ३२ ॥

ओम्कारं परमं ब्रह्म निर्विकल्प मुपासते॥८०॥

ज्ञानि मनुष्यो निर्विकल्प परंब्रह्म ओम्कार मन्त्रका भजन करतें है. ॥ ८० ॥

महा शिवपुराण, सनत्कुमार, संहिता, अध्याय, ५४ ॥ प्रमाणम्. ॥



प्रणवो वाचकस्तस्य शिवस्य परमात्मनः ॥
शिव रुद्रादि शब्दानां प्रणवो हि परः स्मृतः ॥ ८१ ॥

परब्रह्मस्वरूप–भगवान् शंकरका वाचक ओम्कार है, शिव, शंकर, रुद्र, ईश्वर, परमेश्वर, हर, शंभु, महादेव, सर्व नामो में ओम्कार महान् श्रेष्ठ है, ॥ ८१ ॥

महा शिवपुराण, वायुसंहिता, उत्तरार्ध, अध्याय सात, ॥ प्रमाणम्. ॥



वेदाः प्रणव सम्भूताः प्रणवार्थो महेश्वरः ॥८२॥

चारो वेदोकी उत्पत्ति ओम्कारसे है, ओम्कारका अर्थ में ब्रह्मस्वरूप हुं, समझो, वोही महादेव है ॥ ८२ ॥

महा शिवपुराण, ज्ञानसंहिता, उत्तरार्ध, अध्याय एक, प्रमाणम् ॥



ओम्कारादि चतुर्थ्यन्तन्नाम मन्त्रं नमोंतकम् ।
उच्चार्य पूजयेद् विद्वान् सर्वत्रैवं विधिक्रमः ॥८३॥

आरम्भमें ओम्कार है, सर्व नाममन्त्र में चतुर्थी विभक्ति है, अन्तमें नमः है ऐसा

विधिक्रमसे उच्चार करके विद्वान् ज्ञानि मनुष्य देव पूजन करता है. ॥

ओं शिवाय नमः, ओं विष्णवे नमः,
ओं सूर्याय नमः, ओं महादेव्यै नमः,
ओं गणेशाय नमः ॥

ऐसा विवेक समझो. ॥ ८३ ॥

महा शिवपुराण, कैलास संहिता, उत्तरार्ध, अध्याय ६ ॥ प्रमाणम्. ॥



!! भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम् !

अर्थः–हे मन सदा ओम्ब्रह्मका भजन कर!!

!! जय ओं नमः !!



अग्निपुराण सुप्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! २९ !!

ओम्युतं वा सर्व मन्त्राः पूजनाज्जपतः स्मृताः।
होमात्तिल घृताद्यैश्च धर्मकामार्थ मोक्षदाः ॥८४॥

सर्व मन्त्रमें प्रथम ओम्कारका उच्चार करके पूजन जप होम, करनेको कहा है.

यज्ञमें ओम्मन्त्र साथ स्वाहा मन्त्र पढकर तिल यव, अक्षत, घृत, कमलपुष्प, गुलाव पुष्प, बिल्पित्र,तुलसीपत्र,गुगलधूप,श्रीफल, बिलिफल, पुंगीफल, खर्जुरफल, आम्रफल, ढाकपुष्प, गुंजाफल, सर्वका यज्ञमें होम

करनेसे, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारो पुरुषार्थ सिध्ध होता है. ॥ ८४ ॥

अग्निपुराण, अध्याय एकवीस, श्लोक,-३६, ॥ प्रमाणम् ॥



ओम्कार वाचकं विष्णोः ॥ ८५ ॥

भगवान् विष्णुका वाचक मन्त्र ओम्कार है. ॥ ८५ ॥

अग्निपुराण, अध्याय ८८, ॥ प्रमाणम् ॥



ओम्कारं यो विजानाति स योगी स हरिः पुमान् ।
ओम्कारमभ्यसेत् तस्मान् मन्त्र सारन्तु सर्वदम्
॥ ८६ ॥

जो ओम्कारको जाननेवाला मनुष्य है वो योगी है वो भगवान् विष्णु स्वरूप है.

सर्व मन्त्रका साररूप ओम्कारका सदा काल जप ध्यान भजन करो. ॥ ८६ ॥

सर्व मन्त्र प्रयोगेषु प्रणवः प्रथमः स्मृतः ।
ओम्कारः परमो मन्त्र स्तं जप्त्वाचामरो भवेत् ॥ ८७ ॥

सर्व मन्त्र के प्रयोग अनुष्ठानमें ओम्कार मन्त्र का उच्चार प्रथम कहा है.

परंब्रह्म महामन्त्र ओम्कारका जप करनेसे परब्रह्म स्वरूप होता है, ॥ ८७ ॥



स्कन्द पुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३० !!



ओम्कारं सर्व मन्त्राणा मुत्तमः परिकीर्तितः ।
ओम्कारेण प्लवेनैव संसाराब्धि तरिष्यति ॥
॥ ८८ ॥

सर्व मन्त्रो में ओम्कार मन्त्र महान् श्रेष्ठ कहा है, ओम्कार मन्त्रका जप भजन रूप नाव में बैठ कर संसार रूप समुद्रको सर्व मनुष्य तर जाते है. ॥ ८८ ॥

स्कन्दपुराण, सूतसंहिता, यज्ञवैभव खंड-४, अध्याय २, ॥ प्रमाणम् ॥



ओमकार शब्दः सर्वार्थे वाचकः ॥ ८९ ॥

ओम्कार मन्त्र, परं ब्रह्मदेव, ब्रह्मादेव, विष्णुदेव, महादेव और सर्वदेवका वाचक है, ओम्कार मन्त्रसें सर्व देवका पूजन, होम, जप, ध्यान होता है. ॥ ८९ ॥

स्कन्दपुराण, सूतसंहिता, यज्ञवैभव खंड चार अध्याय आठ ॥ प्रमाणम् ॥



श्रीमदोंकारमभ्यर्च्य सर्वदं सर्वदेहिनाम् ॥९०॥

सर्व स्त्री पुरुष मनुष्य मात्र सदाकाल ओम्कार, मन्त्रका, होम, जप, ध्यान, भजन, करनेसे धनवान् ऐश्वर्यवान् होता है. सर्व मनोरथ सिध्ध करनार ओम्मन्त्र समर्थ है. ॥९०॥

स्कन्दपुराण, काशीखंड, चार, अध्याय, एक ॥ प्रमाणम् ॥



तारकं ब्रह्म व्याचष्टे तेन ब्रह्म भवन्ति हि ॥९१॥

ओम्कार मन्त्रको तारक ब्रह्म कहते है. ॥

ओम्कार मन्त्रका जप, होम, गान, भजन करनेवाला मनुष्य ब्रह्म स्वरूप हो जाता है.॥ ९१ ॥

स्कन्दपुराण, काशीखंड चार, पूर्वार्धे, अध्याय पांच ॥ प्रमाणम् ॥

सौर पुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३१ !!

प्रणवं प्रजपेन्नित्यम् ॥ ९२ ॥

सर्व मनुष्य स्त्री पुरुषो नित्य नियमसें

ओम्कार ब्रह्म मन्त्रका सप्रेम जप भजन करो ॥९१॥

सौरपुराण, अध्याय वीस, प्रमाणम् ॥



महा गरुडपुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ॥ ३२ ॥



अभ्यसेन्मनसा शुध्धं त्रिवृद् ब्रह्माक्षरं परम् ॥९३॥

पवित्र मनसे उंचे स्वरसे परं ब्रह्म मन्त्र ओम्कारका जप करो. ॥ ९३ ॥

महा गरुडपुराण, अध्याय सोल, श्लोक- १०५, ॥ प्रमाणम् ॥



विष्णु पुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३ ३ !!



ध्रुव मेकाक्षरं ब्रह्म ओमिति ॥ ९४ ॥

स्वयंभु अजर अमर मन्त्र ओम्कार एकाक्षर ब्रह्म! मन्त्र सर्व संसारके स्त्री, पुरुष मनुष्य मात्र ओम्कार का सदा जप करो ! ॥ ९४ ॥

विष्णु पुराण, अंश त्रण, अध्याय ३, श्लोक २१, ॥ प्रमाणम् ॥



वायु पुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३४ !!



ये ब्राह्मणाः प्रणवं वेदयन्ति ।

न ते पुनः संसरन्तीह भूयः ॥ ९५ ॥

जो ब्राह्मण आदि सर्व मनुष्यो स्त्री पुरुष ओम्कारका भजन करते हैं वो जन्म मरण-रूप संसारमें फिर नहि आते है. ॥ ९५ ॥

वायुपुराण, अध्याय वीस, श्लोक २९ ॥ प्रमाणम् ॥



कूर्म पुराण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन ॥ ३५ ॥



वेदान्त शतरुद्रिय प्रणवादि जपं बुधाः ॥
सत्व सिध्धि करं पुंसां स्वाध्यायं परिचक्षते ॥९६॥

हे सज्जनो ! ओम्कार मन्त्रका जप ! वेदान्त, शतरुदिय, पठन, पाठन, स्वाध्याय, मनुष्य के मनको पवित्र करता है ॥ ९६ ॥

कूर्मपुराण, उपरिभाग, अध्याय ११,॥प्रमाणम् ॥



यावज्जीवं जपेद् युक्तः प्रणवं ब्रह्मणो वपुः ॥
अथ वा शत रुद्रियं जपेदामरणाद्विजः ॥९०॥

ब्रह्मस्वरूप ओम्कार मन्त्रका शुध्ध पवित्र

मनसे जीवनपर्यन्त जप करो, और ब्राह्मण क्षत्रि, वैश्य जीवन पर्यन्त शतरुद्रिय मन्त्र पाठ करो. ॥ ९७॥

कुर्मपुराण, उपरिभाग, अध्याय ११, ॥ प्रमाणम् ॥



ओम्कारं बोधितं तत्वं शाश्वतं शिवमच्युतम् ॥
अव्यक्तं प्रकृतीलीनं परं ज्योतिरनुत्तमम् ॥९८॥

सूक्ष्म अदृश्य, मायामें गुप्त, अविनाशी, सनातन सुखस्वरूप श्रेष्ठ सच्चिदानंद ब्रह्मस्वरूप का ज्ञानभान–ओम्कार मन्त्रका जप भजनसें होता हे–ओम्मन्त्रका जप करो ॥ ९८ ॥

ओम्कार वाच्यमव्यक्तं रश्मिजालसमाकुलम्।
चिन्तयेत् तत्र विमलं परं ज्योतिर्यदक्षरम् ॥९९॥

परं गुप्त अपार तेजोमय अविनाशी ओम्कारसे वाच्य निरंजन सच्चिदानंद परंब्रह्मका ध्यान भजन करो. ॥९॥

कूर्मपुराण, उपरिभाग, अध्याय ११, ॥
॥ प्रमाणम् ॥



महाभारत गीता प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३६ !!



ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिः ॥
॥१००॥

में ब्रह्म हुं ऐसा विचारके साथ ओम्कार मन्त्र जपते हैं, वो देह छोडकर ब्रह्म गतिको पाते हैं. ॥ १०० ॥

अथर्ववेद सूर्य उपनिषद् ॥ महागरुडपुराण अध्याय १६ श्लोक १०९ ॥ भगवद्गीता अध्याय आठ श्लोक १३ ॥ प्रमाणम्. ॥



वेद्यं पवित्रमोम्कारम्! ॥ १०१ ॥

महापवित्र ब्रह्ममन्त्र ओम्कारका ज्ञान सर्व मनुष्यको जानने योग्य है. ॥१०१॥

गीता अध्याय ९ श्लोक १७ ॥ प्रमाणम् ॥

प्रणवः सर्व वेदेषु! ॥ १०२ ॥

सर्व वेदोमें ओम्कार मन्त्र मेरा ब्रह्म स्वरूप है. ॥ भगवद्गीता अध्याय सात

श्लोक आठ प्रमाणम् ॥ १०२ ॥



गिरामस्म्येकमक्षरम् ॥ १०३ ॥

भगवान् कृष्णचन्द्र अर्जुनको कहते है, वाणीमें मेरी विभूति एक अक्षर ब्रह्ममन्त्र ओम्कार है ॥ १०३ ॥ गीता अध्याय १० श्लोक २६ ॥ प्रमाणम् ॥

ओम् तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥
॥ १०४ ॥

पूर्वे ब्रह्माने ब्राह्मण, वेद, यज्ञ, प्रथम निर्माण किया है. और ओम्, तत्, सत्, अे तीन ब्रह्म के नाम प्रथम उपदेश कीया है ॥ १०४ ॥

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदान तपः क्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥
॥ १०५ ॥

वेद सनात धर्म जानने वाले विद्वान् यज्ञ, दान, तप, सत्कर्म वेदोक्त विधिसे सर्व काल उंचे स्वरसे ओम्कार मन्त्रका उच्चार पढकरके करते है. ॥ १०५ ॥

भगवद्गीता अध्याय १७ श्लोक २३–२४ ॥
॥ प्रमाणम्. ॥



!! ब्रह्मधून !!

सत् चित् आनन्द सुख कन्द ।
जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म !! १ !!



रामायण प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३७ !!



ओम्कार वाच्यस्त्वं राम वाचामविषयः पुमान् ।
वाच्य वाचक भेदेन भवानेव जगन्मयः॥१०६॥

हे राम! मनुष्यकी वाणी से आप अवर्णनीय है आपका ओम्कार मन्त्र वाचक है आप वाच्य है, वाच्य वाचक विवेक से आप सर्व जगत में व्यापक ब्रह्मस्वरुप है.
॥ १०६ ॥

महर्षि वाल्मिक रामायण प्रमाणम्. ॥



महाभारत प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३८ !!



ओम् नमः इति ॥ १०७ ॥

ओं परंब्रह्मस्वरूप विष्णु भगवानको ओम् नमः मन्त्रपढ करके हम नमस्कार करते है. ॥ १०७ ॥

महाभारत, अनुशासनपर्व, विष्णुसहस्र नाम श्लोक १२० ॥ प्रमाणम् ॥



!! ब्रह्मधुन !!

जय ओम् नमो जय ओम् नमो जय ओम् नमो जय ओम् !! १ !!



शांकर वेदान्त प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ३९ !!



ब्रह्मैकाक्षर मर्थ्यताम् ॥ १०८ ॥

एकाक्षर ब्रह्ममन्त्र ओम्कारका जप, में ब्रह्मरूप हुं ऐसा विचारकी साथ करो.॥१०८॥

शांकर वेदान्त साधन पंचक प्रमाणम् ॥



यदोम्कार गम्यम् ॥ १०८ ॥

मनुष्य मात्रको ओमकार मन्त्रका जप भजन करनेसे ब्रह्मस्वरूपका दर्शन होता है ॥ १०८ ॥

प्रणवाभ्यसनोक्त कर्मणः करणेनापि-
गुरोर्निषेवणात् ।
अपगच्छति मानसं मलं क्षमते तत्त्व-
मुदीरितं ततः ॥ १०९ ॥

ओम्कार ब्रह्म मन्त्रका जप भजन करने से ! सनातन वेद शास्त्रोक्त ब्रह्मार्पण कर्म करनेसे ! तन मन धन वाणीसे सप्रेम सद्-गुरु ब्रह्मकी सेवा करनेसे ! मनकी वासना मल पाप नाश होता है ! और सद्गुरुका ब्रह्म स्वरूप उपदेश हृदयमें स्थिर होता है. ॥ ॥ १०९ ॥

शांकर वेदांत शंकर दिग्विजय प्रमाणम् ॥



सर्व स्त्री पुरुष मनुष्य मात्रको पेटमें से

ओडकार आता है, वो हि स्वयंभु शब्द ओम्कार मन्त्र है ॥११०॥



ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, यज्ञोपवीत धारण करते है, वो यज्ञोपवितमें बारा देवका स्थापन प्रतिष्ठा होता है, उसमें प्रथम देव ओम्कारका स्थापन प्रतिष्ठा होता है ॥१११॥



वेद, शास्त्र, सूत्र, पुराणों, के सैंकडो प्रमाणो से अनुभव सिध्ध हो चुका है कि मानव जातिका ओम्कार बोलने का जन्मसिध्ध अधिकार है!! देखो ऐसा सत्य!! ओं !! सदा लिखते रहो !! ॐ !! ॐ !! खंडित अशुध्ध होनेसे सदा लिखना बन्ध करो ! ॥११२॥



तमोम्कारे णैवायतने नान्वेति विद्वान् ॥११३॥

हे! ज्ञानी महापुरुष ! ओम्कार मन्त्रका जप ध्यान करनेवाला परंब्रह्म देव को प्राप्त होता है ! ॥११३॥

अथर्व वेद प्रश्न उपनिषद् पंचम प्रश्न प्रमाणम् ॥



ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥११४॥

ओम्कार ब्रह्म मन्त्र का सदा ध्यान जप और गान करो ! और मैं ब्रह्म हुं ऐसा अखंड ध्यान धरो ! निरंजन परंब्रह्म देव तुम्हारा सर्व आत्माका कल्याण करो ! ॥ ११४॥

अथर्व वेद मुंडक उपनिषद, द्वितीय मुडक द्वितीय खंड, मन्त्र ६ प्रमाणम्. ॥



चैतन्य मात्र मोम्कारं ब्रह्मैव सकलं स्वयम् ॥११५॥

अखिल ब्रह्मांड में सर्व चैतन्य मात्र ओम्कार ब्रह्मस्वरूप है ॥११५॥

कृष्ण यजुर्वेद तेजोबिन्दु उपनिषद् मन्त्र ४३ प्रमाणम् ॥



दीर्घ प्रणव सन्धानं सिध्धान्त श्रवणं परम् ॥११६॥

हे सर्व मनुष्यो ! ओम्कार ब्रह्म मन्त्र का जप ओर गान अभ्यास बारंवार तन्मय होकर

वहुत समय करो ! और अद्वैत वेदान्त सिध्धान्त अहं ब्रह्मास्मि, में ब्रह्मस्वरूप हुं ऐसा श्रेष्ट ज्ञान विज्ञान वहुत समय श्रवण,मनन,निदि ध्यासन,- महान् करो ! ॥११६॥

ओम् प्रत्यगानंदं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपं अकार उकारो मकार इति त्र्यक्षरं प्रणवं तदे तदो मिति । यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्म संसार बन्धनात् ॥११७॥

अखिल विश्वमें, सर्व प्राणि मात्र में आनन्द ब्रह्मस्वरूप, प्रणव ओम्कार व्यापक है,

अकार, उकार, मकार, ए तीन अक्षर का प्रणव मन्त्र वह ओम्कार है, जो स्त्री पुरुष मनुष्य ओम्कार मन्त्र का जप, ध्यान, गान,

भजन, करता है, वो मनुष्य जन्म मर्ण संसार बन्धनसें मुक्त होकर परंब्रह्म को पाता है. ॥११७॥

ऋग्वेद, आत्मप्रबोध, उपनिषद्, प्रथम मन्त्र ओम् नमः प्रमाणम्. ।



ओम्कारं यो न जानाति ब्राह्मणो न भवेत्तु सः ॥११८॥

जो ओम्कार मन्त्र को नहि जानता है वो ब्राह्मण नहि होसकता है. ॥११८॥

ओमित्येका क्षरं ब्रह्म ध्येयं सर्वे मुमुक्षुभिः ॥११९॥

जन्म मर्ण संसार बन्धन से मुक्त होनेकी ईच्छा वाले स्त्री, पुरुष, नपुंसक, सर्वे मनुष्य

प्राणिमात्र ओम् एकाक्षर ब्रह्म मन्त्र. का जप, ध्यान, गान. सदा अभ्यास करो ॥११९॥

कृष्णयजुर्वेद, ध्यान विन्दु, उपनिषद्, मन्त्र ९, मन्त्र ३४ प्रमाणम्. ॥



ओम्कार प्रभवा देवा ओम्कार प्रभवाः स्वराः । ओम्कार प्रभवं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥१२०॥

ओम्कार मन्त्र सें ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, प्रगट हुये है, ओम्कार मन्त्र, सें गन्धर्व विद्या संगीत शास्त्र के सर्व प्रकार के स्वरो कि उत्पत्ति है. स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताल लोक, और स्थावर जंगम सर्व जगत ओम्कार मन्त्र सें उत्पन्न हुवा है. ॥१२०॥

ह्रस्वो दहति पापानि दीर्घः संपत् प्रदो ऽव्यय । अर्धमात्रा समायुक्तः प्रणवो मोक्षदा-यकः ॥१२१॥

अर्धमात्रा मकार की साथ प्रणव ओम्कार ब्रह्म मन्त्र धीरेसे जप करनेसें मनुष्य के सर्व पाप को जला देता है, और उंचे स्वरसे उच्चार करके गान करने से देवी संपत्ति विभूति ऐश्वर्य को, वर प्रदान को, देता है, जो स्त्री पुरुष मनुष्य ओम्कार एकाक्षर ब्रह्म मन्त्र का जप, ध्यान, भजन, गान करता है, वो मोक्ष पद ब्रह्मपद भगवान परंब्रह्म को पाता है. ॥१४१॥

कृष्ण यजुर्वेद, ध्यान विन्दु, उपनिषद्, मन्त्र ९६, ९७, प्रमाणम् ॥

—ॐ—



ओम्कार ब्रह्म मन्त्र कल्पविद्या दर्शन !! ४० !!



!! ओं !! अथातः पवित्राणां पवित्रायाति पवित्रायापराजिताय गुह्याय ब्रह्म हृदयाय ओम्कार कल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥

यत्र ग्राम्याणां पशूनां शब्दं नोपशृणुयादयं समीपे ब्रह्मवृक्षेणैकस्थुणांकुटीं प्रांग्मुखां कारयेत् ॥ २ ॥

कुशध्वजी कुशवेष्टी कुशाचीरवासाः कुशोपविष्टः कुशहस्तः कुशमेखलां धारयमाणः त्रिषवणस्नायी कुशशायी शाकयावकथो भैक्षाहारः आदित्याभिमुखस्तिष्ठन् ओम्कारं पंच सहस्रं जपेत् ततो स्य मन्त्रास्सर्वे सिध्यन्ति सर्वे वेदा अधीता भवन्ति सर्वेषु वेदेषु चीर्णव्रतो भवति सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति सर्वे वेदो ज्ञातो भवति सर्वै देवैर्ज्ञातो भवति सर्वयज्ञक्रतुभिरिष्टवान् भवति आ चक्षुषः पंक्ति पुनाति माता पितृदोषैः पुरुषदोषैश्चनिर्दोषः पूतो भवति ॥ चन्डालश्वपाकानां पुनाति ॥ ३ ॥

श्वेतायाः सरूप वत्सायाः पयसि स्थालीपाकं श्रपयित्वा आदित्याभिमुख ओम्कार सहस्रेणाभिमन्त्रितं कृत्वा स्वयं प्राश्नीयात्!

सप्तानां पुरुषाणां अलक्ष्मींनुदति जातिस्स्मरत्वं लभते श्रियं देवीं भजते ब्रह्मचर्यमस्याविच्छिन्नं सन्ततं भवति ॥ ४ ॥

प्रणवाद्यास्तथा वेदाः प्रणवे पर्यवस्थिताः। वांग्मयं प्रणवं सर्वं तस्मात् प्रणवमभ्यसेत् ॥ ५ ॥

प्रणवेन विहीनं यत् तन्मन्त्रं प्राणहीनकम् ॥
सर्वं मन्त्रेषु मन्त्राणां प्राणः प्रणव उच्यते ॥६॥

इत्याह भगवान् बोधायनः इति बोधायनीय गृह्य शेष तृतीय प्रश्ने प्रथमोध्यायः॥
॥ प्रमाणम् ॥



—: अर्थ :—



!!ओं!! भगवान् बोधायनं महर्षि मन्त्रयोग सिध्ध करनेवाले योगीयोको महान पवित्र में पवित्र गुप्त विश्वविजयी ओम्कार ब्रह्म मन्त्र कल्प विद्या का उपदेश करते है ॥ १ ॥

मन्त्र योग सिध्ध करनार योगी को गाम के रहनेवाले गाय, बळद, घोडा, श्वान, पशु के शब्द सुनने में न आवे ऐसा स्थान में जलाशय की पासमें रहना और ब्रह्मवृक्ष ढाकका एक दंड भूमिमें गाडदेना और पूर्व दिशा में प्रवेश करे ऐसी कुश दर्भकी दर्भ कुटी करना ॥ २ ॥

दर्भकी ध्वजा करके कुटि पर वांधना, कुटिकी चारो तरफ दर्भ वांधना, दर्भ गुंथके वस्त्र धारण करना, दर्भकी जनोई धारण करना, दर्भकी दोरीकी मेखला कम्मरमें वांधना, हाथमें दर्भ रखना, दर्भ पर सोना दर्भ के आसन पर वेठना !

त्रिकाल स्नान करना, सूर्यदेवके सामने खडा रह कर पांच हजार ओम्कार मन्त्रका जप करना !

पिछे कोई भी मन्त्र अनुष्ठान जप करो वो सिध्ध होता है !

शाक व यव भिक्षा करना ऐसा तप करनार योगीको सर्व वेदाध्ययन का पुण्य

फल मिलता है. सर्व वेदोक्त व्रत पुण्यफल मिलता है, सर्व वेद ज्ञान होता है.

सर्व देव दर्शन होता है. सर्व यज्ञसे ब्रह्म यजन का पुण्य प्राप्त होता है.

वह योगी मानवसमाज को दृष्टिसें पवित्र करता है, माता पिता और मनुष्य का पाप सें पवित्र होता है, श्वपाक चंडाल जातिको दृष्टिसें पवित्र करता है ॥ ३ ॥

सफेद रंगकी गाय सफेद बछडावाली उनके दुधमें दुधपाक वा खीर बनाके सूर्य-देव सामे बैठकर एक हजार ओम्कार मन्त्र से खीर मन्त्रोत करके योगी स्वयं अपना भोजन करले एसा करनेसे सात पुरुष तक दलिद्र को नाश करता है. पूर्व जन्मकी

जातिका स्मरण होता है, ब्रह्मचर्य तेज बल वढता है महा ऐश्वर्य मिलता है ! ॥ ४ ॥

सर्व वेदका मूल ओम्कार है! वाणी सर्व ओम्कारमय है! ओम्कार मन्त्रका जप करो! शरीर चैतन प्राण रहित निष्फल है ! ओम्कार रहित सर्व मन्त्र जप निष्फल है! वोधायन महर्पिका सर्व जगतको उपदेश है ! वोधायनीय गृह्यशेप तृतीय प्रश्न प्रथमोध्यायः ॥

॥ प्रमाणम् ॥



पै · ार नां म ाजी परंपज्य

ओं

परंब्रह्म व्याहृति मन्त्र कल्प-विद्या दर्शन !!४१!!

!! ओं !! अथातो व्याहृति कल्पं व्याख्यास्यामः ॥ त्रिषवणं स्नायादधः शय्यासन स्त्रिरात्र महोरात्रं वा उपोष्य द्वादशसहस्रं व्याहृति जपेत् ॥ १ ॥

कृत पुरश्चरणोथ कर्माण्यारभते ॥ २ ॥

दधि मधु घृताक्तानां पलाश समिधाहुति सहस्रंजुहुयात् ! ब्रह्मवर्चस काम, आज्येन तेजस्कामः पयसा, पशुकामो दध्नेन्द्रियकाम ओदनेन अन्नाद्यकामो व्रीहिभिर्यवैर्धान्यकामः कन्याकामो लाजैः तिलैः राक्षोघ्नं, पाप नाशनं च, सद्य एव विनश्यति ज्वरो, वानस्पत्यानां न्यग्रोधैः पुत्र काम, प्लक्षैः (ग्राम) गृहकामो,श्वत्थैः पुष्टिकामः शमीमयैःशान्तिकामो अपामार्गैः वश्यकामः, खादिरैः आधिपत्य कामो, अर्क समिद्भिः अर्थकामः, पलाशसमिद्भिः सर्वकामः ॥ ३ ॥ यावज्जुहोति (जपति) तावदाप्नोति, इतिहस्याह भगवान् बोधायनः ॥ ४ ॥

इति बोधायनीय गृह्यशेष तृतीय प्रश्ने द्वितीयोध्यायः ॥ प्रमाणम् ॥

— : अर्थ : —



!! ओं !! भगवान् वोधायन महर्षि मन्त्रयोग सिध्ध करनेवाले योगीयोको परंब्रह्म व्याहृति मन्त्र कल्पविद्याका प्रवचन उपदेश करते है.

मन्त्रयोग सिध्ध करनार योगीए त्रिकाल स्नान करना सोनेका वेठनेका आसन पृथ्वी पर करो !

एक रात्रि दिवस वा तिन रात्रि उपवास करो ! और वारा हजार ओम् भूर्भुवः स्वः ए तिन महाव्याहृति मन्त्रका जप करो ! ॥ २ ॥

ऐसा एक पुरश्चरण करके पिछे कोई भी कार्यका आरंभ करो ! ॥ २ ॥

ब्रह्मतेजकी इच्छावालाको दहीं, मध, घी (पलास) ढाककी समिधमें लगायके अग्निमें एक हजार आहुतिसें यज्ञ होम करो ! ॥१॥

तेजकी इच्छावाला महाव्याहृति मन्त्र से घीकी एक हजार आहुतिका यज्ञ होम करो. ॥ २ ॥

पशुओ की ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्र से दुधकी एक हजार आहुतिका यज्ञ होम करो ! ॥ ३ ॥

इन्द्रिय सुखकी ईच्छावाला दहींसे महा-व्याहृति मन्त्रकी एक हजार आहुतिका यज्ञ होम करो ! ॥ ४ ॥

अन्नकी ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्र से भातकी एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ ५ ॥

धान्यकी ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्र से डांगर वा यवकी एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ ६ ॥

कन्याकी ईच्छावाला डांगरकी धाणीसे महाव्याहृति मंत्रकी एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ ७ ॥

भूत, प्रेत, राक्षस, ब्रह्मराक्षस सर्व पाप महा पाप और सर्व प्रकारके ज्वर ताव तत्काल नाश करनेके लिये महाव्याहृति मन्त्रसे तिलकी एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥८॥

पुत्रकी ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्रसे वनस्पतिओका अंकुरकी कलियोंका एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ ९ ॥

गाम और घरकी इच्छावाला पीपरवृक्ष की समिधाका महाव्याहृति मन्त्रसे एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ १० ॥

शरीर पुष्टिकी ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्रसे पीपलवृक्षकी समिधाका एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ ११ ॥

शांतिकी ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्र से शमीवृक्षकी समिधाका एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो ! ॥ १२ ॥

वश करनेकी ईच्छावाला अपामार्गकी

समिधाका एक हजार आहुतिसे महाव्या-हृति मन्त्रसे यज्ञ होम करो ! ॥ १३ ॥

अधिपतिपद प्राप्त करनेकी ईच्छावाला खेर वृक्षकी एक हजार समिधाका आहुति-महाव्याहृति मन्त्रसे यज्ञ होम करो! ॥१४॥

सर्व प्रकारके अर्थकी ईच्छासे महाव्या-हृति मन्त्रसे अर्क वृक्ष—आकको एक हजार समिधाका आहुतिसे यज्ञ होम करो! ॥१५॥

सर्व ईच्छा संपूर्ण करनेकी भावनावाला पलाशवृक्ष (ढाककी) समिधाकी एक हजार आहुतिसे यज्ञ होम करो!॥ १६ ॥

सदाकाल सर्व मनोरथ सिध्ध करनेकी

ईच्छावाला महाव्याहृति मन्त्रका जप और यज्ञ होमं करा ! ॥ १७ ॥

भगवान् बोधायन महर्षि सर्व जगत को सत्य उपदेश कहते है ! ॥ ४ ॥

बोधायन गृह्यशेप तृतीयप्रश्न द्वितीयोध्याय ॥ प्रमाणम् ॥



महासिध्द संत ज्ञानेश्वर महाराज सुप्रसिध्द ओम्कार दर्शन !! ४२ !!



प्रणव जे गुह्य ऋपि योगीयां चे ।
सर्वां वरिष्ठ सार्वे वेद आज्ञा ॥ १ ॥

प्रणव ओम्कार मन्त्र ऋषि मुनि योगीयो का गुप्त श्रेष्ठ तत्व है! सर्व श्रेष्ठ सत्य वेद की आज्ञा है सर्व मनुष्य ओम्कार मन्त्रका जप ध्यान भजन करो! ॥ जय ओम् ॥



महासिध्ध गुरुनानक प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ४३ !!



हिन्दु धर्म एक पुरातन धर्म है !

हिन्दु धर्मकी विद्या सर्व विद्याकी उत्पत्ति का मूल है !

एक ओम्कार मन्त्र तुम्हारा सर्व दुःख संकट को दूर करेगा!

आदेश एक ओम्कारको आदेश !

एक ओम्कार गुरु शिर मेरे !

नाम एक ओम्कार करतारा !

जपता जाप एक ओम्कारा !

सब मूरत ते रहत न्यारा !

नानक बोले सच की वाणी !

सुण दत्तात्रय भगवन् प्राणी !

!! जय ओ नमः !!



स्वामी रामतीर्थ प्रसिध्ध ओम्कार दर्शन !! ४४ !!



समस्त संसारमें ओम्कारका डंका बजा दो !

ओम! ओम्! ओम्! डंका वजाके कहो अहं ब्रह्मास्मि—में ब्रह्म हुं एहि तुम्हारा जन्म सिध्ध अधिकार हक्क है!

उठते, वेठते, सुते, स्नान करते, भोजन करते, सर्व कार्यमें ओं! ओं! ओं! ओम् मन्त्रका उचार करो!

हिमालयके जंगलो में संत, साधु, प्रणव ओम्कार मन्त्र का उच्चार करते है!

सोहम् में ओं आता है सोहम् में से स, और ह, निकाल देने से ओं रहता है!

केलास के शिखर से गर्जना आतीं है. ओं, ओं, ओं, तत्सत् है!

ओं मन्त्र का जप करने में कोई विधि विधान की जरुर नहि है ! !! जय ओं !!



भारतवर्ष आर्यावर्त देश जय हिन्दके सर्व मत पंथवाले ओम्कार मन्त्र को हृदय से पूज्य मानते है !

ओम्कार मन्त्रका उच्चार करो उसी समय तन, मन से तीव्र प्रेमसे ओम्कार ब्रह्ममन्त्रमें तन्मय हो जाव !

जैन मतमें ओं बोलते है ! परश्यन भाषा में ! ओह्म ! कहते है ! ग्रीक भाषा के अन्तमें !ओ मेगा ! कहते है ! मुसलमानो आहमीन कहते है ! फारसी और अरबी लोक ! ओम-मन्त्रको ! आमीन ! आमीन ! कहते हैं ! हिब्रु और क्रिश्चिन प्रार्थना के अन्त में, ! एमेन !

शब्दका उच्चार करते है! संस्कृत, जर्मनो, जापानीझ, ईंग्रेजी, प्रत्येक भाषामें अनेक रूपसे! ओम्! शब्दका उच्चार होता है! ओं शब्द परं सत्य है! वेद वेदान्तशास्त्र हिन्दु-तत्वज्ञान! ओम्! शब्द समझाने के लिये प्रयत्न कर रहे है!

!ओम्! शब्द को संस्कृत व्याकरण के जाति, विभक्ति, प्रत्यय लगता नहि है!

!! ओम् मन्त्र स्वयंभू शब्द है!!

जो स्त्री पुरुष मनुष्य मात्र ओम् शब्द का गान करता है, उनका मन, विचार स्थिर बनता है!

ओम्कार मन्त्र का जाप करनेसे मनुष्य का सर्व मनोकामना संपूर्ण सिध्ध होता है!

स्वामी विवेकानंद प्रसिध्ध ओम्कारमन्त्र उपदेश

दर्शन !! ४५ !!



प्रथम ओम्कारका रहस्य समझो, अनुभवो, ओम्कार का रहस्य जाननेवाला इच्छित कार्य कर सकता है.

में सर्व शक्तिमान परं ब्रह्म हुं ऐसा ज्ञान भान सर्वको करा दो.

युवानो! जाग्रत हो जाव! कर्तव्य करने लगो!

हिन्दु धर्म सदा अमर रहो!!!



महासिध्ध भक्तराजसंत तुकाराम अभंग प्रसिध्ध ओम्कारमन्त्र उपदेशदर्शन !! ४६ !!



संत तुकाराम कहते है कि परंब्रह्म देव समस्त विश्वमें व्यापक है !

परंब्रह्म देवका भजन स्मरण करनेसे सर्व देवदेवीओ तुम्हारा पर प्रसन्न होंगे.

संत तुकाराम अभंग ४०७४ प्रमाणम् ॥



संत तुकाराम कहते है कि हे मेरा मन ! तुं सावध होजा, ओम्कार मन्त्रका भजन

चिन्तन करनेका पुण्य प्राप्त कर ले ओम्कार मन्त्रके भजन से तुम्हारे सर्व कार्यो कि सिध्धि हो जायगी !

संत तुकाराम अभंग १९१४ प्रमाणम् ॥



महा प्रयत्न करना पडे तो भि प्रयत्न करके अपने आत्माको परंब्रह्म में ऐक्य कर देता है वो भवसंसार तर जाता है !

संत तुकाराम कहते है कि परंब्रह्मभगवान् का श्रध्धाभक्ति सें ध्यान, भजन, करते है उनका जन्म को धन्य धन्य है !

संत तुकाराम अभंग ४०२८ प्रमाणम् ॥



संत तुकाराम कहते है कि जिसके चित्त में भगवान परंब्रह्मदेव के उपर प्रेम होगा उसीको में आशीर्वाद देता हुं के उसका कल्याण हो, कुशल रहो वो, परं ब्रह्मदेव में उसको सदा श्रध्धा प्रेमभक्ति वढती रहो, जिसको पास परंब्रह्मकी भक्तिरूपी संपत्ति है उनको मेरा संत तुकारामका नमस्कार है !

संत तुकाराम अभंग ४०२९ प्रमाणम् ॥

॥ जय ओम् नमः ॥



॥ ब्रह्मधून ॥

जय ओम् नमो जय ओम् नमो जय ओम् नमो जय ओम् ॥





!! हिन्दु वेदधर्म प्रचारक महर्षि- स्वामी दयानन्द सरस्वती- ओम्कार मन्त्र उपदेश दर्शन !!



ओं सच्चिदानंद परंब्रह्मदेवको नमोनमः !

ओम्कार मन्त्र परमेश्वरका सर्वोत्तम नाम है !

अ, उ, म, ए तीन अक्षर मिल कर के ओम् मन्त्र हुवा है !

वेदादिसत् शास्त्रो में ओम्कार मन्त्रका जप ध्यान भजन का उपदेश कहा है !

परब्रह्म परमात्मा के अनेक नाम ओम्कार मन्त्र का उचार करने सें आ जाता है!

रक्षा करनेवाला भगवान परंब्रह्मदेव परमात्माका वाचक मन्त्र ओम्कार है !

भगवान् परब्रह्मदेव परमात्मा को प्राप्त करनेके लिये चारे वेदो प्राथना करते है !

सर्व धर्म तप योग साधन परब्रह्मको प्राप्त करने के लिये करते है!

परब्रह्मका साक्षात्कार करने के लिये ब्रह्मचर्य तप वृत पालन किया जाता है !

यह परब्रह्मका वाचक मन्त्र ओम्कार है !

सर्व वेदशास्त्र में परब्रह्म परमेश्वरका स्वयंभू मुख्य मन्त्र ओम्कार है और सर्वनाम कवि-कृत गौण है विशेषण है !

अविनाशी परंब्रह्मदेवका मन्त्र ओम्कार है !

ओम्कारमन्त्र जप भजन उपासना करने में श्रेष्ठ योग्य है ! ऐसा दुसरा कोई भि नहि है !

ओम्कार मन्त्र सर्व ग्रन्थ के प्रारम्भ में लिखना चाहिये ! लिखो ॥

ऋषि मुनियों के प्राचीन ग्रन्थ के प्रारम्भ नें ओम् मन्त्र और अथ शब्द लिखा है !

ओम्कार मन्त्र एक अद्वितीय सत्य ब्रह्म है !

ओम् श्रीमद् दयानन्द सरस्वति स्वामी

कृत सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थः प्रथमः समुल्लासः प्रमाणम्!

!! जय ओम् नमः !!

!!सर्ववन्दन प्रसिध्य ओम्कार मन्त्र उपदेश दर्शन !! ४७ !!

ओम्कारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओम्काराय नमो नमः ॥

विन्दुवाला एक अक्षर !! ओं !!

अनुमन्त्र ओम्कार मन्त्रका योगि पुरुषो नित्य सदा ध्यान करते हैं !

मनुष्यके मनकी सर्व ईच्छा संपूर्ण करने वाला ओम्कार मन्त्र है !

परंब्रह्मपद मोक्षको देनेवाला ओम्कार मन्त्रको सप्रेम सदा अनंतकोटि हम नमस्कार करते है ॥

रुद्रयामल ग्रन्थ महादेव पार्वतिदेवी प्रमाणम् ॥



सनातन धर्मगुरु श्रीहरेराम ब्रह्मर्षि महाराज उपदेश दर्शन !! ४८ !!



!! जय ओं नमः !!

! भज मन ओम ब्रह्म निरन्तरम् !

अर्थः—हे मन ! सदा ओम् ब्रह्मनुं भजन कर !

अखिल भारत वर्ष आर्यावर्त देशमें जय-हिन्दमें रहनेवाले सर्व स्त्री पुरुप मनुष्य मात्रको हमारा यह उपदेश है कि प्रातःकालमें ब्रह्म मुहूर्त में चार बजे सब उठो, हाथ, मुख, आंख, ठंडा जलसें शुध्ध करो, ठंडा ज़ल धीरे धीरे पीओ !

शौच, दंतधावन करके शुध्ध जलसे स्नान करो ! शरीरे वस्त्रालंकार, कंठमें, कानमें धारण करो, भस्म कितीन रेखा, ललाट कंठ, हाथ, हृदयमें अपना शरीर पर कंठ, कान, हाथमें, धारण करो, रुद्राक्ष माला धारण करो ! चंदनकी सुन्दर अर्चा ललाट भालमें करो ! कुकुंम चांल्लो धारण करो ! प्रत्यक्ष देव भगवान सूर्यदेवको जय ओं नमः ! ऐसा

तिन वार मन्त्र पढ करके पवित्र जलकी अंजली उंचे आकाश में अर्पण करो !

! जय ओं नमः ! मन्त्र पढ करके १०८ नमस्कार करो ! नित्य अग्निमें ! ओं स्वाहा ! मन्त्र पढ करके घृत, चावल, यव, तिल, कमल पुष्प, गुलाबपुष्प, हजारीगोटापुष्प, मोगरा पुष्प, चंपापुष्प, दर्भ, दुर्वा, सुगंधी-पुष्पो बिलिपत्र, तुलसीपत्र, गुगल, धूप, चंदनधूप, ए सर्वमें समयपर जो मिले उसका यज्ञहोम करो !

नित्य ओं स्वाहा मन्त्र पढ करके जलमें जलधारा करो. ओम्कार मन्त्रकी नित्य दोसो (२००) माला जप करो ! ध्यान योग-करो, प्राणायाम करो,

!ओं ब्रह्मार्पण ! पढ कर पृथ्वीपर जल

मूको ! परं ब्रह्मदेवका सदा ध्यान भजन करो ! मातादेव, पितादेव, पतिदेव, सदगुरु-देव, धर्ममूर्ति विप्रदेव, पूज्य स्त्री पुरुषोको! जय ओं नमः! मन्त्र पढ करके सप्रेम वंदन करो ! नित्य यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल द्रव्यका धर्मनिष्ठ सुपात्र ब्रह्मनिष्ठ, विद्वान् ब्राह्मणको दान करो ! ब्रह्मचर्य तेज बलको समझो पालो, और मन, इन्द्रियोकी वासना पर संयम पालन करो, सर्व प्रकारके व्यसन, कुसंग, दलिद्र, आलस, प्रमाद, मात्र का त्याग करो ! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, के महान पुरुषार्थ करो, ए सनातन हिन्दु वेद धर्मके नियम पालन करनेसे सुख शांति और मोक्ष गति परंब्रह्मधाम प्राप्त होगा !

—०—

ओं

सनातन धर्मगुरु श्रीहरेराम ब्रह्मर्षि महाराज जीवनचरित्र

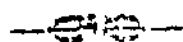
दर्शन !! ४९ !!

भारतवर्ष आर्यावर्त जयहिन्द महागुजरात-देश, चारुतर प्रदेश, महिगंगा रत्नागरसमुद्र संगमतट, स्तम्भतीर्थ खंभात, अलिंग, औदिच्य टोळकवाडी, समीप ब्रह्मर्षि आश्रम

है. साभ्रमति गंगातट, शहेर अमदावाद. सारंगपुर, पंडितजीकी पोळ, ब्रह्मर्षि आश्रम है.



शुक्ल यजुर्वेद, माध्यन्दिनी, वाजसनेयी, शाखा, शांडिल गोत्र, शांडिल, असित, देवल, त्रिप्रवर, औदिच्य टोळक ज्ञातिमें, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, पंडित श्रीसुन्दराम पिताजी और धर्मभक्तिवंत माताजी विष्णुदेवीसे विक्रम संवत १९४७ शके १८१३ वैशाख शुक्ल तेरस गुरुवारको प्रातःकालमें ब्रह्मर्षि महाराजका जन्म हुवा है !!



ब्रह्मर्षि तपोवन तप दर्शन !! ५० !!



ब्रह्मर्षि महाराजने सनातन वेदशास्त्रोक्त ब्रह्मचर्य दीक्षा पांचमे वर्ष धारण करके वेद वेदांग शास्त्रोका ज्ञान सम्पादन किया



अठारह वर्षमें अमरकंटक, नर्मदा, आबुराज गिरनार, विन्ध्याचल, हिमालय, भागीरथी, गंगा तपोवन तपश्चर्या करके तीर्थधाम दर्शन महायात्रा करके माताजी विष्णुदेवी के दर्शनार्थ स्वदेश में पधारे !



ब्रह्मर्षि दान यज्ञव्रत दीक्षा दर्शन !! ५१



संवत् १९७५में ब्रह्मर्षिमहाराज! दान, यज्ञ, तप व्रत, दीक्षा, धारण करके पवित्र ब्राह्मण पुत्रो को ब्रह्मचर्य दीक्षा देकर अन्न, वस्त्र, पुस्तक, सर्व साहित्य और वेद शास्त्रका ज्ञान सम्प्रदान करके वेदोक्त अनेक ब्रह्मचारी तैयार किये!



ब्रह्मर्षिधर्म ब्रह्म महाज्ञान दान दीक्षा दर्शन ! ५२



जगतमें लोक कल्याणके लिये निष्काम धर्मसे धर्म ब्रह्म महाज्ञान दान दीक्षा तप व्रत

धारण करके अनेक देश प्रदेश शहेर नगर गाम धाम पुरुपोकी और स्त्री देवीयो की जाहेर महासभाओ में उपदेश प्रवचन शुरू किया !



ब्रह्मर्षि महायज्ञ व्रत दीक्षा दर्शन ! ५३

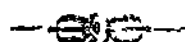


ब्रह्मर्षि महाराजने महायज्ञ तप व्रत दीक्षा धारण करके अनेक देश प्रदेशमें ! ओं अतिरुद्र महायज्ञ !

ओं परब्रह्म महायज्ञ ! ओं जय महादेव ! महारुद्र यज्ञ ! ओं सर्वदेव महायज्ञ– ओं श्रीमख महायज्ञ ! अैसे १२५ महायज्ञो से परंब्रह्म यजन किया !



ब्रह्मर्षि ग्रन्थ भेट सम्प्रदान दीक्षा दर्शन ! ५४



जयहिन्द सनातन वेदधर्म के वेद, उपनिषद, वेदान्तशास्त्र, धर्मशास्त्र, योगशास्त्र, आयुर्वेदशास्त्र, नीतिशास्त्र, उत्तमोत्तम, उपदेशक, सन्मार्गदर्शक, परंब्रह्मभक्तिवर्धक, संस्कृत, हिन्दि, गुजराती भाषानुवाद प्रकाशन प्रसिध्ध करके अनेक अर्ध सैंकडो प्रकारके लाखो ग्रन्थो, संतो, महन्तो, पंडितो विद्यार्थीयो, विद्यालयो, कन्याशाळाओ, पाठशालाओ, अनाथाश्रमो, रेल्वेगाडीके असंख्य मुसाफरो

को ज्ञान धर्म प्रचारार्थ औं ब्रह्मार्पण भेट सम्प्रदान किया है !



ब्रह्मर्षि अग्निहोत्र गृहस्थाश्रम धर्म दीक्षा दर्शन! ५५



ब्रह्मर्षिमहाराजने धर्म भक्ति योगमूर्ति औं ब्रह्म-रूप माताजी विष्णुदेवीकी आज्ञाको सन्मान करके चौतीस वर्षे हजारो रुद्राक्ष शणधार धारण करके दंड, कमंडल, जटा, भस्म, विभुषित होकर ब्रह्मचारी शिष्यमंडल शंखनादके साथ शंकर स्वरूप सें लग्नमंगल स्वीकार किया !



महासती सौभाग्यवती श्रीमति महादेवीजी !! सुपुत्र श्री गुरुदेव ! सुपुत्रि श्री-आनंदादेवी ! उनका जन्मदाता मातापद सिध्ध संपूर्ण करके निर्वाण ब्रह्मपदको प्राप्त हो गये !

ची. श्री गुरुदेव ब्रह्मचर्यआश्रम समाप्त करके स्तंभतीर्थ खंभात में धर्म भक्तिवंत पंडित दिनमणिशंकर करुणाशंकर के सुपुत्रि श्रीदेविके साथ लग्नमंगल हुवा है. !

और उनको सतीदेवी नामके सुपुत्रि है.

ची. सुपुत्रि श्री आनंदादेवीका खंभात अलींगमें कृष्णात्रि पंडित पालखीवाला लल्लुभाई के पुत्र चन्द्रशंकर उनके पुत्र श्री रणछोडरायके साथ लग्न हुवा है !

ब्रह्मर्षि तप उपदेश संपूर्ण दर्शन! ५६



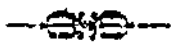
सनातन धर्मगुरु ब्रह्मर्षि महाराज ! ब्रह्मलक्ष्य ब्रह्ममन्त्र जाप ब्रह्मविद्या, प्रवचन, उपदेश, ज्ञानविज्ञान तपयोगमें स्थिर गंभीर शान्त विराजमान है! ओं धन्य धन्य कृतारथ है. !

!! ओं ब्रह्मार्पणम् !!



भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम् !

अर्थः—हे मन! सदा ओम् ब्रह्मनुं भजन कर!



योगवासिष्ठ महारामायण सुप्रसिध्ध ओम्कार उपदेश दर्शन ! ॥५७॥



ब्रह्मदेव के मानसिक पुत्र प्रजापति—महर्षि वसिष्ठ ब्रह्मर्षि, रामचन्द्रजी को उपदेश करते है, प्राणवायु को सोल वार ओम् मंत्रसें पुरक करो, चौसट वार ओम् मंत्र पढो कुंभक करो, बत्तीस वार ओम् मंत्र पढो धीरेसे रेचक करो. पुनः प्राण स्थिर करो ऐसा वारंवार करना उनका नाम समाधि कहते है !

वलिराजा ओमकार का भजन करके ब्रह्मज्ञानमें ब्रह्मरूप हो गया है !

योगवासिष्ठ, महारामायण, उपशम-प्रकरण, प्रमाणम् !!



।।सर्प नाग भयमुक्त दर्शन।।५८।।



महाराजा मान्धाता के सुपुत्र पुरुकुत्स-महाराजा को नागदेव रसातल लोकमें ले गअे ! सर्व नागदेवोने अपनी व्हेन नर्मदा देवीका पुरुकुत्स महाराजा के साथ लग्न किया ! गन्धर्व लोक नागदेवको कष्ट देते थे ! नागदेवको दुःख देनेवाले गन्धर्वों का

पुरुकुत्स महाराजाने युध्ध करके नाश किया! सुप्रसन्न हो कर सर्व नागदेवोने पुरुकुत्स महाराजा को वर प्रदान दिया है!

हे ! पुरुकुत्स महाराजा ! अे चरित्रको याद करके तुम्हारा नामका स्मरण करेगा वह स्त्री पुरुप सर्व मनुष्य को सर्प नाग भय नहि होगा ! ! ! हे सर्व स्त्री पुरुषो !

इस मन्त्रको उंचे स्वरसें तिनवार पढो!

! ओम् ! पुरुकुत्स ! ओम् ! ओम् ! पुरुकुत्स ! ओम् ! ओम् ! पुरुकुत्स !ओम् !

ओम् पुरुकुत्स महाराजा का जय हो!!

इस कथाको जगतका कल्याणके लिये सर्वत्र सदा सुप्रसिध्ध करो !

प्रमाण महापुराण श्रीमद्‌भागवत स्कन्ध नव (९) अध्याय सात (७) में हे !



महाराजा जनमेजय का सर्पसत्र यज्ञमें महर्षि आस्तिक मुनि को सर्पदेवो का वर प्रदान मिला हे ! आस्तिक मुनिका स्मरण करनेसे सर्प का भय दुर होता है !

!ओम्! आस्तिक! ओम् ! ओम् ! आस्तिक ! ओम् ! ओम् ! आस्तिक ! ओम् ! ओम् ! महर्षि आस्तिक मुनिका जय हो ३ ! ! सर्वत्र प्रचार करो !

प्रमाण महाभारत ग्रन्थ आदिपर्व आस्तिक पर्व अध्याय !! ५८ !!



॥ सर्पभय नाश मंत्रदर्शन॥५९॥

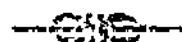


ओं कर्कोटको नाम सर्पो यो दृष्टि विष उच्यते।
तस्य सर्पस्य सर्पत्वं तस्मै सर्प नमोस्तु ते ॥१॥
ओं नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि।
नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहिमां विष सर्पतः ॥ २ ॥
असिति चार्थ सिध्धि च सुनीति चापि यः स्मरेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति सर्प भयं भवेत् ॥३॥
यो जरत् कारणा ज्जातो जरत् कार्वां महायशाः।
तस्य स्मरामि भद्रन्ते दुरं गच्छ महाविष ॥४॥
यो जरत् कारुणाज्जातो जरत् कारौ महायशाः।
आस्तिकः सर्पसत्रे वः पन्नगान् योभ्यरक्षत ।
तं स्मरन्तं महाभागा न मां हिंसितुमर्हथा ॥५॥

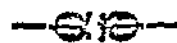
सर्पाप सर्प भद्रन्ते गच्छ सर्पमहाविप।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिक वचनं स्मर ॥६॥
आस्तिकस्य वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते ।
शतधाभिद्यते मुर्ध्नि शिंश वृक्ष फलं यथा ॥७॥



॥ नवनाग स्मरण दर्शन ॥६०॥



अनंतं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कंबलम् ।
शंख पालं धृतराष्टं तक्षकं कालियं तथा ॥१॥
अेतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।
तस्यविपभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥२॥
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्यानलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥३॥





ओं

॥ओं॥ महादेवी महालक्ष्मी श्री देवी कल्पविद्या दर्शन॥ ६१॥



! ओं ! अर्थातः श्री कल्पं व्याख्यास्यामः ! शुक्ल पक्षस्य पंचम्यां पौर्णमास्यामपि वा श्रियं कदम्वमयी विल्वसारमयीं स्थंडिले वा विधायाहोरात्रोपोषितः शुचिः कृत शौचः समे देशे गोमयेन गोचर्म मात्रं चतुस्रं स्थंडिल मुपलिप्य गन्ध सुमनसस् संप्रकीर्य

हिरण्यमयेन पात्रेणोदकं पूरयित्वा गन्धान् सुमनसः तस्मिन्—

! हिरण्यवर्णां हरिणीम् ! इतिद्वाभ्यां,
!! ओं !! भूः श्रिय मावाहयामि ! !
!! ओं !! भुवः श्रियमावाहयामि ! !
!! ओं !! स्वः श्रियमावाहयामि !!
!. ओं !! भूर्भुवः स्वः श्रियमावाहयामि !!

इति आवाह्य कर्दमेन इति द्वाभ्यां प्रसिध्य प्रोक्ष्य ! अश्वपूर्णां इति स्नापयित्वा ! गन्धद्वाराम्, इति गन्धं ददाति ! कांसोस्मिताम्, इति पुष्पं ददाति । उपैतुमाम् इतिधूपं ददाति ! चन्द्रां हिरण्यमयीम् ।

इति दीपं ददाति ! चन्द्रां प्रभासाम्, इति नैवेद्यं ददाति ! ॥ १ ॥

अथ देव्या दक्षिणतोग्नि मुपसमाधाय सम् परिस्तीर्य महाव्रीहिभिः तंडुलैः पायसं चरुं श्रपयित्वा हविर्द्विधा कृत्वा ! मनसः कामम्, इति अभिप्रेत्य काममनूनं वाज्य-मिश्रं श्री सूक्तेन पंचदशर्चेन हविर्जुहोति! ॥ २ ॥

तेन सूक्तेन ! ओं श्रियै नमः ! ओं पुष्टै नमः ! ओंधात्र्यै नमः ! ओं सरस्वत्यैनमः ! इति बलि मुपहरति ॥३॥

पद्म पुष्पाणि यथा लाभं गृहित्वा प्रत्यंगं निर्मार्ष्टि ! क्षुत् पिपासाम् इत्य लक्ष्मीं निर्णुदति ! ॥ ४ ॥

अेवमेवा हरहर्मासि मासि वा महान्तं पोषं पुष्यति धनं यशस्य मारोग्य मायुष्यं

पुत्र्यं पशव्यं तस्य महत् स्वस्त्ययन मित्याह भगवान् बोधायनः !! ॥ ५ ॥

इति बोधायन गृह्यशेष सूत्रे
तृतीय प्रश्ने पंचमो ध्यायः !!.





!! ओं !! महादेवी महालक्ष्मी श्री देवी कल्पविद्याअर्थ-दर्शन !! ६२ !!



!! ओं !! हिमालय निवासी भगवान्

वोधायन महर्षि सर्वजगत का कल्याण के लिये ओं महादेवो महालक्ष्मी श्रीदेवी कल्प विद्या का प्रवचन उपदेश करते है ।



— : अर्थ : —



!ओं! महादेवी महालक्ष्मो श्रोदेवी कल्प विद्या सिध्ध करने वाले स्त्री पुरुष शुध्ध जलसे त्रिकाल स्नान् करो, ब्रह्मचर्य व्रत पालो, शुध्ध वस्त्रो धारण करो, त्रिकाल अग्नि-में ! ओं स्वाहा ! मन्त्र पढो घी का होम करो, वेद मन्त्र गायत्रि का जप करो, ब्रह्म-मंन्त्र ओम्कार का जप करो, नित्य कर्म संपूर्ण करो, सर्व काम प्रवृत्ति वन्ध करो.

अेकान्त शान्त पवित्र स्थान में शुक्ल पक्ष की पंचमी और पूर्णिमा के दिवसे, दिवस-रात का अखंड अेक उपवास करो. और शुध्ध समचोरस पृथ्वी पर चारोतरफ चार हाथका मापसे मृत्तिका की अेक वेदि करो, गायका गोवर से वेदी लींपो, वेदीपर कदंम के पुष्प का ढग करो, और बीली के फल का ढग करो और वेदी पर । ॥जय ओं नमः। अे मन्त्र पढो सुगन्धी पुष्प चढावो!

और सुन्दर सोने का पात्र में पवित्र जल भरो, और गुलाब पुष्प, कमल पुष्प, मोगरो पुष्प, चंपा पुष्प, हजारी गोटा पुष्प, ढाकके पुष्प पुष्प यह दो मन्त्र पढ करके अेसे श्रेष्ठ अर्पण करो ।

—ॐ—

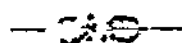
ओं! हिरण्य वर्णां हरणीं सुवर्ण रजतस्त्र-ज़ाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो ममावह, जय ओं नमः ॥ १ ॥



ओं! तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप गामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्, जय ओं नमः ॥ २ ॥



यह चार मन्त्रा पढ करके ओं महादेवी महालक्ष्मी श्री देवी का ध्यान आवाहन करो :—



१ ओं भूः श्रियं आवाहयामि ।

२ ओं भुवः श्रियं आवाहयामि !

३ ओं स्वः श्रियं आवाहयामि !

४ ओं भू र्भुवः स्वः श्रियं आवाहयामि!



यह दो मन्त्र पढो वेदो पर और सुवर्ण पात्र पर शुध्ध जलसे प्रोक्षण करोः—



! ओं ! कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम् , जय ओं नमः ॥ १ ॥

!ओं! आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले, जय ओं नमः ॥ २ ॥



यह अेक मन्त्र पढो सुवर्ण पात्र पर जल धारा करो :–



!ओं! अश्व पूर्णां रथ मध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् । श्रियं देवी मुपह्वयेश्रीर्मा देवीर्जुषताम्, जय ओं नमः ॥ १ ॥

यह अेक मन्त्र पढो सुवर्ण पात्र में सुगन्धि चन्दन अर्पण करो :–



!ओं! गन्ध द्वारां दुरा धर्षां नित्य पुष्टां करिषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां ता मिहो-पह्वये श्रियम्, जय ओं नमः ॥ १ ॥



यह, अेक मन्त्र पढो सुवर्ण पात्र में सुगन्धी पुष्पो अर्पण करो :—



!ओं! कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तिम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपहूवयेश्रियम्,

जय ओं नमः ॥ १॥



यह अेक मन्त्र पढो सुवर्ण पात्र के सामने सुखड चन्दन, और गुगल, घी का अग्नि में धूप करो :—

!ओं! उपैतु मां देव सरवः कीर्तिश्चमणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे स्मिन् कीर्तिं वृध्धि ददातु मे, जय ओं नमः ॥ १ ॥

यह अेक मन्त्र पढो सुवर्णपात्र सामने घीका दिपक करोः—

ओं चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह, जय ओं नमः ॥ १ ॥

यह अेक मन्त्र पढो सुवर्ण पात्र सामने (दुधपाक) क्षीर नैवेद्य अर्पण करोः—

ओं चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टा मुदाराम्। तां पद्मि-नीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मी में नश्यतां त्वां वृणे, जय ओं नमः ॥ १ ॥

श्रीदेवो स्थापन सुवर्ण पात्रसे दक्षिण दिशामें मट्टीकी चोखंडी वेदी करो, वेदीपर गायत्री मन्त्र पढो, जलसें प्रोक्षण करो, उस में अग्नि स्थापन करो, अग्निज्वाला प्रगट करो. ॥

शुध्ध पात्रमें श्रेष्ठ शाली (डांगर,धान) के बडे चावल की दुधमें (दुधपाक) क्षीर करो, क्षीरके दो भाग करो,अंदर घी मिश्रित करो. और अेक भागका यज्ञ होम करो.

अपनी जो ईच्छा हो उसका मनमें संकल्प करो, और अे मन्त्र पढो अग्नि में यज्ञ होम करोः—



!ओं!मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशी

महि। पशूनां रूप मन्यस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः, जय ओं नमः ॥ १५ ॥



श्री सूक्त के पंदर मन्त्र पढो (दुधपाक) क्षीर की पंदर आहुतिसें होम यज्ञ करोः—

और श्रीदेवी सूकृतका पंदर मंत्रका अेक पाठ करो. क्षीर दुधपाक का एक भाग जो रहा है उसका सुवर्णपात्रके सामने चार बलिप्रदान करोः—

१ !ओं! श्रियै नमः! २ !ओं! पुष्ट्यै नमः! ३ !ओं!धात्र्यै नमः! ४ !ओं! सरस्वत्यै नमः!



जीतना कमल पुष्प मिले उतना लाकर श्रीदेवी सूकृतके पंदर मन्त्रसे अग्नि में यज्ञ होम करो !



दुख, दालिद्रय, दुर्लक्ष्मी, दूर, करने को यह एक मन्त्र पढो, और कमल पुष्पका अग्नि में यज्ञ होम करोः—

—०—

!ओं! क्षुत्पिपा सामलां ज्येष्ठा मलक्ष्मी नाशयाम्यहम् । अभूति मसमृध्धि च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् !ओं स्वाहा! ॥ १ ॥

—०—

नित्य नित्य और मासे मासे श्रीदेवीसूक्तसें पूजन यज्ञ करनेवाला स्त्री पुरुष महान् अैश्वर्य सुख विभूति को प्राप्त होता है.

धन, यश, आरोग्य, आयुष्य, पुत्र प्रापृति पशुओ का लाभ और महासुख मिलता है!

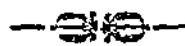
—०—

भगवान् बोधायन महर्षिने सर्व जगतका कल्याण के लिये यह प्रवचन उपदेश किया है !

अेवम् बोधायन गृह्यशेष सूत्र, तृतीय-प्रश्न, पंचमो अध्याय संपूर्णम् !



!ओं! महादेवी महालक्ष्मी श्रीदेवी कल्पविद्या मन्त्रविधि अर्थ दर्शन संपूर्णम् !!



!! श्रीदेवी सूक्तमन्त्रदर्शन !! ६३ !!



!! ओं !! हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ! चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ! ओं स्वाहा ! ॥ १ ॥

!! ओं !! तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी-मनप गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ! ओं स्वाहा ! ॥ २ ॥

!! ओं !! अश्वपूर्णा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवी जुंपताम् ! ओं स्वाहा ! ॥ ३ ॥

!! ओं !! कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा-मार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ! ओं स्वाहा ! ॥ ४ ॥

!!ओं!! चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टा मुदाराम्। तां पद्मि-नीमीं शरण महं प्रपद्ये अलक्ष्मी में नश्यतां त्वां वृणे ! ओं स्वाहा ! ॥ ५ ॥

!!ओं!! आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोथ विल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः ! ओं स्वाहा ! ॥ ६ ॥

!!ओं!! उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे स्मिन् कीर्ति वृध्धिं ददातु मे ! ओं स्वाहा ! ॥७॥

"!ओं!! क्षुत् पिपा सामलां ज्येष्ठां मलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूति मसमृध्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ! ओं स्वाहा ! ॥ ८ ॥

!!ओं!! गन्ध दृवारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ! ओं स्वाहा ! ॥ ९ ॥

!!ओं!! मनसः काममाकूति वाचः सत्य

मशी महि । पशूनां रूपमन्नस्य मयिश्रीः श्रयतां यशः । ओं स्वाहा ! ॥ १० ॥

!! ओं !! कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-मालिनीम् ! ओं स्वाहा ! ॥ ११ ॥

!!ओं!! आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले ! ओं स्वाहा ! ॥ १२ ॥

!! ओं !! आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम् । सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ! ओं स्वाहा ! ॥१३॥

!!ओं!! आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्म मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ! ओं स्वाहा ! ॥ १४ ॥

!!ओं!! तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ ! ओं स्वाहा ! ॥ १५ ॥

!!ओं!! यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् । सूक्तम् पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ! ओं ॥ १६ ॥



! आशीर्वादमन्त्रदर्शन !६४!



!! ओं !! श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधाच्छो भमानं महीयते । धनं धान्यं

पशुं वहु पुत्र लाभं शत संवत्सरं दीर्घ-
मायुः ।ओं। ॥ १७ ॥

—⊜—

॥ ब्रह्मधुन ॥

॥ओं॥ सत् चित् आनंद सुखकंद,
जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म ॥ १ ॥

—⊜—

जय ओम् नमो, जय ओम् नमो;
जय ओम् नमो, जय ओम्.
भज मन ओम्, ब्रह्म निरन्तरम् ।

—⊜—

— : अर्थ : —

हे मन। सदा ओम् ब्रह्मका ध्यान भजन करो।

—⊜—



सौ० योगमूर्ति श्री देवी
गुरुदेव ब्रह्मर्षि महाराज !

ओं

!! ओं ! कृष्ण यजुर्वेद सनातन वेदधर्म उपदेश शिक्षा-दर्शन !! ६५ !!

— : मन्त्र : —

!ओं! वेदमनुच्याचार्योन्ते वासिन मनु-शास्ति ! सत्यं वद ! धर्मचर ! स्वाध्यायान् मा प्रमदः ! आचार्याय प्रियं धन माहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सोः ! सत्यान्न प्रम-

दितव्यम् ! धर्मान्न प्रमदितव्यम् ! कुशलान्न प्रमदितव्यम् ! भूत्यै न प्रमदितव्यम् ! स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥१॥

—: अर्थ :—

परं पवित्र सदाचारी गृहस्थाश्रमी ब्राह्मण श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ सद्गुरुदेव! अपना आश्रमेंमें आये हुअे यज्ञोपवित जनोइ दिये हुअे कोपीन वस्त्र, दंड, कमंडल, मृगचर्म, मुंजमेखला धारण कीये हुअे, बालब्रह्मचारी! ब्राह्मणके पुत्रको, और क्षत्रिके पुत्रको, वैश्य के पुत्रको सद्गुरु सेवा करके साथमें रहने-

वाले ब्रह्मचारीयोको गुरुजी वेद पढा कर के सनातन वेद धर्मशास्त्रका यह उपदेश विधिसे सप्रमाण करते हे ! ॥ १ ॥



॥ ओं ॥ ओं ॥ ओं ॥

हे प्रिय ब्रह्मचारी। तुम सदा वाणीमें प्रिय सत्य वचन बोलो ! ॥ २ ॥



सनातन वेद धर्मके नियम सदा पालन करो ! ॥ ३ ॥



तुम गुरुजीसे जो विद्या पढे हो उसीका नित्य सदा अभ्यास करो ! नित्य पढे हुअे

विद्याकि आवृत्ति करने में आलस प्रमाद न करो ! ॥ ४ ॥



तुम संपूर्ण विद्या पढ करके अपने घर जाव उसी समय गुरुजी को परम प्रिय भेट दक्षिणा समर्पण करो ! ॥ ५ ॥



और तुम ब्रह्मचर्य आश्रमको समाप्त कर के वेद विधिसे लग्न करो ! गृहस्थाश्रमधर्म अवश्य पालन करो! गृहस्थाश्रमधर्मका त्याग न करो ॥ ६ ॥



सत्य धर्म के नियम पालन करने में तुम आलस प्रमाद न करो ! ॥ ७ ॥



सनातन वेद्धर्म शास्त्र में कहे हुऐ सर्व धर्म नियम प्रमाणे से वर्तने में आलस प्रमाद न करो ! ॥ ८ ॥



सनातन वेद धर्म शास्त्र में कहे हुऐ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष; इन चारो पुरुषार्थ करने में और व्यवहार ज्ञान में कुशल चतुर चेतन सावध रहो ! इस कार्य में तुम आलस प्रमाद न करो ! ॥ ९ ॥



ऐश्वर्य धन संपत्ति प्राप्त करने में सर्व प्रकारके पुरुषार्थ करो ! इस में तुम आलस प्रमाद न करो ! ॥ १० ॥



नित्य सनातन वेद धर्मशास्त्रके अध्ययन करनेमें पढने में भूल न करो ! और चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, शूद्र, सर्व मनुष्य को सनातन हिन्दु वेद धर्मशास्त्रका प्रवचन उपदेश करते रहो ! इस कार्य में तुम आलस प्रमाद न करो ! ॥ ११ ॥



देव पितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्! मातृदेवो भव! पितृदेवो भव ! आचार्यदेवो-

भव ! अतिथिदेवो भव ! यान्यन्वद्यानि कर्माणि ! तानिसेवितव्यानि ! नो इतराणि ! यान्यस्माकगुंसुचरितानितानित्वयोपास्यानि ! ॥ २ ॥



— : अर्थ : —



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! नित्य त्रिकाल संध्या करो ! अग्निहोत्र करो ! पंच महायज्ञ वैश्वदेव करो ! ओम्कार ब्रह्ममन्त्रका जप करो ! गायत्रि ब्रह्ममन्त्रका जप करो ! प्राणायाम तप करो । परंब्रह्मदेवका ध्यान धरो ! ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण सद्गुरुदेवकी पूजा करो!

नित्य और नैमित्तिक अन्नदान, फलदान जलदान, वस्त्रदान, तिलदान, सुवर्णदान, धनद्रव्यदान, जलसे संकल्प करो, विधि प्रमाणसें सुपात्र ब्राह्मणको ! ओं ! "ब्रह्मार्पणं ! अैसा पढ करके भेट सम्प्रदान करो ! इस देवकार्य करने में तुम आलस प्रमाद न करो !



नित्य नैमित्तिक देव, ऋषि, पितृका तर्पण करो ! पितृश्राध्ध पिंड प्रदान करो ! वेदोक्त पितृ मन्त्रसें अग्निमें होम करो ! पितृदेवके वेदमंत्र पढ करके जलमें जलधारा करो ! अे

पितृकार्य करनेमें तुम आलस प्रमाद न-करो ! ॥ १२ ॥



मनुष्य जन्म देनेवाला अपना मातुश्री ! अे भगवान परं ब्रह्मदेवकी प्रत्यक्ष चेतन मूर्ति है ! उनकी चन्दन पुष्पसें पूजा करो ! उनको मधुर भोजन अर्पण करो ! फल और सर्व साहित्य-सप्रेम भेट अर्पण करो ! मातुश्रीके चरणमें ! जय ओं नमः ! मंत्र पढ करके नमस्कार करो ! अेसुप्रसन्न हो जाय अैसी आज्ञा मानो सेवा करो ! ॥ १३ ॥



मनुष्यको जन्म देनेवाला अपना पिताश्री ! अे भगवान् परं ब्रह्मदेवकी प्रत्यक्ष चेतन

मूर्ति है! उनकी चन्दन पुष्पसें पूजा करो! उनको मधुर भोजन अर्पण करो ! फल और सर्व साहित्य सप्रेम भेट अर्पण करो! पिताश्री के चरण में ! जय ओं नमः ! मंत्र पढ कर के नमस्कार करो ! सुप्रसन्न हो जाय ऐसी आज्ञा मानो सेवा करो ! ॥ १४ ॥



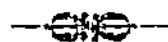
जाति ब्राह्मण, गृहस्थाश्रमी, निर्व्यसनी निर्विकारी, सदाचारी, वेदशास्त्र पढे हुअे, ब्रह्मज्ञानी, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, आचार्य सद्गुरुदेव ! अे भगवान परंब्रह्मदेवकी प्रत्यक्ष चेतनमूर्ति है ! उनकी नित्य चन्दन, पुष्पसें पूजा करो ! धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, अलंकार, धन, फल प्रिय साहित्यकी सादर सप्रेम भेट

करो ! प्रिय मधुर भोजन अर्पण करो ! मंगल आरति करो ! सद्गुरु चरणमें ! जय ओं-नमः! मंत्र पढकरके नमस्कार करो ! गंगाजल से सद्गुरु पूजन चरणामृतका पान करो ! सुप्रसन्न हो जाय एवम् श्रध्धाभक्तिसें सेवा करो ! आज्ञा पालन करो ! वेद, शास्त्र, योग विद्या, ब्रह्मविद्या उपदेश श्रवण करो ! ब्रह्म-धाम निर्वाण मोक्ष पद परं ब्रह्मको प्राप्त करो ! ॥ १५ ॥



अपने गृह मंदिरमें पधारे हुअे पूज्य पुरुषो, सगा, स्नेहि, मित्रो, ब्रह्मचारीयो, ब्रह्मनिष्ठ, विद्वान् , तपस्वो, ब्राह्मणो, सत्पु-

रुपो, अे सर्व अतिथि देव भगवान् परंब्रह्म-देवकी प्रत्यक्ष चेतन मूर्ति है! श्रध्धा भक्तिसे, तन, मन, धन, वाणीसे सप्रेम भोजन समर्पण करो स्वागत सन्मान सत्कार करो ॥ १५ ॥



हे सर्व स्त्री पुरुष, मनुष्यो ! पूज्य पवित्र पुरुषो के लिये ! और साधनरहित; निराधार मनुष्यो को भोजन देनेके लिये ! अन्नक्षेत्रो स्थापन करो ! अन्नदान देनेका सदाव्रत करो ! यात्रा प्रवास करनेवाले मनुष्य सर्व अतिथी देवोके लिये शांति विश्रान्ति देनेको श्रेष्ठ सुख व्यवस्था प्रबन्धवाली सुन्दर धर्मशाला धर्ममन्दिर देवालय

बनाओ ! सर्व मनुष्य मात्र को जल पिने-
का मीठा मधुर जलका कुवा वाव बनाओ !
ठंडा मीठा जल पिनेका परव प्याउ बेठाओ !
वेदवेदांग शास्त्र, और सर्व प्रकार की कला
विद्या पढनेको पाठशाला विद्याकेन्द्रो विश्व
विद्यालयो स्थापन करो ! सर्व स्त्री पुरुषो
मनुष्यो सुखरूप प्रवचन ज्ञान श्रवण करे
ऐसा महासभा स्थानो स्थापन करो !



जयहिन्द सनातन वेदधर्मका वेदशास्त्रो
के सत्य प्रमाण से उपदेश करनेवाला
उपदेशक ब्राह्मणोको आमन्त्रण करो ! वेद
धर्मका प्रचार करो ! जयहिन्द संस्कृतिका
सुरक्षण करो ! उपदेशक ब्राह्मणोका स्वागत

सन्मान भेट दक्षिणा वस्त्रालंकार भोजन समर्पण करो ! विद्यार्थीको भोजन वस्त्र ग्रन्थ साहित्य द्रव्य मिले ऐसा विद्यावृध्धि दान समर्पण करो !



सर्व मनुष्योका अंतरयामि आत्माको सुख शान्ति होनेको, रोग दुखनाशक औपधशालाओ स्थापन करो !



सर्व मनुष्य स्त्रि पुरुषो को विश्रान्तिके सुख शान्ति होनेको शीतल सुगन्धवाला पुष्प वृक्षका सुन्दर बाग उपवन बनाओ !



निराधार अनाथ स्त्री पुरुष बालको के लिये सर्व व्यवस्थावाला आश्रम बनाओ ! गौआ, बलद, सर्व पशुओंका पोषण रक्षण करो ! सर्व स्त्री पुरुषो वेद सदाचार सभ्यता स्वच्छता सुन्दरता शीखो, महा सत्कर्म करो ! ॥ १६ ॥



हे सर्व स्त्री पुरुषो मनुष्यो ! पाप कर्मको सदा त्याग करो ! कोईभी प्रकारकी चोरी करनेका त्याग करो ! कोईभी प्राणी हिंसा करनेका त्याग करो ! दारु पीना त्याग करो ! मांस भक्षण त्याग करो ! गांजा, भांग, अफीण, तमाकु, बीडी, हुका, चडस खाना पीना सुंघना मादक पदार्थ त्याग करो ! लसूण, प्याज, बासी, सडेल, तुच्छ,

उच्छीष्ठ, दुर्गन्ध, तामसी, अभक्ष्य पदार्थों खाना पीना त्याग करो ! सर्व दुष्ट व्यसन त्याग करो ! परस्त्री प्रसंग दुराचार मोह त्याग करो ! दुष्ट, पापी, दुराचारी, अधर्मी, नीच, शठ, कुटिल, कपटी, व्यसनी, शस्त्रधारी, अपरिचित, फिरन्दा मनुष्यका संग त्याग करो ! सट्टा, जुगार, वेश्या स्त्रीसंग त्याग करो ! पाखंडी मतपंथ अधर्म, पाखंड, निन्द्य कर्मका त्याग करो ! ॥ १७ ॥

जो हमारा जय हिन्द सनातन वेदधर्मका महान श्रेष्ठ उपदेश, श्रेष्ठ सद्गुण, श्रेष्ठ जीवन, चरित्र तत्वसार ग्रहण करो. उंच्च वर्तन वर्तो ! ॥ १८ ॥

जय हिन्द सनातन वेदधर्म विरूध्ध आचार, विचार. उच्चार, कल्पित धर्म, मत, पंथ, पाखंड, सदा त्याग करो ! ॥१९॥२॥



नो इतराणि ! ये के चास्मच्छ्रेयागुं सो ब्राह्मणाः । तेषां त्वयासने न प्रश्वसितव्यम्! श्रध्धया देयम् ! अश्रध्धया देयम् ! श्रिया देयम्! ह्रिया देयम् ! भिया देयम् ! संविदा देयम् ! अथ यदि ते कर्म विचिकित् सा वा वृत्त विचिकित् सा वा स्यात् ! ॥ ३ ॥



हमारा जय हिन्द सनातन वेद धर्मका उपदेशक, पृथ्वी के देव, सर्व तीर्थ स्वरूप, जंगमतीर्थ, चारो वर्णका सद्गुरु, श्रोत्रिय,

ब्रह्मनिष्ठ, तप विद्यासंपन्न, पूज्य वन्य, विद्वान् ब्राह्मणो है ! उनके आसन पर कोई भी स्त्री पुरुष बैठो नहि !



क्षत्रि, वैश्य, शूद्र, अे लोभ वासनासे ब्राह्मणका कल्पित वेष धारण न करो ! छल कपटसे पूज्य गुरु बनके पूजाओ नहि ! कोई भी प्रकारका दान लेना नहि ! ॥२०॥



सनातन जय हिन्द वेद धर्मका उपदेश करनेवाला, पालन करनेवाला, गृहस्थाश्रमी, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, वेदशास्त्रज्ञानी, परंब्रह्म-देवका ध्यान भजन करनेवाला, ओम्‌मन्त्र का गान करनेवाला, सर्वत्र व्यापक ब्रह्मका

अनुभव करनेवाला,श्रेष्ठ ब्राह्मणको समझो. उनका ज्ञान सुनो श्रध्धा भक्तिसे नमस्कार करो ! नित्य नैमित्तिक प्रसंग समये अन्न, वस्त्र, फुल, फल, जल द्रव्य सर्वे साहित्य ओं ब्रह्मार्पण भेट संप्रदान करो ! ॥ २१ ॥



वेद शास्त्र कि विधि विना, श्रध्धा प्रेम भक्ति विना अभावसे किया हुवा सर्वदान भेट निष्फल होता हे ! दान विधिसे करो, ब्रह्मार्पण करो, परब्रह्मका पद मोक्षको प्राप्त करो ! ॥ २२ ॥



हे सर्व जातिके स्त्री पुरुष ! सप्रेम उदार भावसे आप अपनि शक्ति प्रमाणे धन, द्रव्य,

श्री, लक्ष्मी, संपत्ति, विभूति सर्व साहित्य का श्रेष्ठ दान करो ! ॥ २३ ॥



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! दान करने में लज्जा आति हो, तब मानसिक दुर्बलताका त्याग करो, अंतर में उंच्च श्रध्धा प्रेम धारण करो, नित्य नैमित्तिक सर्व प्रकारका दान करो ! ॥ २४ ॥



हे भरतखंड आर्यावर्त जयहिन्दके मनुष्यो ! जय हिन्द सनातन वेद धर्मका उपदेश श्रवण करो, यज्ञ, दान, तप, पुण्य सत्कर्म साधन करो. ब्रह्मज्ञानको प्राप्त करो मनुष्य देह सार्थक करो ! ॥ २५ ॥



अे कर्मभूमि मृत्युलोक हे! हे सज्जनो! थोडा हि समय पिछे तुमारा शरीरका मरण होगा, तुमको जमपुरिमें जमराजके पास अपना किया हुवा शुभ अशुभ कर्मका जवाब देना पडेगा, पुण्य, दान, यज्ञ, तप, परमार्थ, सत्कर्म, नहि करोगे तब लक्ष चोराशीमें पशु, पक्षी, जड, चेतन, अपार झाड पहाडके देह धरना पडेगा अनंत कोटि कष्ट सहना पडेगा! सावधान हो! ब्राह्मण सुपात्रको श्रेष्ठ दान करो! ॥ २६ ॥



जय हिन्द सनातन वेद धर्मशास्त्रके आचार, विचार, उच्चार, कर्म क्रियामें, धर्म,

अधर्मका विचार में समज नहि पडे तव श्रोत्रिय,ब्रह्म-निष्ठ ब्राह्मण को पुछो, उनकी आज्ञानुसार स्वधर्मका पालन करो ! ॥२७॥



ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः ! युक्ता आयुक्ताः ! अलूक्षा धर्मकामाः स्युः ! यथा ते तत्र वर्तेरन् ! तथा तत्र वर्तेथाः ! अथाभ्याख्यातेषु ! ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः ! युक्ता आयुक्ताः ! अलूक्षा धर्मकामाः स्युः ! यथा ते तेषु वर्तेरन् ! तथा तेषु वर्तेथाः ! अेष आदेषः ! अेष उपदेशः ! अेषा वेदोपनिषत् ! अेतदनुशासनम् ! एव मुपासितव्यम् ! अेव मुच्चैतदुपास्यम् ! ॥ ४ ॥



कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरीय उपनिषत्, अेकादश अनुवाक्, शिक्षाध्याय प्रथमः प्रथमावल्ली प्रमाणम् ॥ १ ॥



श्रेष्ठ संयमी सदाचारी दृढ धर्मप्रेमी धर्मजिज्ञासु विचारशील ब्राह्मणो वह समय धर्मपालन करे वो धर्म तुम पालन करो !



हे सज्जनो ! हम सर्व प्रकारसें तुम सर्व को यह उपदेश करते है कि तुम सर्व विचारशील, महाश्रेष्ठ, सदाचार संपूर्ण, धर्मनिष्ठ ब्राह्मणो जैसा धर्मपालन करे वैसा धर्म तुम पालन करो ! ॥ २८ ॥



जयहिन्द सनातन वेदधर्मका और सनातन वेद धर्मोपदेशक, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, सद्‌गुरुदेवका हमारा तुम सर्वको अेहि आज्ञा है ! ॥ २९ ॥



अे हमारा जय हिन्द सनातन वेदधर्मका तुम सर्वको यह सत्य उपदेश हैं ! ॥ ३० ॥



अे जय हिन्द सनातन वेद्धर्नेका सार सिध्धान्त उपदेश है ! ॥ ३१ ॥



अे जयहिन्द सनातन वेदधर्मका तुम सर्वको वारंवार यह उपदेश करनेका है !॥३२॥



जय हिन्द सनातन वेद धर्मशास्त्र में कहा हुवा उपदेश को हि तुम सर्व पालन करो ! ॥ ३३ ॥



कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरीय, उपनिषद्, ब्रह्मविद्या, अनुवाक, अगियार, मन्त्रशिक्षा अध्याय, प्रथमः प्रथमावल्ली प्रमाणम् !!



!! ओं !! जयहिन्द ! कृष्ण यजुर्वेद सनातन वेद धर्म उपदेश मन्त्रशिक्षा अर्थदर्शन संपूर्णम् !!



ओं

!! ओं !! सनातन वेदधर्म आयुर्वेद उपदेश चरक शिक्षादर्शन !! ६६ !!



!! ओं !! तत् सद्वृत्त मखिलेनो पदेक्ष्यामः ! तद्यथाः—देव गो ब्राह्मण गुरुवृध्ध सिध्धाचार्यानर्चयेत् ! अग्निमुपाचरेत् ! ओपधीः प्रशस्ताधारयेत्! द्वौकालावुपस्पृशेत्! मलायतनेष्व भीक्षणं पादयोश्च वै मलयमादध्यात्!

त्रिपक्षस्य केशश्मश्रुलोम नखान् संहारयेत् ! नित्यमनुपहतवासाः सुमनाः सुगन्धिः स्यात् ! ॥ १ ॥

—: अर्थ :—

!! ओं !! !! ओं !! !! ओं !!

सर्व स्त्री पुरुष नपुंसक मनुष्य मात्रको जय हिन्द सनातन वेदधर्म, सदाचार वर्तन आयुर्वेदचरक शिक्षा दर्शनका हम उपदेश करते है !!

सूर्यदेव ! चन्द्रदेव ! अग्निदेव ! वायुदेव ! वरुणदेव ! ब्रह्मादेव ! विष्णुदेव ! महादेव !

जगदंबादेव ! परब्रह्मदेव ! सर्वदेवकी पूजा करो ! गौ माताको पूजा करो ! सर्वदेवो की मूर्तिस्वरूप, पृथ्वीके देव, वेदशास्त्र पढे हुवे तपस्वी, ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मज्ञानी, निर्व्यसनी, निर्विकारी, सदाचारी, सुपात्र, ब्राह्मणदेव का पूजन करो !



परंब्रह्मदेवका भजन करनेवाला, ओम्कार ब्रह्ममन्त्रका जप करनेवाला, गायत्रि ब्रह्ममन्त्रका जप करनेवाला, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, ध्यान योग तप, प्राणायाम तप, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या वेदान्त अद्वैत सिध्धान्तज्ञान विज्ञानवाला, धर्म, ब्रह्मका उपदेश करनेवाला, ब्रह्मण सद्गुरुदेवका पूजन करो !



माता ! पिता ! दादा ! वृध्धजनो ! पतिदेव ! अे सर्वका पूजन सन्मान सत्कार करो !



समर्थ ईश्वरी शक्तिवाला महान सिध्ध पुरुषोका पूजन सन्मान सत्कार करो !



विद्या पढानेवाला ब्राह्मणदेव, धर्मक्रिया करानेवाला गोर, शुक्ल, शास्त्री, याज्ञिक, अे सर्व वेदमूर्ति ब्राह्मणदेवनुं श्रध्धाभक्तिसे पूजन करो !

नित्य प्रातः मध्यान्ह, सायं त्रिकाल स्नान सन्ध्या करो !

मध्यान्ह समये पंच महायज्ञ होम वैश्वदेव यज्ञ करो !



नित्य प्रातःकाल सायंकाल अग्निमें होम अग्निहोत्र यज्ञ करो ! रुद्राक्षमणि, कुश, दर्भ, तिन पांखडीको त्रिशूल जैसी दुर्वा, बिलीपत्र, तुलसीपत्र, श्रेष्ठ औषधी, शरीर पर धारण करो ! सायं प्रातः दो समय शुध्ध जलसे स्नान करो ! आंख, कान, नाक मुख, बगल, नाभि, योनि, लिंग, गुदा, हाथ पग शरीर के सर्व अंग सदा शुध्ध पवित्र रखो !



पन्द्रह दिनमें तिन वार पांच पांच दिन में मस्तकके वाल, दाढीके वाल, मुंछके वाल, नाक, वगल, गुप्त अंगके वाल, हाथ, पग, पेट, सर्वे शरीरके छोटे कोमल वाल को शुध्ध करो ! शुध्ध भस्म जलमें भींजाओ वालों पर लगा ओ सुख जाय के तुर्त हाथकी चपटी से तोडदो, शुध्ध हो जायगा ! हाथ पांवकी अंगुलीके नख काट करके शुध्ध रखो, शरीरके वाल शुध्ध न करनेसे जु, जंतु, खुजली, दद्रु, कुष्ट रोग होगें ! शरीरे तेल लगा कर स्नान करो ! स्वच्छ, सुन्दर तेजस्वी कोमल देह होगा, अनुभव करो !



सदाकाल नित्य स्नान करो! सदा स्वच्छ सुन्दर वस्त्र धारण करो! मनमां सदा हिंमत, धैर्य, शौर्य, उत्साह, विवेक, ज्ञान, विचार,आनंदकी वृध्धि करो, सदा प्रसन्न रहो.



मस्तकके केशमें सुगन्धी तेल लगावो! गुलाव, मोगरो, हीनो, खस, चंबेली, कमल, असे सुगन्धी अत्तरो शरीरमें लगाओ।



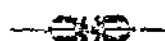
सुखड चन्दन घीस करके केसर, कस्तुरी, कपूर, कपूरकाचली, सुगन्धी अत्तरोसे मोश्रीत कर के ललाट में सुन्दर शोभारूप चन्दन अर्चा करो!



गुलाब कमल, मोगरा, चंपा, हजारी, असा सुगन्धी पुष्पोका माला कंठमें धारण करो ! ॥ १ ॥



सर्व स्त्री पुरुष मनुष्य मात्रको अपना जाती, वर्ण, आश्रम, धर्म, कर्म, विद्या, अवस्था, देश, काल, समय में सुन्दर सुशोभित, वस्त्र, अलंकार, शणगार, धारण करो ! अपना देह देवलको तेजस्वी रूपवान् शोभायमान् करो !



!! ब्रह्मधुन !!

!!ओं!! सत् चित् आनंद सुखकंद,
जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म ॥ १ ॥

हे सर्व स्त्री पुरुषो ! अपने मस्तकमें केश में सुगन्धी तेल लगाओ ! कंगासे मस्तक के केश शुध्ध स्वच्छ करो !



हे कुमारी, सौभाग्यवती, स्त्री देवीओ ! अपने मस्तक की केश वेणी सुन्दर घाटसे गुंथनकलासे चंपा, मोगरा, हजारी, गुलाब, पुष्पोसें सुगन्धीत गुंथन करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! अपना सर्व शरीरपर मस्तकमें मस्तकके केशमें, ललाट, आंख, कान, नाक, मुख उपर, पांव उपर, हाथ पर,

सर्व देह उपर नित्य प्रातःकालमें स्नान पहेले शुध्ध तिल तेलका मर्दन करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! सायंकाल प्रातःकाल सदा अपना निवासस्थानमें सुखड, चन्दन, घीवाला गुगल, धूप, सुगन्धो पदार्थ ! ! ओं स्वाहा ! मंत्र पढ करके अग्निमें धूप करो! वह धूपको सुगन्ध लो !



सर्व स्त्री पुरुष ! परस्परमें मिलत्ते समय प्रिय मधुर आनंदकारी वचन बोलो! अपने मन, नेत्र, मुख, आनंदमय करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! निराधार अनाथ, दुखी मनुष्योका रक्षण करो ! सर्व प्रकारे सहाय करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो । सदा अग्निमें होम करते रहो ! गौका घी, दहि, दुधका होम करो, गौका घीवाला चावल, भात, गौके दुधमें चावल डालके परिपक्व बनाया हुवा क्षीर, घीवाला गुलावपुष्प, कमलपुष्प हजारीपुष्पो ! बोलीफल, पत्र; तुलसी—वैजयन्तिपत्र, सर्व फल, पुष्प, पत्र, साहित्यसे अग्निमें ! ! ओ स्वाहा ! मन्त्र पढ करके पांच, ग्यारा, अेकीस, अेकसोआठ, यथारूची अग्निमें आहुति होम करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! नित्य नैमेत्तिक यज्ञ होमसे देवोका यजन पूजन करो ! भूमिमें चोखंडा यज्ञकुंड करो वेदी करो, परब्रह्मदेव ब्रह्मादेव, विष्णुदेव, महादेव, गणपतिदेव, जगदंबा, सूर्यदेव, नवग्रहदेव सर्वदेवका ध्यानकरके! ओं स्वाहा! मंत्र पढ करके घी, फल, पुष्प, जो मिले उससे अग्निमें आहुति होम करो, मनमें जिस देवो देवता-ओका ध्यान धरके अग्निमें होम करता है वह देवताओको पहुंचता हे !



हे सर्व स्त्री पुरुषो ! तुम सदाकाल नित्य दान करते रहो! नैमित्तिक दान करते रहो ! पूर्णिमा, अमावास्या, पितृपर्व व्यतिपात, महायोग, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पुण्यपर्व, समय, पुत्र, पुत्रि जन्मसमय,

क्षेत्रके खलामें, जनोई, लग्न में, महापुण्य पर्व योगमें धर्मनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ, श्रेष्ठजंगम तीर्थमूर्ति, पृथ्वीके देव, गुरु, सत्पात्र ब्राह्मणको सन्मान करके सप्रेम सर्वोत्तम सत्कारसे दान करो !



अन्नराज घेहुं, चावल, जव, मुंग, चना अन्नदान ! आम, केला, अनार, द्राक्ष, बादाम, खारेक, फलदान ! रेशम, गरम, उनी, सुतर, के वस्त्रदान! धनदान, सुवर्ण दान, सुख शय्या दान, गृहदान, भूमिदान, गज, अश्व, रथदान, मणि, मोती, हीरा, माणेक, मृगचर्म, सर्व सुख साहित्यदान, सर्वस्वदान ! ज---में, मनमें, दान संकल्प

करो! सत्पात्र विप्रको ! ओं ब्रह्मार्पण ! भेट सम्प्रदान करो !



हे सर्व स्त्री पुरुषो मनुष्यो ! मार्गमें चलते चार रस्ता आये वह भूमिको नमस्कारसे वन्दन पूजन करके आगे चलो !



हे सर्व मनुष्य स्त्री पुरुषो ! तुम भोजन समयमें अपना भोजन करनेका भोजन पात्रको चारो तरफ जलधारा करो ! ओम् ! मन्त्र पढकरके भोजन पात्र पर जल प्रोक्षण करो ! अपना भोजन पात्र के सामने ! ओं भूपतये नमः ! ओं भुवन पतये नमः !

क्षेत्रके खलामें, जनोई, लग्न में, महापुण्य पर्व योगमें धर्मनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ, श्रेष्ठजंगम तीर्थमूर्ति, पृथ्वीके देव, गुरु, सत्पात्र ब्राह्मणको सन्मान करके सप्रेम सर्वोत्तम सत्कारसे दान करो !



अन्नराज घेहुं, चावल, जव, मुंग, चना अन्नदान ! आम, केला, अनार, द्राक्ष, बादाम, खारेक, फलदान ! रेशम, गरम, उनी, सुतर, के वस्त्रदान! धनदान, सुवर्ण दान, सुख शय्या दान, गृहदान, भूमिदान, गज, अश्व, रथदान, मणि, मोती, हीरा, माणेक, मृगचर्म, सर्व सुख साहित्यदान, सर्वस्वदान ! जलसें, मनसें, दान संकल्प

नित्य पंच महायज्ञ वैश्वदेवमें ! ओं! पितृभ्यः स्वधानमः! अे मंत्र पढके अंगुष्ट तर्जनी अंगूलीके मध्यसे पितृ तीर्थसे भातका अेक पिंड पृथ्वीपर दक्षिण दिशामें धरो ! देवऋपि पितृतर्पण करो ! पितृपव अमावास्याको विद्‌वान् विप्रको आमंत्रण करो! श्राध्ध पितृयज्ञ करो ! सर्व कर्म। ओं ब्रह्मार्पण करो ! प्रिय, मधुर, थोडा हितकारी वचन बोलो ! मन, बुध्धि, देह, सर्व इन्द्रियोको स्थिर संयमी करो !



जय हिन्द सनातन वेद्‌धर्म पालन करो ! सर्व कर्तव्य कार्य ! ओं ब्रह्मार्पण करो !



! ओं भूतानां पतये नमः ! ये तीन मन्त्र बोलो तीन बली रखो ! जल हाथमें लेकर ! ओम्- स्वाहा ! मंत्र पढो, एक आचमन करो ! सुख से संपूर्ण भोजन करो ! भोजन करके पीछे ! ओं स्वाहा ! मंत्र पढो, जल से अेक आचमन करो ! ओं ब्रह्मार्पणम् !

हे सर्व स्त्री पुरुष मनुष्यो ! अपने गृह मन्दिरमें पधारे हुये पूज्य वन्दय ब्राह्मणो ! महापुरुषो ! दादा, पिता, माता, पतिदेव, मामा, चाचा, अतिथि देव, महंत, सिध्ध, योगी सर्वका सप्रेम मन वाणी कायासे सर्व प्रकार से मधुरता विनय विवेकसे सन्मान स्वागत सत्कार करो !

नित्य पंच महायज्ञ वैश्वदेवमें ! ओं! पितृभ्यः स्वधानमः! अे मंत्र पढके अंगुष्ट तर्जनी अंगूलीके मध्यसे पितृ तीर्थसे भातका अेक पिंड पृथ्वीपर दक्षिण दिशामें धरो ! देवऋपि पितृतर्पण करो ! पितृपव अमावास्याको विद्वान् विप्रको आमंत्रण करो! श्राध्ध पितृयज्ञ करो ! सर्व कर्म। ओं ब्रह्मार्पण करो ! प्रिय, मधुर, थोडा हितकारी वचन वोलो ! मन, बुध्धि, देह, सर्व इन्द्रियोको स्थिर संयमी करो !



जय हिन्द सनातन वेद्धर्म पालन करो ! सर्व कर्तव्य कार्य ! ओं ब्रह्मार्पण करो !



फल ईच्छावाला काम्य कर्मका सदा त्याग करो ! भविष्यका सुख दुखकी चिन्ता नहि करो! सर्व प्रकारका भयसें तुम निर्भय बनो! सार असार विचार करनेमें विवेकी रहो ! पाप कर्म करनेमें लज्जावान् रहो ! शुभ सत्कार्य करनेमें आनंदी उत्साही रहो !



सर्व कार्य करनेमें चतुर चेतनकार्य कुशल बनो !



सुख दुखमें सहनशील रहो ! धैर्य धरो! धर्म सत्कर्म पुण्यदान करनेमें प्रयत्न पुरु-पार्थ करो !



अनुभवी वृध्ध, सिध्ध पुरुषोकी पूजा सेवा करो !



जयहिन्द सनातन वेदधर्मोपदेशक सद्‌गुरु ब्राह्मणदेवकी श्रध्धा भक्तिसे सेवा पूजा करो !



सूर्य देव के तापमें, बरखामें, मस्तक पर छत्री धारण करके चलो !



मार्ग में चलते समय हाथमें दंड रखो मस्तक पर मंडील बांधो !



मार्ग में सदा पांव में जुता पहेरके चलो ! मार्ग में चलते समय चार हाथ लम्बी नजर से देखके चलो !



अपने शरीरमें स्वच्छता, सुंदरता, सभ्यता, की वृध्धि करो !



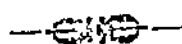
ललाट भालमें सुगन्धीदार केशरी चन्दन की अर्चा करो ! कुंकुं तिलक चांदलो करो ! आनंद मंगल श्रेष्ठ वस्त्र, सुन्दर शणघार, शरीर पर धारण करो ! श्रेष्ठ स्वभाववाला, सुंदर मुखवाला, सदा आनंदमें रहो !



मलीन, पुराने, जीर्ण, पतला, फटा, टुटा, सांधा, काटा, दुसरेका धारण किया हुवा अैसा अमंगल वस्त्र, शरीरमें धारण न करो !



जिस स्थलमें हड्डी पडा हो, कांटा पडा हो, मल, मूत्र, मांस, लोहि पडा हो, पशु; पक्षी मरेला हो, खोपरी, छीलका पडा हो !



भूत, प्रेत, राक्षस के वलिदान रखे हो, मलीन, रोगी मनुष्य स्नान करता हो, महा दुर्गन्ध आती हो वहां न जाओ !



व्यायाम कसरत करनेसे श्वास चढे थाक लगे व्यायाम तुर्त हि वन्ध करो। सर्व प्राणि मनुष्य पर भाई जैसा प्रेम करो। क्रोधी मनुष्यको विवेक विनय नम्रतासे शान्त करो ! भयभीत मनुष्यको धीरज, रक्षण शान्ति दो !



अपना सत्य निश्चय प्रतिज्ञा करो! ज्ञानी शान्त गुणी बनो! दुसरेके दुष्ट वचन सहन करो! क्रोधका त्याग करो! शान्त सद्गुणि मनुष्यमें प्रेमभाव धरो! जिस कार्यमें द्वेप और मोह प्रगटे उनका त्याग करो! ॥२॥



साधुवेशः! प्रसाधित केशो! मूर्ध, श्रोत्र, घ्राण, पाद, तैल नित्यो! धूमपः! पूर्वाभिभापी! सुमुखो! दुर्गेष्वभ्युपपत्ता! होता! यष्टा! दाता! चतुष्पथानां नमस्कर्ता! वलीनामुपहर्ता! अतिथीनां पूजकः! पितृभ्यः पिंडदः! काले, हित, मित, मधुरार्थवादी! वश्यात्मा! धर्मात्मा! हेतावीर्षुः! फलेनेर्षुः! निश्चिन्तो! निर्भीको! धीमान्!

ह्रीमान् ! महोत्साहो ! दक्षः ! क्षमावान् ! धार्मिकः । आस्तिको ! विनयबुध्धि ! विद्याभिजन! वयोवृध्ध सिध्धाचार्याणामुपासिता! छत्री ! दंडी ! मौली ! सोपानत्को ! युगमात्रदृग् विचरेत् ! मंगलाचार शीलः ! कुचेलास्थि कंटकामेध्य केशतुपोत्कर भस्म कपालस्नान वलि भूमिनां परिहर्ता ! प्राकश्रमाद् व्यायाम वर्जिस्यात् ! सर्वप्राणिषु वन्धुभूतः स्यात् ! क्रुध्धानामनुनेता ! भीतानामाश्वासयिता ! दीनानामभ्युपपत्ता ! सत्य सन्धः ! सामप्रधानः ! परपरुष वचन सहिष्णुः ! अमर्षघ्नः ! प्रशमगुणदर्शी ! रागद्वेषहेतूनां हन्ता ! ॥ २ ॥



नानृतंब्रूयात्!नान्यस्वमादद्यात्! नान्यस्त्रियमभिलषेत्! नान्यश्रियम्! नवैरं रोचयेत्! न कुर्यात् पापम्! न पापेपी पापिस्यात्! नान्यदोषान् ब्रूयात्! नान्यरहस्यमागमयेत्! नाधार्मिकै नं नरेन्द्र द्विष्टैः सहासीत! नोन्मत्तै नं पतितै नं भ्रूणहन्तृभिनंक्षुद्रे नं दुष्टैः न दुष्ट यानान्यारोहेत्! न जानु समं कठिनमासनमध्यासीत! नानास्तीर्ण मनुपहितमविशाल मसमं वा शयनं प्रपद्येत! न गिरि विषम मस्तकेष्वनुचरेत्! न द्रुममारोहेत्! न जलोग्रवेगमवगाहेत! कूलच्छायां नोपासीत! नाग्न्युत्पातमभितश्चरेत्!

नोच्चैर्हसेत् । न शब्दवन्तं मारुतं मुंचेत्। नासंवृत्तमुखो जृंभांक्षवथुं हास्यं वा प्रवर्तयेत्। न नासिकां कुष्णीयात् । न दन्तान् विघट्टयेत् । न नखान् वादयेत् । नास्थीन्यभिहन्यात् । न भूमिं विलिखेत् । न छिन्द्यात् तृणम् । न लोष्ट्रम् मृदगीयात् । न विगुणमंगैश्चेष्टेत । ज्योतींष्यनिष्ट ममेध्य मशस्तं च नाभिवीक्षेत । न हुं कुर्याच्छवं । न चैत्यध्वज गुरु पूज्या शस्तच्छायामाक्रामेत् । न क्षपास्वमरसदन चैत्य चत्वर चतुष्पथोपवनश्मशानाघातनान्यासेवेत । नैकः शून्यगृहं न चाटवी मनुप्रविशेत् । न पाप वृत्तान् स्त्री मित्र भृत्यान् भजेत । नोत्तमैर्विरुध्येत । नावरानुपासीत । न जिह्मं रोचयेत । नाना-

र्यामाश्रयेत् ! न भयमुत्पादयेत् ! न साह-
सातिस्वप्नप्रजागरस्नान पाना शना न्यासे-
वेत ! नोर्ध्वजानुश्चिरं तिष्ठेत् ! न व्याला-
नुपसर्पेन् । न दंष्ट्रिणो न विषाणिनः ! पुरो
वाता तपावश्यायातिप्रवातान् जह्यात् !
कलिंनारभेत ! नासुनिभृतोग्नि मुपासीत !
नोच्छिष्टोनाधः कृत्वाप्रतापयेत् ! नाविगत-
क्लमो नानाप्लुतवदनो न नग्न उपस्पृशेत्!
न स्नान शाट्या स्पृश्यत एव वाससी विभृ-
यात् ! नास्पृष्ट्वा रत्नाज्यपूज्यमंगल सुमन-
शोभिनिष्क्रामेत् ! न पूज्य मंगलान्यपसव्यं
गच्छेन्! नेतराण्यनुदक्षिणम् ! ॥ ३ ॥

असत्य बोलो नहि ! दुसरेका धन पदार्थ लेने की ईच्छा करो नहि !

परपुरुषोको स्त्रीयोका संसर्ग सुख प्रसंग ईच्छा करो नहि !

परधन लक्ष्मी की ईच्छा करो नहि !

कोई भी मनुष्यकी साथ वैर करो नहि! मन वाणि काया से पाप करो नहि ! पापी का परवश प्रसंग हो तो भि पाप करो नहि ! दुसरा मनुष्यको दुसरेका दोष कहो नहि ! कोई मनुष्यकी गुप्त वात किसीको कहो नहि !

· जयहिन्द सनातन वेदधर्मका उपदेश पालन न करे अैसे अधर्मी मनुष्यके साथ बैठो नहि! राजा महाराजाके विरोधी द्वेषी, शत्रुलोकके साथ बैठो नहि !

—⊜⊜—

गांडा, पागल, मनुष्यकी साथ बैठो नहि !

—⊜⊜—

जयहिन्द सनातन वेदधर्म वर्णाश्रम धर्म कर्म से भ्रष्ट पतित की साथ बैठो नहि !

—⊜⊜—

गर्भहत्या करनेवाला, बालहत्या करने-वाला, मनुष्योके साथ बैठो नहि !

—⊜⊜—

अपनेसे नीच जातिका नीच स्वभावका नीच आचार, विचार, उच्चारवाला, पाप

कर्म करने वाला मनुष्यका संग में रहो नहि !



जो दुष्ट वाहन गाडी, रथ, एका, और चलानेवाला मुर्ख अज्ञान हो, और वलद, घोडा, हाथी, उंट, काटनेवाला, मदोन्मत्त, व्याकुल हो असे वाहनमें वैठो नहि !



पांवसे चढनेमें कठीन हो असा उंचा आसनमें चढो नहि वैठो नहि !



सोनेका सुख शय्या पलंग, खाट, पाट, जीर्ण, टुटा, उंचा, नीचा, टेढा, विछाना हो, ओसीका, न हो, उसमें सोना वैठके आराम लेना नहि !



पहाड, पर्वत, डुंगर उपरके शिखरपर उंचे निचे फिरो नहि ! वृक्ष पर चढो नहि !



तीव्र वेग प्रवाहवाली नदीमें अन्दर उतरके स्नान करो नहि !



नदीके किनारापर पासमें और छायामें बैठो नहि !



जहां अग्निज्वाला जल रही हो वहां चारे तरफ फिरो नहि!



जोरसे वडे स्वरसें हसो नहि !



वडा घुर घुर शब्द बोले असा वायु मुखसे निकालो नहि ! परड परड शब्द बोले असा अपान वायु नीचे पुंछसे निकालो नहि !



निद्रामें हरड घरड शब्द करे असा भयानक वायु नाकसे निकालो नहि !



मुख उपर वस्त्र लगाअे विना वगासा छींक करो नहि !



कोई भी मनुष्य देखे वहां नाकमें अंगुली लगाके खोतरना मसलना नहि !



रातको और दिनको सोते समय अपने मुखके दांतको विचित्र भयानक करड करड शब्द करो नहि ! दांतको दांतसे लगाके पीसो नहि ! बजाओ नहि ! दांतको खोतरो नहि ! शरीरकी हड्डीको बजाओ नहि, काटो नहि ! पांवके अंगुठासे, हाथके नखोंसे, लकडीसे, भूमि खोदो नहि ! भूमिपर भिंतपर रेखालीटा करो नहि !



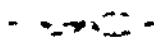
हाथके नखसें, दांतसें मिट्टि तोडो नहि ! घास, तृण, नखसें, दांतसे, तोडो नहि ! अपने शरीर के अंग, आंख, नेत्र, मुख, होठ हाथ, पीठ, पुंछ, पांव सर्व अंगसे विचित्र, विकारी, चेष्टा करो नहि !



अति चमकवाली विजली आकाशमें देखो नहि ! अति सूर्यका प्रकाश आकाश में देखो नहि ! अग्निकी प्रचंड ज्वालाको देखो नहि !



दुष्ट दुर्गन्धवाला मांस, लोही, परु, मल, मूत्र, मरे हुअे मच्छी, जीव, अप्रिय, मनको व्याकुल करनेवाले पदार्थको देखो नहि !



रक्तपित्त कोड रोगवाला, भयानक वेशवाला, भयानक शस्त्रवाला, विचित्र जादुवाला, मनुष्योको देखो नहि, उनके पासमें संगमें वैठो नहि !



मुरदा को देखके दुर्भावसें हुंकार शब्द विचित्र मुख चेष्टा करो नहि !



शमशान वृक्षकी छाया, ध्वजाकी छाया सद्गुरुकी छाया, पुज्य पुरुषोकी छाया, अपरिचित मनुष्योकी छाया उलंघो नहि!



रात्रिके समय कोईभि देव देवीके प्रतिमा मूर्ति स्थापन करे हुअे स्थान मंदिरमें जाओ नहि !



शमशान भूमिके वृक्ष नीचे रातको जाओ नहि ! गामके चकला में रातको फिरनेको

जाओ नहि! चार रस्ताओके मार्गमें रातको जाओ नहि !



वाग वगीचा में उपवनमें रातको फिरने को जाओ नहि !



जो स्थानमें स्त्री पुरुप मनुष्य पशु पक्षी का वध होता है, तीक्ष्ण शस्त्रोसे और शूलो फांसीसे मनुष्यका नाश होता है, वहां रात को फिरनेको जाओ नहि !



जहां कोइ मनुष्य नहि है, अैसा शुन शुनाकार स्थानमें, धाममें, हवेली, महेल,

बंगलामें शुना मार्गमें, गलीमें, रातको फिरनेको जाओ नहि !



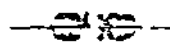
पाप कर्म करनेवाली जारणी. दुराचारणी, कुलटा, वेश्या स्त्रीका संग प्रसंग करो नहि!



पापकर्म करनेवाला स्त्री पुरुषको सेवक नोकर बना कर सेवा कराओ नहि ! पापी मनुष्यको मित्र करो नहि ! अच्छे स्त्रीपुरुष के साथ विरोध, वैर, द्वेष, ईर्षा, क्लेश करो नहि !



अपनेसे जातिमें स्वभावमें नीच स्त्री पुरुषका संग करो नहि !



छल कपटी मनुष्यका संग करो नहि ! सर्व स्त्री पुरुष मनुष्यो ! छल कपट कोईभी कार्य में करो नहि !

अनार्य–आसुरी स्वभावका तामसी यवन म्लेच्छ, विश्वासघाती, छलकपटी, निर्दय मनुष्यका, संग करो नहि ! विश्वास करो नहि !

कोईभी स्त्री पुरुष मनुष्यको भय होजाय असा कार्य करो नहि ! विचार किअे विना अति साहस कार्य करो नहि ! अति निद्रा करो नहि ! अति जागरण करो नहि ! अति स्नान करो नहि ! अति जल पीओ नहि !

अति भोजन करो जीमो नहि ! खडा पांव से अति समय बैठो नहि! साप, अजगर, झेरो प्राणो, उनके पासमें जाओ नहि ! सिंह, वाघ, चित्ता, नहार, रींछ, भालु, वडे दांत वाले, वडे नखवाले, वडे शिंगवाले, जंगला कुत्ता, मांकडा, वन्दरा, विलाडा, तीक्ष्ण शिहोरीवाला शाहवडो, साभर, असे भयंकर प्राणियोको चिडावो नहि, सताओ नहि, उनके पास जाओ नहि !



शींगडावाला गाय, वलद, भेंस, पाडा, नन्दोया, साभरसिंग, हरण, मृग, वकरा, अे सर्वको सतावो नहि, संग करो नहि !



जिस दिशासें तुम्हारा सामने वंटोळ वायु, धुमाडावाला वायु, धुमसूवाला वायु धुल उडानेवाला वायु, महावेगवाला प्रचंड वायु, सूर्यदेवका महाताप प्रकाश, आता हो वो दिशा तरफ जाओ नहि !

—:o:—

क्लेश, क्रोध, करो नहि ! योगविद्याके अभ्यास करनेवाले स्त्री पुरुषो, अग्नि समिप न रहो !

—:o:—

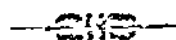
उच्छिष्ट हो मलीन हो तब अग्निदेवकी पूजा करो नहि ! अपना शरीरके पांव नीचे अग्नि धरके तापो नहि !

—:o:—

अति परिश्रमवाला शरीरसे स्नान करो नहि ! मुख धोये विना स्नान करो नहि ! वस्त्र धारण किये विना स्नान करो नहि ! कमरके उपरके भागमें मस्तकके श्रेष्ठ अंगोमें स्नान करनेसे भींजा हुवा साडी,और धोती से शरीर को शुध्ध करो नहि ! मस्तकके केश पटको, फटको, जटको, नहि !



रत्न, घी, पूज्य गुरुओ, सौभाग्यवती-स्त्रीदेवी,घीका दीवा,कुम् कुम् ,चन्दन, श्रीफल दहीं, कमलपुष्प,गुलावपुष्प, चंपापुष्प, मोगरापुष्प,हजारी गोटापुष्प, सुगन्धि पुष्पो, दुर्वा,ओ सर्वका स्पर्श करके हि वहार जाओ! पूज्य मंगल पदार्थ दहिनि वाजु करके और सर्व वाम वाजु करके वहार जाओ! ॥ ३ ॥



नारत्नपाणि! नास्नातो! नोपहतवासा! ना जपित्वा! ना हुत्वा! देवताभ्यो! ना निरूप्य पितृभ्यो! ना दत्वा गुरुभ्यो! ना तिथिभ्यो! नोपाश्रितेभ्यो! ना पुण्यगन्धो! ना माली! ना प्रक्षालितपाणिपादवदनो! ना शुध्धमुखो! नोद्नं मुखं न विमना! ना भक्ताशिष्टा शुचिक्षुधित परिचरो! नपात्रीष्वमेध्यासु! ना देशे! नाकाले! नाकीर्णे ना दत्वाग्नमग्नये! ना प्रोक्षितं! प्रोक्षणोदकेर्न मन्त्रै रनभिमन्त्रितं! न कुत्सयन्! न कुत्सितं! न प्रतिकूलोपहितमन्नमाददीत! न पर्युपित! मन्यमन्नमांस हरितक शुष्क शाकफलभक्षेभ्यः! नाशेप भुक्त्स्यादन्यत्र दधि मधुलवण शक्तु सर्पिभ्यः। न नक्तंदधि

भुंजीत ! न शक्तू ! नेकानश्नीयात् ! न निशि ! न भुक्त्वा न बहून् ! न द्वि ! नोंदकान्तरितान् ! न छित्वा द्विजैर्भक्षयेत् ! ॥ ४ ॥

—: अर्थ :—

हे सर्व स्त्री पुरुषो ! स्नान करो ! सुन्दर वस्त्र धारण करो ! हाथमें रत्न अलंकार धारण करो ! त्रिकाल सन्ध्या करो ! गायत्रि ब्रह्ममन्त्र जप करो ! ओम्कार ब्रह्ममन्त्र जप करो ! वेदमन्त्रोसे सर्व देवताओको अग्नि में आहुति आपो ! अग्निहोत्र करो ! पंच महायज्ञ वैश्वदेव करो ! देवऋषि पितृ तर्पण करो ! माता, पिता, पति, वृध्धो, सद्गुरुदेव, अतिथीदेव, शिष्यो, सेवको,

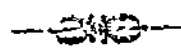
सर्वको भोजन करायार पिछे भोजन करो ! पवित्र सुगन्धी अत्तरो शरीरे लगावो ! केशरीया सुगन्धी सुखड चन्दन ललाटे धारण करो ! कुम् कुम् मंगल चांल्लो करो ! सुवर्णमाला, रत्नमाला, स्फटिकमणिमाला, हीरामाला, मोतीमाला, प्रवालमणिमाला, माणेकमाला, रुद्राक्षमाला, सुन्दर सुगन्धीदार गुलाबपुष्पमाला, कमल पुष्पमाला, मोगरापुष्पमाला, चंपा पुष्पमाला, हजारी गोटापुष्पमाला, वैजयन्ति–तुलसीपत्रमाला, धारण करी भोजनकरो !

— : ब्रह्मधुन : —

!!ॐ!! सत् चित् आनंद सुखकंद,

जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म ॥ १ ॥

शुध्ध जलसें दो हाथ, दो पग, मुख, धोकर पवित्र करो, पिछे भोजन करो !



उत्तर दिशामें मुख करके भोजन करो- नहि, उद्वेग, उदास, चिन्तातुर, व्याकुल, मनसें भोजन करो नहि, प्रेमरहित, दुष्ट मनुष्यका अपवित्र अन्न जिमो नहि !



भूखसें व्याकुल हुवा सेवकका हाथका भोजन करो नहि !

अपवित्र पात्रमें भोजन करो नहि !



अपवित्र स्थानमें भोजन करो नहि !



समय विना, सन्ध्याकाले, अनेक वस्तु मार्ग में गिरा हो वहां भोजन करो नहि! अग्निमें होम कर्या विना जिमो नहि !



पवित्र जलसे प्रोक्षण कर्या विना, वेदमन्त्रो पढे विना भोजन करो नहि. अशुध्ध अयोग्य, भोजन करो नहि, अन्न तिरस्कार करके जिमो नहि, अपने शरीरको जो कूपथ्य ऐसा भोजन करो नहि !



अपने शरीर को हितकारी, पथ्य भोजन करो, रात्रिका वाशी भोजन न करो, रस-हिन शाक, फल, शुष्क जिमो नहि, भोजन में दही, सहत मध, मिष्टान्न सत्तु, घी, सर्व

जिम जाओ ! भोजनमें और सर्व पदार्थ थोडा थोडा रहने दो, रातको दहीं जिमो नहि, केवल शुष्क सत्तु जिमो नहि !



रातको वहु भोजन करो नहि, दो वार भोजन करो नहि, भोजन करके ज्यादा जल पीओ नहि, ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्यो! खानेका हाथमें ले कर बंदरके जैसा दांतसें तोड, तोड, काट, काट, के खाओ नहि ! ॥ ४ ॥



नानृजुः क्षुयात् ! नाद्यान् न शयीत । न वेगितोन्यकार्यः स्यात् ! न वाय्यग्नि सलिल सोमार्क द्विज गुरु प्रति मुखं निष्टीविकावात वर्चो मूत्राण्युत् सृजेत् ! न पन्था-

नमवमूत्रयेत् ! न जनवति नाम्नकाले न जप होमाध्ययन वलि मंगलक्रियासुश्लेष्म सिन्धाणकं मुंचेत् ! ॥ ५ ॥



— : अर्थ : —



टेढा होकर छींको नहि ! टेढा होकर भोजन करो नहि ! टेढा होकर सो जाओ नहि ! शरीरकी सर्व इन्द्रियोका वेगको रोक-कर कोई कार्य करो नहि ! वायु, अग्नि, जल, चन्द्र, सूर्य, ब्राह्मण, पूज्य, गुरु अे सर्व सामने थूंको नहि, अपान वायु छोडो-नहि, वीर्य, मल, मूत्र, नाक, शुध्धि करो-नहि, मार्गके विचमें मल मूत्र त्याग करो-

नहि, जहां मनुष्यो देखे वहां मळमूत्र त्याग करनेको बैठो नहि !



भोजन समयमें, अग्निहोम समयमें, देवपूजन समयमें, मन्त्रजाप जपते समयमें, विद्या पढते समयमें;स्वाध्याय करते समयमें सर्व देव वलीदान पूजन समय में मंगलकार्य करते समयमें, थुंको नहि, नाक शुध्धि कार्य करो नहि ! ॥ ५ ॥



न स्त्रियमवजानीत ! नातिविश्रंभयेत् ! न गुह्यमनुश्रावयेत् ! नाधि कुर्यात् ! न रजस्वलां ! नातुरां ! नामेध्यां नाशस्तां ! नानिष्टरूपाचारोपचारां ! ना दक्षां !

नादक्षिणां ! नाकामां ! नान्यकामां ! नान्यस्त्रियं! नान्ययोनिं नायोनौ ! न चैत्य, चत्वर, चतुष्पथो, पवन, श्मशानाघातन, सलिलौषधि, द्विज, गुरु, सुरालयेषु, न सन्ध्ययोः! नातिथिषु ! नाशुचि ! नाजग्ध भेषजो ! नाप्रणित संकल्पो ! नानुपस्थित प्रहर्षो ! नाभुक्तवान् ! नात्यशितो ! न विषमस्थो ! न मूत्रोच्चार पाडितो ! न श्रम व्यायामोपवासक्लमाभिहतो ! नारहसिव्यवायं गच्छेत् ! ॥ ६ ॥

— : अर्थ : —

स्त्रीयोका अपमान करो नहि !

स्त्रीयोका अति विश्वास करो नहि, स्त्रीयोको गुप्त वात करो नहि, स्त्रीयोको सर्व कार्यका संपूर्ण स्वतंत्र अधिकार देना नहि !



स्त्रीयों रजस्वला हो, रोगी हो, अपवित्र हो, उदास चित्त अभाववाली हो, शरीरे काली के कद्रूपी हो, दुष्टचरित्र, दुराचारी हो, मुर्ख और गांडपण हो, प्रेमकी इच्छावाली न हो, असो स्त्रीका संग प्रेम प्रसंग करो नहि ! स्त्रीको द्रव्य भेट दिअे विना पुरुषोअे स्त्रीयोका प्रेम संग प्रसंग करो नहि !



जो स्त्री, परपुरुषकी प्रेमी हो, उसका

संग करो नहि, पशु जातिकी स्त्री (गाय, भैंस, घोडी, श्वान कुत्ती) साथ संग करो नहि। स्त्री विना, पुरुषकी साथ (गुदाभंजन, हाथ मुष्टोरस) और रवडके बनावटी स्त्री पुरुषो के साथ बनावटी नकली साधनो से रती क्रीडा रमो नहि !

—❀—

शमशान वृक्षके नीचे ! चकलामें चार रस्तामें! बाग, बगीचेमें! प्राणीयोका वधस्थानमें ! जलमें ! जलमें चलते नावमें! औषधीयो के स्थानमें ! ब्राह्मणके स्थानमें ! गुरुजीके धाममें ! देवमूर्ति प्रतिमा स्थानमें ! सवेर, सांज, मध्यान्ह, त्रिकाल संन्ध्याकालमें ! सूर्य, चन्द्रग्रहण समयमें ! तिथिक्षय दिवसे!

अमावास्यादिवसे ! अपवित्र स्थानमें ! अपवित्र शरीरे ! स्त्री पुरुषो कामसुख रतीक्रीडा रमो नहि !



सुंठ, मरी, पीपर, खारेक, जायफल, जावंत्री, तेजस्वी औषधि, घी, साँकर, वदाम, मध, (सहत) दुध, साकर, घी, पीकरके, खाकरके, स्त्री पुरुष रतिक्रीडा करो ! निष्फल रतिसुख आनन्द न करो !

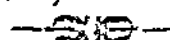


रति क्रीडा करके स्त्रीपुरुष अपने गुप्त अंग जलसे शुध्ध करो ! हाथ, मुख, पांव, जलसे धोकर पवित्र करो, घी पीओ ! दुध पीओ ! सहत (मध) का, गुडका, शरबत

पीओ ! ओ अवश्य कार्यमें प्रमाद आलस भूल करो नहि !



स्त्री पुरुषोअे संकल्प विधि निश्चय किये विना, पुरुष को काम वेग प्रहर्ष लिंग जाग्रत दृढ हुए विना, भोजन किये विना, घी पिये विना, और अति भोजन करके, स्त्री पुरुषरतिकामक्रीडा, प्रेम प्रसंग करो नहि ।



कष्ट, दुख, उपद्रववाला स्थानमें, मल, मुत्र, त्याग करनेका वेगआया हो, परिश्रम थाक लगा हो, व्यायाम कसरत किया हो, उपवास वृत किया हो, गुप्त शरीर में रोग दुख होता हो, अेकान्तस्थान न हो, तब स्त्री पुरुष काम रतिक्रीडा स्त्रीसंग प्रेम प्रसंग न करो ॥ ६ ॥



न सतो ! न गुरुन् ! परिवदेत् ! नाशुचि-रभिचार कर्म चैत्य पूज्य पूजा ध्ययन मभि निवर्तयेत् ! ॥७॥



—: अर्थ :—



सत् पुरुषो की, पूज्य गुरुओकी, वडे जनोकी, निन्दा करो नहि !

अपवित्र होकर, दुसरेका नाश करनेका मन्त्रप्रयोग अभिचार कर्म करो नहि !

अपवित्र होकर शमशान वृक्ष निचे जाओ नहि !

अपवित्र होकर देवोकी, गुरुकी, पुज्य स्त्रीपुरुषोकी पूजा करो नहि !

अपवित्र होकर स्वाध्याय, मन्त्र विद्या पढो पढावो नहि ! ॥७॥



न विद्युत् स्वनार्त वीषु ! नाभ्युदितासु दिक्षु ! नाग्नि संप्लवे ! न भूमि कंपे ! नमहोत्सवे ! नोल्कापाते ! न महाग्रहोप गमने ! न नष्ट चन्द्रायां तिथौ ! न सन्ध्ययो ! नामुखाद् गुरो नावपतितं ! नाति मात्रं ! न तान्तं न विस्वरं ! ना नवस्थितपदं ! नातिद्रुतं ! न विलंवितं ! नाति क्लीवं ! नात्युच्चै, र्नाति नीचैः स्वरै रध्ययन मभ्यसेत् ! ॥ ८ ॥



— : अर्थ : —



आकाशमें विजली चमकति हो, मेघ गर्जना होती हो, दश दिशामें अंधकार हुवा हो, अग्नि जलता हो, दावाग्नि जलताहो, विजली गिरती हो, भूमिकंप होता हो, सूर्य चन्द्र ग्रहण हो, अमावास्या तिथि हो त्रिकाल सन्ध्याकाल हो, वह समयमें विद्या पढो पढावो नहिं !

गुरुमुंखसे मन्त्र पढे विना मन्त्र पढना नहि ! अशुध्ध विद्या मन्त्र पढो नहि ! स्वर, राग, समझ विना पढो नहि ! अपूर्ण मन्त्र विद्या पढो नहि !

शब्दका शुध्ध उचार किये विना खंडित मन्त्र, पद, श्लोक, गद्य, पद्य, अशुध्ध पढो नहि! मन्त्र, श्लोक, के अर्थ समजे विना, विधि उपयोग ज्ञान विना पढो नहि !

अति, जल्दी, अशुध्ध पढो नहि ! बहुविलंबसे पढो नहि !

अशक्तिसे, अति धीरा पढो नहि ! बडे जोरसे लंवा स्वरसें पढो नहि ! ॥८॥



नाति समयं जह्यात् ! न नियमं भिन्यात् ! न नर्क्तं नादेशे चरम् न सन्ध्यास्वभ्य वहारा ध्ययन स्त्री स्वप्न सेवी स्यात् । न वालवृध्ध लुब्ध मुर्ख क्लिष्ट क्लीवैः सह सख्यं कुर्यात् !

न मद्य द्यूत वेश्या प्रसंग रुचिः स्यात् ! नगुह्यं विवृणुयात् ! न कंचि दवजानीयात् ! नाहं मानीस्यात् ! नादक्षो नादक्षिणो नासूयकः न ब्राह्मणान् परिवदेत् ! न गवां दंडमुद्यच्छेत् ! न वृध्धान् न गुरून् न गणान् न नृपान् वाधिक्षिपत् ! न चाति ब्रूयात् ! न वान्धवानुरक्तकृच्छ द्वितीय गुह्यज्ञान् वहिः कुर्यात् ! ॥ ९ ॥

— : अर्थ : —

सर्व कार्य करनेमें समय लंबाओ नहि,
सर्वत्र सर्व प्रकारके नियमको तोडो नहि,
रातके समय फिरनेको जाओ नहि,

जहां कोई मनुष्य फिरनेको जाता नहि हो अैसे शुन्य स्थानमें जाओ नहि,



सन्ध्या समय भोजन करो नहि, सन्ध्या समय सो जाना निन्द्रा करो नहि, सन्ध्या समय स्त्री पुरुष संयोग रति काम क्रीडा करो नहि!



वालक वृध्ध, लोभी, मुर्ख, दुष्ट, कृपण, नपुंसक, अे सर्व साथ मित्रता करो नहि !



दारु, मद्यपान करनेकी इच्छा करो नहि, कोई प्रकारका जुगार रमो नहि,

वेश्या स्त्रीका संग प्रसंग करो नहि,
गुप्त वात किसिको कहो नहि,
किसिका अपमान करो नहि,
मिथ्या अहंकार अभिमान करो नहि,
सर्व कार्यमें चतुर चेतन कुशल रहो,
उदार स्वभावके दाता दयालु वनो,
किसि पर झेर वेर ईर्षा करो नहि,
ब्राह्मणो की निंदा करो नहि,
गौको लकडीसे मारो नहि,

वृध्ध पुरुषोका, पूज्य पुरुषोका, मनुष्योका, मंडलका, पंचका, राजाका, अपमान करो नहि !

उन सर्वकी साथ अयोग्य वोलो नहि,

ज्यादा वोलो नहि,

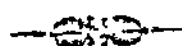
अपने भाईयोको, प्रेमी मित्रोको, कष्ट दुखमें सहाय करनेवालेको, और अपनी गुप्त वात जाननेवालेको, उनको अलग करो नहि, उनका त्याग करो नहि ! ॥९॥

—

:नाधीरो नात्युच्छ्रित सत्वः स्यात् ! नाभृत भृत्यो ना विश्रब्ध स्वजनो नेकः सुखी न दुख शीला चारोपचारो न सर्व विश्रंभी न सर्वाभिशंकी न सर्व कालविचारी ! ॥१०॥

—

—: अर्थ :—



सदा धैर्यवान बनो! उध्धत, उग्र, व्याकुल, तामसी, स्वभाववाले बनो नहि,

सेवक नोकरका पोषण रक्षण करो सदा प्रसन्न करो;

अपने मनुष्यो में प्रेम रखो,

आप और दुसरा सुखी हो ऐसा कार्य करो, जो कार्य करनेसे दुख हो वो कार्य त्याग करो, कोईभि स्त्री पुरुषका विश्वास करो नहि, सज्जन स्त्री पुरुष पर शंका वहेम करो नहि, सदाकाल केवल विचार करो और बैठे रहो नहि, उत्तम कार्य करनेका समय

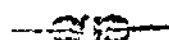
निष्फल निकालो नहि ! ॥१०॥



न कार्य काल मति पातयेत्! नापरिक्षितमभि निविशेत् ! नेन्द्रियवशगःस्यात् ! न चंचलं मनोनु भ्रामयेत !न बुध्धीन्द्रियाणा मतिभारमादध्यात् ! न चाति दीर्घ सूत्री स्यात्! न क्रोध हर्षावनु विदध्यात् ! न शोक मनुवसेत् ! न सिध्धावोत्सुक्यंगच्छेन्! ना सिध्धौ दैन्यम् ! ॥११॥



—:अर्थ :—



कोईभी कार्य में सच्चा जुठा का परिक्षा

अनुभव किये विना किसिका संग करो नहि,

मन इन्द्रियो की वृत्ति से चलो नहि,

चंचल मनकी चंचलतासे कोईभि कार्य में भूल करो नहि,

मन, बुध्धि, पांच ज्ञानेन्द्रियो, पांच कर्मेन्द्रियो, शरीर को अति परिश्रम दुख करो नहि !

सर्व कार्यमें आलस विलंब त्याग करो, जल्दी करो, स्फुर्ति करो, ध्यान धरो!

क्रोध के वेगमें, हर्प आनन्द के वेगमें कार्यको विवेकको भूलो नहि !

वारंवार शोक करो नहि, कोईभि कार्य सिध्ध करो उसका आनंद उत्साहमें विवेक विचार भूलो नहि,

कोईभि कार्य करने में निष्फलता हो तोभि धीरज हिंमत उत्साह धारण करो उदास बनो नहि। ॥११॥

प्रकृति मभो क्षणं स्मरेत्! हेतुप्रभाव निश्चितः स्यात्! हेत्वारंभ नित्यश्च नकृत मित्याश्वसेत्! नवीर्यंजह्यात्! नापवाद मनुस्मरेत्! ॥ १२ ॥

— : अर्थ : —



अपने स्वभावका वारंवार विचार करके यथायोग्य कार्य करो,

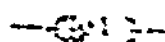
अपने जीवनध्येय और प्रभावका निर्णय करके कार्य कामका निश्चय करो,



अपने निश्चयके सत्य विचार स्थिर करो!

मैंही करुं वोहि हो जाय ऐसा अभिमान न करो,

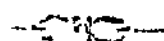
शरीरका वल, वीर्यका निष्फल नाश न करो,



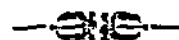
अपनी कोईभी निन्दा करे उसका वारंवार विचार करो नहि ! ॥१२॥

नाशुचिरुत्तमा जयाक्षत तिलकुश सर्पपैरग्निं जुहुयादात्मानमाशीर्भि राशासानः! अग्निर्मे नापगच्छेच्छरीरात् ! वायुर्मे प्राणानादधातु ! विष्णुर्मे वलमादधातु ! इन्द्रो मे वीर्यं शिवा मां प्रविशन् त्वापः ! आपो हिष्ठेत्यपः स्पृशेत् ! द्विः परिमृज्योष्ठौपादौ चाभ्युक्ष्य मुर्धनि खानि चोपस्पृशेदभिरात्मानम् ! हृदयं शिरश्च ब्रह्मचर्यं ज्ञानदान मैत्री कारुण्य हर्षोपेक्षा प्रशम परश्च स्यादिति ! ॥ १३ ॥

— : अर्थ : —



स्नान करो, पवित्र वस्त्रो धारण करो, परं पवित्र होकर सुगन्धी केसरी सुखड चन्दन करो, कुम् कुम् मंगल चांल्लो करो, कंठमें सोनेकी, रुद्राक्षकी, सुगन्धी पुष्पकी, माला धारण करो, पवित्र भूमि पर श्रेष्ठ घी, चावल, यव, तिल, दर्भ, सर्षव, अे सर्व पदार्थों शुध्ध करके पृथ्वी पर वेदिके कुंडमें, ब्रह्मरूप ज्योति वाला अग्नि देवको ! ओं स्वाहा! मन्त्र पढकरके संकल्प मनमें धरो, परंब्रह्मका ध्यान धरो, और आहुति अर्पण करो भगवान परंब्रह्मदेवका मोक्षपद प्राप्त करो ! ॥१३॥



स्वस्थवृत्तं यथोदिष्टं यः सम्यगनुतिष्ठति !

स समाः शत म व्याधि रायुषा न वियुज्य ते ॥१४॥

नृलोक मापूरयते यशसा साधु संमतः। धर्मार्थो वेति भूतानां बन्धुता मुपगच्छ-ति ॥ १५ ॥

परान् सुकृतिनो लोकान् पुण्यकर्मा प्रप-द्यते । तस्माद् वृत्तमनुष्ठेय मिदं सर्वेण-सर्वदा ॥१६॥

यच्चान्यदपि किंचित् स्यादनुक्त मिह पूजितम् । वृत्तं तदपि चात्रेयः सदैवाभ्यनु मन्यते ॥१७॥

!! ओं !! सनातन वेद धर्म आयुर्वेद उप-देश चरक शिक्षा दर्शन संपूर्णम् ॥

चरक संहिता सूत्रस्थान अध्याय आठ मन्त्र १७ सें ३४ प्रमाणम् ॥

— : अर्थ : —

प्राचीन महर्षियोने ब्रह्मर्षियोने जयहिन्द सनातन वेद धर्म सदाचार उपदेश जैसा कहा है वैसा जो स्त्री पुरुष पालन करेगा, उनका सर्व रोग दुख नाश होगा, और सो-वर्षका आयुष्य संपूर्ण करेगा ! ॥ १४ ॥

— : अर्थ : —



और इस पृथ्वी पर मनुष्य लोकमें महान श्रेष्ठ पुरुषो उनके उपर प्रसन्न होंगे महान प्रशंसा करेंगे और उनकी यश कीर्ति का सर्व जगत में जय जयकार होगा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार पुरुषार्थ सिध्ध होगा सर्व जगत में सर्व को परंप्रिय होगा ! ॥ १५ ॥

और ऐसे जय हिन्द सनातन वेद धर्म का परंपवित्र नियम पालनेवाले स्त्री पुरुष भगवान् परंब्रह्म देवका पदको प्राप्त करेगा

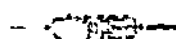
इससे सर्व स्त्री पुरुष सदा जय हिन्द सनातन वेद धर्मका नियम पालन करो ! ॥ १६ ॥



—: अर्थ :—



अे सदाचार धर्म नियम और वेद धर्म शास्त्रमें कहे हुअे दुसरे भि उपदेश है उसका भि पालन करो. अेसा महर्षि ब्रह्मर्षि भगवान् अत्रि मुनिका आदेश उपदेश है ! ॥ १७ ॥



अग्निदेवसें आशीर्वाद का इच्छा करके मन्त्र पढो अग्नि में आहुति अर्पण करो !

!! ओं !! अग्नि मैं नापगच्छेत् शरीरात् ! ओं स्वाहा ! ॥ १ ॥



—: अर्थ :—



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् अग्निदेव ! आप हमारा शरीर मंदिर में प्रवेश करो हमारा शरीरका रक्षण करो !

हमारा आयुष्यका रक्षण करो !

हमारा तेजका रक्षण करो !

हमारा बलका रक्षण करो !

हमारा शरीरमें जो तत्त्व अपूर्ण हो वह सर्व संपूर्ण करो ! आपका हम नित्य

ध्यान पूजन करते है अग्निमें आहुति देते है, आप हमारा पर प्रसन्न हो, हम को आशीर्वाद दो हमारा परम कल्याण करो ! ॥ १ ॥



!! ओं !! वायुर्मे प्राणान् आदधातु ! ओं स्वाहा ! ॥ २ ॥

हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् वायुदेव ! हमारा शरीर मंदिर में प्रवेश करके हमारी सर्व प्राणवायुका बल अच्छी रीतसें रक्षण करो !

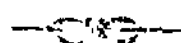
आपका हम नित्य ध्यान पूजन करते है, आपको नित्य आहुति देते है, आप

हमारा पर सुप्रसन्न हो, हमको आशीर्वाद दो हमारा परम कल्याण करो ! ॥ २ ॥

!! ओं !! विष्णु में वल मादधातु ! ओं-स्वाहा ! ॥ ३ ॥



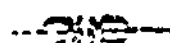
—: अर्थ :—



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् विष्णुदेव ! हमारा शरीर मंदिर में प्रवेश करके आत्म-वल ! मनोवल ! तेजवल ! आरोग्यवल ! ऐश्वर्यवल ! ज्ञानवल ! विद्यावल ! आनंद वल ! धर्म वल ! इस प्रकारका सर्व वल की संपूर्ण महान वृध्धि करो !

आपका हम नित्य ध्यान पूजन करते है

आप हमारा पर प्रसन्न हो! हमको आशीर्वाद दो हमारा परम कल्याण करो! ॥ ३ ॥



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् वरुणदेव! इस मनुष्यलोकमें घेहुं, जव, डांगर, असे अन्न! और मीठा मधुर जल, दुध, दहि, मखन, घी, सहत (मध) सक्कर, खांड, असे रस! अनार, द्राक्ष, केला, आम, असे फल; हम सबको भोजन योग्य अनेक श्रेष्ठ पदार्थका महान् सुख दो! और महान् सर्व व्यापक सर्व श्रेष्ठ तेजोमय भगवान् परंब्रह्मदेवका ज्ञान विज्ञान दर्शन दो! और मैं आत्मा वो हि ब्रह्म हुं, असा ब्रह्म-

ज्ञान दो ! आपका हम नित्य ध्यान पूजन दर्शन वंदन करते हे ! ॥ १ ॥



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् वरुणदेव ! इस मनुष्यलोकमें जो हम को सुख देनेवाला अन्न, रस, फल, पदार्थ है वो सर्वका हमको महान सुख दो ! जैसे अनेक सुख की ईच्छावाली पुत्रकी माता अनेक प्रकार के पदार्थों से पुत्रको सुख दे कर उनका कल्याण करती हे, वैसे आप हमारा सर्व प्रकारसें कल्याण करो ! आपका हम नित्य ध्यान पूजन दर्शन वन्दन करते हे ! ॥ २ ॥



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् वरुणदेव ! आप अखिल विश्वमें वरसाद जल रस वरसावो जगतका सर्व प्राणी मात्रको परम प्रसन्न तृप्त करते हो, वैसे हमारा सर्व सुख की महान इच्छाओ संपूर्ण करो, और हम को पुत्र प्रजा प्रगट करनेका महान वल शक्ति दो, आपका हम नित्य सप्रेम ध्यान पूजन वन्दन करते है ! ॥ ३ ॥



!! ओं !! इन्द्रो मे वीर्यमादधातु !
ओं स्वाहा ! ॥ ४ ॥

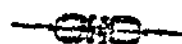


— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप, स्वर्गलोकका सर्व देवो का महाराजा भगवान् इन्द्रदेव ! हमारा शरीर मंदिरमें प्रवेश करके हमको महान ईश्वरी शक्तियो दो, सर्व सिध्धियो सर्व रिध्धियो. सर्व निधियो, ऐश्वर्य, तेजबल, संपूर्ण आयुष्य, महान सुख दो, आपका हम नित्य ध्यान पूजन करते है, आप हमारा परम कल्याण करो ! ॥ ४ ॥

!! ओं !! शिवामाम् प्रविशन्तु आपः ! ओं स्वाहा ! ॥ ५ ॥

— : अर्थ : —



हे परंब्रह्म स्वरूप भगवान् वरुणदेव ! हमारा शरीर मंदिरमें प्रवेश करके आरोग्य, आयुष्य, आनंद, उत्साह, तेज, बल, सर्व संपूर्ण, ऐश्वर्य, महासुख दो आपका हम नित्य ध्यान पूजन करते है. आप हमारा पर सुप्रसन्न हो, हमको आशीर्वाद दो हमारा परम कल्याण करो ! ॥ ५ ॥

!! ओं !! आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ १ ॥

!! ओं !! जोवः शिवतमो रसस्तू तस्य-

भाजय तेहनः । उशती रिव मातरः ॥ २ ॥

!! ओं !! तस्मा अरंग मामवो जस्य क्षयाय जिन्वथ ! आपो जन यथा च नः ॥ ३ ॥

— : अर्थ : —

अे तीन वरूणदेवके मंत्र पढो शुध्ध जलसे वरुण स्नान करो ! मंत्रसे वरुण स्नान करके दहना हाथसे जल ले कर ! ओं स्वाहा ! मंत्र चारवार पढो आचमन करो वो हि भीना हाथ मुख होठ उपर दो वार लगाओ हाथमें जल ले कर ! ओं !

! ओं ! ओं ! मंत्र पढो अपने मस्तकमें पांव पर जल प्रोक्षण करो और मुख, नाक, आंख, कान, हृदय, मस्तक सर्व शरीर पर जल प्रोक्षण करो. ! ओं ब्रह्मार्पण ! मंत्र पढो भूमिपर जल छोडो !



हे सर्व जगतके स्त्री पुरुष !

सप्रेम सदा ब्रह्मचर्य पालो,

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ रहो,

सर्वश्रेष्ठ साहित्य पदार्थका वेदशास्त्र कि विधिसे सुपात्र ब्राह्मणको भेट दान ब्रह्मार्पण करो !

अपने जैसा समान सदाचारो धर्मज्ञानी सज्जन स्त्री पुरुषोसे मित्र भावसे रहो! दुखी मनुष्यो पर दया करो! सुखी स्त्री पुरुषोको देखकर हर्ष आनंदमय बनो!

पापी मनुष्योसे अभाव करो!
पापी मनुष्योका संग करो नहि!
सदा शांतिवाला बनो!

में ब्रह्म हुं असा विचार करो, ओम्कार ब्रह्ममंत्रका जाप करो!

परं ब्रह्मदेव सर्व .व्यापक है समझो!



आयुर्वेद, चरक संहिता, सूत्र स्थान,

अध्याय आठ, श्लोक सत्तर से चोंत्तीस तक प्रमाणम् !



!! ओं !! जयहिन्द ! सनातन वेदधर्म आयुर्वेद उपदेश, चरक शिक्षा अर्थ दर्शन संपूर्णम् ॥

!! ओं !! जयहिन्द ! सनातन वेदधर्मो विजयतेतराम् ॥

भारतवर्ष आर्यावर्तदेश जयहिन्दका सदा जय हो ! अखिल विश्वमें सनातन वेदधर्म का महान जय जय विजय हो !



ओं

!! ओं !! सनातन वेद धर्म आयुर्वेद उपदेश सुश्रुत शिक्षा दर्शन !! ६७ !!



!! ओं !! तत्रादित एव नीच नख रोम्णा शुचिना शुक्ल वाससा लघूष्णीपच्छत्रो पानत् केन दंडपाणिना काले हित मित मधुर पूर्वाभि भाषिणा वन्धु भूतेन भूतानां

तु गुरु वृध्धा नुमतेन सुसहाये नान्य मनसा खलूपचरितव्यं तदपि न रात्रौ न केशास्थि कंटकाश्म तुष भस्मोत्कर कपालांगारा मेध्य स्थान वलि भूमिषु न विषमेन्द्र कील चतुष्पथ श्वभाणा मुपरिष्टात्! ॥ १ ॥



— : अर्थ : —



!! ओं !! ओं !! ओं !!



हे सर्व स्त्री पुरुष! अपने शरीर पर प्रथमसें नख,रुंवाटो वाल छोटे और शुध्ध रखो! पवित्र रहो, स्वच्छ सफेद शुक्ल वस्त्र धारण करो, मस्तकमें सुन्दर छोटीसा पघडी और

साफा मंडिल धारण करो, छत्र रखो, सुन्दर पांव में जुता रखो, हाथ में सुन्दर लकडी रखो, समय के योग्य थोडा और मधुर बोलो, सर्व प्राणि मात्र पर प्रेम भाव रखो, वडे वृध्धोकी आज्ञा प्रमाणे वर्तो, रात को फिरने को जाओ नहि, जिसभूमि पर केश, हड्डी, कंटक, पथ्थर, हो, कंकर, छोलका, भस्म, शिरकी खोपरी, अग्नि के अंगार हो, अप-वित्र भूमिहो, वलिदान रखनेका चार रस्ता हो उंचा निचा भयानक कठीन स्थल हो, वहां जाओ नहि ! ॥ १ ॥



न देव ब्राह्मण पितृ परिवादांश्च !

न नरेन्द्र द्विष्टोन्मत्त पतित क्षुद्र नीचाचारा नुपासीत ॥ २ ॥

—ः अर्थ ः—

राजा का द्वेष हो ऐसा राज विरुध्ध बोलो नहि ! किसिकि, चाडी करो नहि, जुठ बोलो नहि, देवोकी, ब्राह्मणोकी, माता, पिता, पति, की सद्गुरुकी, निन्दा करो नहि,

राजा का शत्रु हो, उन्मत्त हो, गांडा हो, अपने वर्णाश्रम कर्म धर्म सें रहित पतित हो, मनस्वी वर्तन वाला हो, नीच

स्वभाव वाला हो, दुष्ट व्यसन करनेवाला, दुराचार पापकर्म करनेवाला, दुष्ट मनुष्यो का संग प्रसंग सम्बन्ध रखो नहि ! ॥ २ ॥

वृक्ष पर्वत प्रपात विषम वल्मीक दुष्ट वाजि कुंजराधि रोहणानि परिहरेत् !

पूर्ण नदी समुद्रा विदित पल्वल श्वभ्रकूपावतरणानि भिन्नशून्यागार श्मशान विजनारण्य वासाग्नि संभ्रम व्यालभुजंग कीट सेवा ग्रामाघात कलह शस्त्र सन्निपाताग्नि संभ्रम व्याल सरीसृप शृंगि सन्निकर्षाश्च !॥३॥

— : अर्थ : —



झाड, पहाड, पानाकी धारा गिरे वहां वैठो नहि, वहु उंचे वहु नोचे वांका, अवळा, अध्धर, कठिनस्थल में वैठो नहि.

सर्प, घो, सावडी, झेरी जानवर को जगामें, राफडा, दर, वखोल, पर वैठो नहि! दुष्ट, कपटी, उन्मत्त, गांडा, काटनेवाला, नाचने कुदनेवाला, घोडा, हाथो, पर वैठो नहि ।

नदीमें पुर आया हो उसमें उतरो नहि,

समुद्रमें वायुका, जलका, प्रचंड उत्पातमें वहाण आगवोट नावमें वैठो नहि,



अजाने, सरोवर, तालाव, जलकेधरा, उंडा कोतर, कुवा, वाव, में उतरना नहि!

जीर्ण जुना तुटा हुवा स्थानमें, जहां मनुष्यका निवास न हो. शून्यस्थान धाममें शून्य गाममें गुफामें हवेली, बंगला, महेलमें शून्य स्थानमें जाओ नहि रहो नहि!

मनुष्य के मुर्दा जलते हो वैसे समशान में जाओ नहि !

मनुष्य विना के निर्जन वनमें जाओ नहि रहो नहि !

दावाग्नि जलता हो प्रचंड ज्वालावाला अग्नि वढता हो वहां साहस करके जाओ नहि ! मणिधर, फणिधर, विषधर, व्याकुल-

ता वाले सर्प नाग जहां हो वहां जाओ नहि रहो नहि !

वडे कानखजुरा, कोडा, झेरी जन्तु हो वह स्थानमे जाओ नहि रहो नहि!

जो गाम अग्निसे जलता हो जो गाम में चोर लोक लुंट, मार खून उपद्रव अत्याचार, जुलम करते हो वहां जाओ नहि रहो नहि! जहां भारी क्लेश होताहो, सामसामे लढाइ चलति हो, तलवार, तीर, भाला, तोप, तमंचा, वन्दुक फुटता हो, अनेक शस्त्र छुटता हो ऐसे स्थलमें जाओ नहि रहो नहि !

जहां धरतिकंप होताहो, ज्वाला मुखी पहाड फटता हो. सर्वत्र अग्नि ज्वाला

जलता हो, अनेक भय उत्पात होता हो वहां स्थलमें जाओ नहि रहो नहि !

जिस गाममें घर में वनमें मार्गमें वडे शिंगवाले पशुप्राणि गाय, नन्दी, वळद, भेंस, पाडा, वकरा, साभर, हरण, सर्वका संग करो नहि, चिडाओ नहि, उनकी सामने युध्ध करो नहि !! ॥३॥

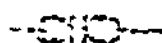
—o—

नाग्नि नो गुरु ब्राह्मण प्रेंखादस्पत्यन्तरेणाभियायात् ! न शवमनुयायात् ! देव गो ब्राह्मण चैत्यध्वजरोगि पतित पापकारिणां च च्छायां नाक्रमेत ! नास्तं गच्छन्त मुद्यन्तं चादित्यं वीक्षेत गान्धयन्तीं परशुस्यं वा

चरन्तों परस्मै न कस्मैचिदाचक्षीत नचोल्का-
पातेन्द्र धनूंषि! नाग्निमुखेनोपधमेत्! नापो
भूमिं वा पाणि पादेनाभिहन्यात्! ॥ ४ ॥



— : अर्थ : —



अग्निकुंड और अग्नि में होम करनार दो की बीचमें से जाओ नहि ! शिष्य गुरु दो की बिचमें से जाओ नहि ! दो ब्राह्मण बैठे हो उनकी बीचमे से जाओ नहि, बैठने का, सोनेका, दो हिन्दोलाकी बीचमें से स्त्री पुरुष बैठे हो उनकी बीचमें से जाओ

नहि, मुर्दाकी पिछे पिछे जाओ नहि, तपस्वी ब्राह्मणदेवकी छाया ओलंगो नहि,

गौकी छाया ओलंघो नहि,

जिस शमसानमें मुर्दा जलते हो, मुर्दा-भूमि में दाटे हो, उंडा कुवामें मुर्दा रखे हो, नदीके महा धरामें मुर्दा डूबाते हो, ऐसे स्थान में जो वृक्ष है उसकी छाया उलंघन करो नहि,

जिस स्थानमें धजा फरकती हो वह ध्वजा को छाया उलंघन करो नहि,

हिन्दु सनातन वेदधर्मके चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, शुद्र, और चार आश्रम ब्रह्म-चर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यस्त, है ! ए-

वर्णाश्रम धर्मका त्याग करके कल्पित वेष-धारी स्वच्छंदी मतपंथके पाखंडी बावा साधु सर्व धर्म पतित कहलाते है, उनको छाया ओलंगो नहि,

सर्व प्रकारकी चोरी करनेवाला, हिंसा करनेवाला, दुराचार व्यसन करनेवाला, अत्याचार घोर पाप करनेवाला, मनुष्योंकी छाया ओलंघन करो नहि,

प्रातःकालमें उदय हुवा सूर्यदेवको देखो नहि,

सायंकालमें अस्त हुवा सूर्यदेवको देखो नहि,

नहि, मुर्दांको पिछे पिछे जाओ नहि, तपस्वी ब्राह्मणदेवकी छाया ओलंगो नहि,

गौकी छाया ओलंघो नहि,

जिस शमसानमें मुर्दा जलते हो, मुर्दा· भूमि में दाटे हो, उंडा कुवामें मुर्दा रखे हो, नदीके महा धरामें मुर्दा डुबाते हो, अैसे स्थान में जो वृक्ष है उसको छाया उलंघन करो नहि,

जिस स्थानमें धजा फरकती हो वह ध्वजा को छाया उलंघन करो नहि,

हिन्दु सनातन वेदधर्मके चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, शुद्र, और चार आश्रम ब्रह्म· चर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यस्त, है ! ए·

वर्णाश्रम धर्मका त्याग करके कल्पित वेष-धारी स्वच्छंदी मतपंथके पाखंडी बावा साधु सर्व धर्म पतित कहलाते है, उनको छाया ओलंगो नहि,

सर्व प्रकारकी चोरी करनेवाला, हिंसा करनेवाला, दुराचार व्यसन करनेवाला, अत्याचार घोर पाप करनेवाला, मनुष्योको छाया ओलंघन करो नहि,

प्रातःकालमें उदय हुवा सूर्यदेवको देखो नहि,

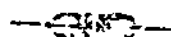
सायंकालमें अस्त हुवा सूर्यदेवको देखो नहि,

गौआ दोडति चलि जाती हो, किसि का अन्न, घास खाती हो जल पीति हो, वह वात कोइ मनुष्य को कहो नहि,

आकाशसे विजली गिरे, आकाशमें रंगीन इन्द्र धनुप हो वह किसिको देखाओ नहि,

मुख से अग्नि फुंको नहि,

पृथ्वी उपर और पानी उपर हाथ पग पछाडो नहि, ! ॥ ४ ॥



न वेगान्धारयेत् ! न वहिर्वेगान् ग्रामनगर देवतायतन श्मशान चतुष्पथ सलिलाशय पथि सन्निकृष्टानुन् सृजेन्न प्रकाशं न वा-

त्वग्नि सलिल सोमार्क गो गुरु प्रति मुखम् ! ॥ ५ ॥



—: अर्थ :—



मल, मूत्र, का वेगको रोको नहि, छींक का वेगको रोको नहि, वगासा के वेगको रोको नहि, ओडकार, अेडको, थूंक का वेग को रोको नहि, निद्रा (उंघ) भूख, तरस, का वेगको रोको नाहि, श्लेष्म (झखम) का वेगको रोको नहि, रोनेका वेग, उल्टी-का वेग, खुजलीका वेग रोको नहि, काम रतीक्रीडा वेग को रोको नहि, शरीरको इन्द्रियोका वेगको रोको नहि !

गाम, नगर शहेर, देवपूजनके स्थानमें, समसान, चार रास्ता, लोक आनेजानेका मार्ग में, कुवामें, वावमें, सरोवरमें, तलावमें नदीमें गंगामें जलके स्थानमें पवित्र स्थानमें उनको पासमें, जलके धरामें कुंडमें प्रकाशमें वह मनुष्य देखे वहां, मल, मूत्र, त्याग करने को वेठो नहि !

मल मूत्र शुध्ध करनेको अेकान्तमें वेठो वंटोल वायुमें, जहां जल प्रवाह वहता हो, जलमें चन्द्र सामे, सूर्य सामे, गौका सामने, गौशालामें, गुरु, पूज्य, वृध्धो के सामने मल, मुत्र, शरीरके अंगोकी शुध्धि मलत्याग करो नहि ! नखसें भूमिको खोदो नहि, सदासर्वदा एकला हो और सभा में हो

वगासा ओडकार, श्वास, छींक, मुखपर वस्त्र धारण कर के करो !

पूज्य सद्गुरु सन्मुख, माता, पिता, पति, वृध्धो अधिकार सत्तावालाके सामने निन्द्रा में सो जाव नहि, पगको कमान करके बैठो नहि, टेका देके टेढा होना नहि, पांव पर पांव चढाके लंबा पाव करके बैठो नहि! सभ्यता और मर्यादासे रहो ! ॥ ५ ॥



न वाल कर्ण नासा स्रोतो दशन विवराण्यभि कुष्णीयात् ! न चै जयेत् केश मुख नख वस्त्र गात्राणि ! न गात्र नख वक्त्र वादित्रं कुर्यात् ! न काष्ट लोष्ट तृणादान भि हन्याद्र भिन्धाद् वा ! ॥ ६ ॥



—: अर्थ :—

हे सर्व स्त्री पुरूषो ! अपने शिरमें केसमें कान में नाक में और शरीरकेसर्व छीद्रो में दांत में खोदो नहि !

केश, मुख, नख, शरीर के सर्व अंग, वस्त्र, चंचलतासे वारंवार हलावो नहि !

शरीर के कोई भि अंगको हाथसें वाजींत्र जैसे वजाओ नहि, पछाडो, मारो, टीपो, नहि,

शरीर के कोई भि भागको लकडी सें, पथ्थर सें घास सें शस्त्र सें काटो नहि, तोडो नहि, तीक्ष्ण शस्त्रसें गरम तपाके देह को डाम दो नहि, जलाओ नहि !

शरीर पर, हाथ पर, गरम अग्नि में तपा-

या हुआ सोया घोचो नहि पांवसे मस्तक तकके शरीरके सर्व अंगमें विजली यंत्रसे देवी देवताओका चित्र सूर्य, चन्द्र, राम, कृष्ण, राधा, हनुमान, गणेश, शिव, विष्णु, नरसिंह, काली, लक्ष्मी भैरव, असे चित्र चित्राओ नहि,

स्त्री पुरुष परस्पर के चित्र अपने शरीर पर चित्रो नहि! गुलाव, कमल, पुष्प, वृक्ष शरीर पर चितराओ नहि!

शरीर पर अपना और दूसरेका नाम चित्रो नहि, मन्त्र चित्रो के लिखो नहि पाखंडी कल्पित सनातन वेद धर्म विरुध्ध, रामानुज, रामानंद, राधावल्लभ मध्व, निंबार्क, वल्लभाचार्य, स्वामिनारायण, प्रणामी, कुबेरपंथ असे

अनेक पन्थोकी मुद्राओ छापो तिलको शंख, चक्र, गदा, पद्म, छापो अग्निमें तपाकर अपने और दुसरेका शरीर उपर डहाम देना नहि!

द्वारकांधाम, श्रीरंग, वालाजी, विष्णु-कांची, की गरम अग्निमें छापो देहपर लगा के शरीर जलाओ नहि!

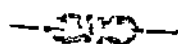
शैव, लिंगायत, शाक्त पन्थके त्रिशूलकी छाप डाम देहको लगाओ नहि!

सर्व स्त्रीपुरुष गरम अग्निमें तपाकर सोयसे अपने देहमें रंगीन चीत्र करो नहि, देह जलाओ नहि!

नखसे तृण घास तोडो नहि, पंखा, चटइ, आसन चटइ तोडो नहि, नखसे

कोई वजाओ नहि, मुख से ननन ननन, गणगण शब्द करो नहि, मुखसे नख तोडो नहि, मुखसे कोइ वस्तु काटो नहि, नखसे कोई वस्तु ठोको नहि! वजाओ नहि,

कोईभि स्त्री पुरुष सफेत, काली, पीला, लाल, मुलतानी मिट्टी, इंट, मरडोया, घडा, चंपु माटली कोडीयां कोयला, तोडके काटके खाओ नहि ! ॥ ६ ॥



न प्रति वातातपं सेवेत्। न भुक्त मात्रेग्नि मुपासीत ! नोत्कटक स्तिष्ठेत् ! नाल्पा काष्ठासन मध्योसीत ! न ग्रीवां-विषमं धारयेत् ! न विषम कायः क्रियां-

भजेद् भुंजीत वा ! न प्रतत मीक्षे ! न विशेषा ज्ज्योति र्भास्कर सूक्ष्म चल-भ्रान्तानि ! न भारं शिरसा वहेत् ! न स्वप्न जागरण शयनासन चंक्रमण यान वाहन प्रधावन लंघन प्लवन प्रतरण हास्य भाष्य व्यवाय व्यायामादानुचितानप्यति सेवेत ! ॥ ७ ॥



—: अर्थ :—



जिस दिशासे अपना सामने वंटोळ वायु आताहो उसि समय उस दिशामें जाओ नहि !

जिस दिशासे अपना सामने सुर्यका ताप आताहो, उसि समयमें उस दिशामें जाओ नहि,

भोजन करके अपना शरीरपर अग्निका शेक करो नहि ! उभा पांवसे अध्धर आसन पर बैठो नहि !

छोटी काष्टकी पाटली पर अर्ध आसन पर बैठो नहि !

जीर्ण खटोया, पलंग, पाट, पाटला, खुरसी, हींचका, बाजठ, सिंहासन, टुटा फटा पर बैठो नहि !

शरीरका कंठ उंचा टेढा दुखे ऐसा रखो नहि, !

अपना शरीर टेढा नीचा करके शरीरकी नाडी में आंटा पडे ऐसा कोई काम करो नहि!

जमीन में हाथको टेढा टेका रख करके भोजन करो नहि!

टेढा, उंधा, पांवसे और ऐसा हाथसे पांवकी आंटी लगा करके, शरीरके विचित्र अंग करके भोजन करो नहि!

बहुत लंबी नजरसें आंख दुखे ऐसा देखो नहि!

नेत्र बहोत खेंच करके देखो नहि, आंखसे विचित्र चेष्टा करो नहि!

सूर्य का तेज प्रकाश सामे देखो नहि, विजली तेज प्रकाश सामे देखो नहि!

कोईभि महान प्रकाश सामे देखो नहि, अग्निका प्रचंड ज्वाला तेज प्रकाश सामे देखो नहि !

नेत्रको दुख हो अैसो सूक्ष्म वस्तु देखो नहिं, छोटे अक्षरो वांचो नहि, छोटा शब्द लिखो नहि, वहुत वेगसे फिरति वस्तु देखो नहि !

कोईभि स्त्री पुरुष मस्तक पर भार वजन रखके चलो नहि, अति निद्रा करो नहि, अति उजागरा करो नहि, रातको जागरण करो नहि, अति स्वप्नामें सो जाओ नहि,

अति अेक आसन पर वैठे रहो नहि,

अति चलो नहि, अति रथ, गाडी, गाडा, में वैठो नहि, घोडा, हाथी, उंट,

वाहन पर अति बैठो नहि, अति ज्यादा दोडो नहि, अति लंघन करो नहि, उपवास भूख्या रहो नहि, अति कुदो नहि, अति नाचो नहि,

अति जलमें नदीमें सरोवरमें कुदका डुबका खाओ नोह !

उंचे चढके पाणीमें कुदपडो नहि, अति जलमें तरो नहि, अति वारंवार हसो नहि, अति वोलो नहि. हे स्त्री पुरुषो अति रतिकाम क्रीडा करो नहि !

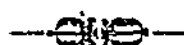
अति व्यायाम कसरत करो नहि, सर्व कार्य करने में प्रेम भाव हो तो भि अति कार्य करो नहि ! ॥ ७ ॥



उचितादप्यहितात् क्रमशो विरमेध्धित मनुचितमप्या सेवेत क्रमशो न चैकान्ततः पाद हानात् ! ॥ ८ ॥



— : अर्थ : —



कोईभि कार्य करनेमें अच्छा हो करनेसे अपनेको दुख होता हो ऐसा कार्य करो नहि,

कोईभि कार्य करने में कठिन हो करने से अपने को सुख होता हो वह कार्य सप्रेम करो !

कोईभि कार्य दुराग्रहसे हठसे करनेसे अपना हितका नाश हो जाय वह कार्य करो नहि ! ॥ ८ ॥



नावाकं शिराः शयोत न भिन्न पात्रे नांजलि पुटे नापः पिबेत् ! काले हित मित स्निग्ध मधुर प्राय माहारं वैद्य प्रत्य वेक्षित मश्नीयात् ! ग्राम गण गणिका पणिक शत्रु शठ पतित भोजनानि परि हरेत् ! शेपाण्यपि चानिष्ट रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द मानसान्यन्यान्येवं गुणान्यपि वा सम्भूय दत्तानि तान्यपि मक्षिका वालोपहतानि ! ना प्रक्षालित पाणि पादो भुंजीत ! न मूत्रोच्चार पोडिनो न सन्ध्ययो र्नापाश्रितो नातीतकालं होनमति मात्रं चेति न भुंजीतोध्धृत स्नेहम् ! ॥ ९ ॥



—: अर्थ :—



टेढा उंधा विचित्र मस्तक करके निद्रा करो नहि, काणा, फुटा, तुटा पात्रसे जल पीओ नहि !

हाथकी अंजलीसे जल पीओ नहि!

सर्व स्त्री पुरुष भोजन अन्न जल अपनी प्रकृतिको पथ्य हो वह भोजन करो !

भोजनका प्रेम हो इससे थोडा भोजन करो, ताजा घी, तेलवाला, मन आनंद हो औसा प्रिय मधुर भोजन करो!

वैद्योओ विचार से अनुभवसे निश्चय किया हुवा निर्विकार शुध्ध पवित्र भोजन करो !

गाम के पंचलोकोने गरीब लोकका दंड शिक्षा करके मिलाया हुवा, और गामके सर्व लोकोने मिलकर अेकठ्ठा किया हुवा, अैसा अन्नका भोजन करो नहि!

वेश्या--वारांगना, गुणका, कुलटा, अैसी दुष्ट स्त्रीयोका भोजन करो नहि!

अनेक जातकी वस्तुओ वेचनेवाले दुकानदार गांधीका भोजन करो नहि!

अपनेपर शत्रुभाव करने वाला मनुष्यका अन्न भोजन करो नहि!

जो मनुष्य हिन्दु सनातन वेद धर्मका वर्णाश्रम धर्मसदाचार पालन नहि करता हो, परंब्रह्मदेव की भक्ति नहि करता हो,

धर्मकर्म नीतिसें भ्रष्ट होगया हो, कृपण स्वभावका हो, अपनी कही हुइ बात न सुनता हो, विश्वासघाती, धूर्त, छल, कपटी, शठ, मनुष्यका अन्न भोजन करो नहि !

कल्पित मत पंथ सम्प्रदाय पाखंडको धर्म माननेवाला, हिन्दु सनातन वेद धर्म के वर्ण आश्रम धर्मका त्याग करनेवाला, धर्म पतित कहाता है ! उनका घरका अन्नभोजन करो नहि !

वेद धर्म शास्त्रमें निषेध कहे हुअे अभक्ष-अन्न पदार्थका भोजन करो नहि !

जो पदार्थ नेत्रोसे देखनेमें, जीह्वासे चाखनेमें, नाकसें सुंघनेमें, हाथसें स्पर्श

करनेमें, कानसें सुननेमें, मनसें विचार करनेमें अन्न, जल, पुष्प, फल, रस, सर्व अच्छे न हो! अैसे अपने और दुसरेके लाये हुअे हो तोभि वह भोजन करो नहि !

जिस भोजनमें मखी गिराहो, जंतु पडाहो, शिरके और शरीरके वाल पडाहो वह अन्न, जल, फल, रस, पदार्थ पिओ नहि, खाओ नहि !

हाथ पांव मुख जलसे धोया विना- भोजन करने को बैठो नहि !

मल, मूत्र, और इन्द्रियोका मल शुध्ध करनेका त्याग करनेका वेगको रोक करके भोजन करनेको बैठो नहि !

प्रातःकाल, सायंकाल, सन्ध्याकाल के समयमें भोजन करनेको बैठो नहि !

जिस स्थानमें मनुष्योका पशुओका शव मुर्दा दाट दिया हो, उसकी उपर देवल मन्दिर वनाया हो, पथ्थरके पांव वनाया हो, तुलसी कयारा वनाया हो, घोर, कवर, दरगाह, वनायाहो, जहां झेरीले जीव जंतु, सर्प, नागका, राफ, पोल दर हो,

चोरोका, वाघ, सिंह, चित्ता, भालु, अैसे हिंसक प्राणिओका भयहो, जहां भूत, प्रेत पिशाच, ब्रह्मराक्षस, जिदनाथ, राक्षस, वीर असुरकी स्थापना हो,

वहां भोजन करनेको कभि वेठो नहि! भूख विना भोजन करो नहि! रातका वाशी, उच्छीष्ट, जुठा, दुसरेका खाया पीया, चुसेला चाटेला, काटेला, कच्चा, अधेकच्चा पानीवाला, दाझाहुआ, जलाहुआ, खोरा, वटाहुआ, उवावाला, काटवाला,

सडा हुआ, अपमान, तिरस्कारका, अभाव दुर्भावका, भोजन करो नहि !

दुधको उबालके मलाई निकाल लियाहो ऐसा दुध, दही, मठा, छास, खोवा मावा खाओ नहि ! ॥ ९ ॥



नोदके पश्येदात्मा नंन नग्नः प्रविशेज्जलम् ! न नक्तं दधि भुंजीत न वाप्यघृत शर्करम् ! ॥ १० ॥



— : अर्थ : —



हे ! सर्व स्त्री पुरुषो मनुष्यो ! जलमें अपना मुख, देखो नहि ! जलमें, नदीमें,

सरोवर, तलावमें समुद्रमें, जलप्रवाहमें वस्त्र विना नंगा दिगंबरहोके स्नान करो नहि ! रातको दहीं जिमो नहि, और रातको दहीं जिमनेका तीव्र प्रेम होतो दहीं में घो, साकर डाले विना जिमो नहि ! ॥ १० ॥



नामुद्ग सूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकै विना ! अन्यथा कुष्ठ विसर्पादीं जनयेत् ! द्यूतमद्याति सेवा प्रति भू साक्षित्व समाह्वान गोष्ठी वादित्राणि न सेवेत स्रजं छत्रोपानहं कनक मतीत वासांसि न चान्यै र्धृतानिधारयेत् ! ब्राह्मण मग्निं गां च नोच्छिष्टः स्पृशेत् ! ॥ ११ ॥



—: अर्थ :—



रातको दहीं जिमना हो तो मुंगकी दालकी साथ जिमो, दहीं में मध डालके जिमो !

दहीं में आंवळा का चूर्ण डालके जिमो ! दहीं में काली मिरच डालके जिमो ! दहीं को घी, जीरा से बघार करके जिमो !

रातको दहीं विधि विना भोजन करो नहि !

रातको दहीं विधि विना जिमनार को श्वेत कुष्ट सफेत कोडका रोग होता है ! करोरोयारोग, खस, खुजली, दद्रुकुष्ट (दादर) चांदा, फोल्लीओ और अनेक गुप्त रोग, चमडी के रोग होता है ! सर्व स्त्री पुरुषो

मनुष्यो सट्टा, जुगार, रमत पासा, सोकटा-बाजी पत्ता, खेलो नहि ! हारजीत की प्रतिज्ञा करो नहि ! सर्व जातका दारु मदिरा पीओ नहि ! शरीरको दुख परिश्रम लगे ऐसी अति महेनत मजुरी सेवा करो नहि !

किसिका जामीन बनो नहि ! किसिका साक्षी बनो नहि ! युध्धकी वातो करो नहि ! वार्जीत्रो बजाने में बहुत समय निकालो नहि !

हे सर्व स्त्री पुरुषो ! दुसरे मनुष्यका पहेराहुवा पुष्पमाला, छत्र, सुवर्ण अलंकार, जुता, वस्त्र, सर्व, तुम धारण करो नहि !

पुराने वस्त्र, मलीन वस्त्र, जीर्ण, वस्त्र, अलंकार, शणघार धारण करो नहि !

अपवित्र हाथको शुध्ध जलसे धोया विना ब्राह्मण, अग्नि, गाय, को स्पर्श करो नहि ! ॥ ११ ॥



सुखमत्र समासेन सद्वृत्तस्यै तदोरितम् ! आरोग्यमायुरथो वा नासद्भिः प्राप्यते नृभिः ! ॥ १२ ॥

आयुर्वेद। सुश्रुत संहिता चिकित्सास्थान अध्याय चोवीस (२४) !!



— : अर्थ : —



भारतवर्ष आर्यावर्त जय हिन्दमें सर्व मनुष्यो सर्व स्त्री पुरुषो को उत्तम सुख देनेवाला। ओं ! जय हिन्द। सनातन वेद

धर्मका सदाचार शिक्षा उपदेश हमने सारुप कहा है !

! ओं ! जय हिन्द ! जो मनुष्य सनातन वेदधर्म पालन करेगा उनका शरीरका श्रेष्ठ सर्वोत्तम आरोग्य रहेगा, वो दीर्घ आयुष्य संपूर्ण करेगा!

जो स्त्री पुरुष मनुष्य वेद सनातन धर्म पालन नहि करेगा उनको आरोग्य, आयुष्य, सुख, नहि मिलेगा ! ॥ १२ ॥

आयुर्वेद ! सुश्रुत संहिता, चिकित्सा-स्थान, अध्याय, चोवीस (२४) प्रमाणम् !

!! ओं !! जय हिन्द ! सनातन वेद धर्म, आयुर्वेद उपदेश, सुश्रुत शिक्षा अर्थ दर्शन संपूर्णम् ॥

!! जय ओम् नमः !! ओं ब्रह्मार्पणम् !!

ओं

!! शुक्ल यजुर्वेद मन्त्र अर्थ दर्शन !! ६८ !!

सूर्य देव मन्त्र दर्शन !! १ !!

!! ओं !! विश्वानि देव सवित दुरितानि परासुव । जद् भद्रन्तन्न आसुव ! ओं !!!१!!



माँ० सुपुत्रि योगमूर्ति श्री आनन्दादेवी

— : अर्थ : —

हे प्रकाशक परं ब्रह्म देव हमारा सर्व पाप को दूर करो। और जो कल्याण हो वह हम को दो. ॥ १ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तीस (३०) मन्त्र तीन (३) प्रमाणम् !



!! गायत्रि ब्रह्म मन्त्र दर्शन !!२!! !!६९!!



!! ओं !! भूर्भुवः स्वः ! तच्छ वितुर्वरेण्यम्,

भर्गो देवस्य धिमहि, धियो जोनः प्रचोद्-
यात्, ! ओं ! ॥ २ ॥



— : अर्थ : —

जो मेरी बुध्धिका प्रेरक प्रकाशक है वह परंब्रह्मदेवका श्रेष्ठ तेजका में ध्यान धरता हुं. (में ब्रह्म स्वरूप हुं ऐसा विचार की साथ जप करो !) ॥ २ ॥



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तीन (३) मन्त्र पांतीस (३५) अध्याय बाईस (२२) मन्त्र नव (९) अध्याय तीस (३०) मन्त्र दो (२) प्रमाणम् !



!!इन्द्र देव मन्त्र दर्शन!! ३!!७०!!



!! ओं!! त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूर मिन्द्रंम्। हूवयामि शक्रम्पूरु हूत मिन्द्र गुं स्वस्ति नो मघवा-धात्विन्द्रः !ओं!॥ ३ ॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप! सर्वदेवो के महाराजा भगवान् इन्द्रदेव! आपको श्रेष्ट विधिसे सर्व यज्ञो में आमन्त्रण होता है!

अनेक महायज्ञो सें पूजा किये हुये महान् समर्थ महान् पराक्रमी महान् ऐश्वर्यवान्



स्वर्गलोक के महाराजा भगवान् इन्द्रदेव ! आपको सप्रेम सर्वका रक्षण करने के लिये हम आवाहन आमन्त्रण करते है ! आप हमारा सर्वका सुन्दर सुरक्षण करके हमारा परम कल्याण करो. ॥ ३ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय वीस (२०) मन्त्र पचास (५०) प्रमाणम् !

!! सर्व देव आवाहन मन्त्र दर्शन !!४!! ७१ !!



!!ओं!! आवो देवा स इ महे वामम्प्रयत्य- ध्वरे। आवो देवा स आशिषो जज्ञिया सो हवामहे ! ओं ! ॥ ४ ॥





— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप ! सर्व देवो ! हमारा प्रारम्भ किया हुवा महायज्ञ में आप सर्वका हम ध्यान आवाहन करतें है !

आप सर्व पधारो हम आपकी प्रार्थना करतें है कि हमारा महायज्ञ सुन्दर विधिसें सर्व साहित्य सें संपूर्ण करो !

और महा यज्ञ में सर्व देवो के और ब्राह्मणो के दिये हुये आशीर्वाद हमारी सर्व ईच्छाओ को सम्पूर्ण करो. और हमारा परम कल्याण करो ! ॥ ४ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चार (४) मन्त्र पांच (५) प्रमाणम् !

!!अग्निदेव मंत्रदर्शन !!५!!७२!!

!! ओं !! भद्रो नो अग्नि राहुतो भद्रा-
रातिः सुभगभद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रश-
स्तयः !ओं ! ॥ ५ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप अग्निदेव ! आप धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान, वैराग्य, और महान ऐश्वर्यवाला है हमारा महायज्ञ कल्याणकारी महान यश कीर्तिवाला करो.

हमारा यज्ञमें आवाहन यजन पूजन किये हुअे आप हमारा परम कल्याण करो !

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय १५ मन्त्र ३८ प्रमाणम् !



!! ओं !! धामच्छदग्नि रिन्द्रो ब्रह्मादेवो बृहस्पतिः । स चेतसो विश्वेदेवा जज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे ! ओं ! ॥ ६ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप अग्नि देव ! इन्द्र देव, ब्रह्मादेव, देवगुरु बृहस्पति देव, विश्वेदेवा देव, हे दिव्यशक्तिवाला सर्व देवो ! हमारा शुभ मंगल स्थानका और यज्ञका सुन्दर रीतसें सुरक्षण करो ! ॥ ६ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय १८ मंत्र ७६ प्रमाणम् !



!! ओं !! अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवा ना मुत मर्त्यानाम् ! इयक्ष माणा

भृगुभिः स जोखाः स्वर्जन्तु जजमानाः स्वस्ति ! ओं ! ॥ ७ ॥



—: अर्थ :—



हे परंब्रह्म स्वरूप अग्निदेव ! आप सप्रेम पधारो, देवो और मनुष्यो के यज्ञमें परंब्रह्मका और सर्व देवोका यजन पूजन करनेमें आप श्रेष्ठ सन्मार्ग दर्शक है,

भृगु आदि अनेक महर्षि सप्रेम यज्ञमें आपका यजन पूजन करते है,

आपके यजन करनेवाले हमारा और हमारे यजमानोका दिव्य स्वर्ग मोक्ष देकर आप उन सर्वका परम कल्याण करो. ॥७॥

। शुक्ल यजुर्वेद् अध्याय १७ मंत्र ६९ । प्रमाणम् !



!! ओं !! प्रात रग्निम्प्रात रिन्द्र गुं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रात रश्विना ! प्रातर्भगम्पूखणं ब्रह्मणरपतिम्प्रातः सोम मुत रुद्रगुं हुवेम. !ओं! ॥ ८ ॥



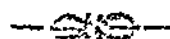
— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप ! अग्निदेव, इन्द्रदेव, मित्रावरुणदेव, अश्विनी देव, भगदेव पूखा देव, ब्रह्मणस्पति देव, सोम देव ! अने महारुद्र देव, ! हे सर्व देवो ! प्रातः कालमें हम वारंवार आपका हम ध्यान वन्दन स्तुतिपूजन करते है ! ॥ ८ ॥

! शुक्ल यजुर्वेद अध्याय ३४ मंन्त्र ३४ ! प्रमाणम् !



!! ओं !! इंद्राग्नी मित्रा वरुणा दितिंगुंस्वः पृथ्वीन्द्याम्मरुतः पर्वतां अपः। हुवे विष्णु म्पूखणम्ब्रह्मणस्पति म्भगन्नुशगुं सगुं सवितार मूतये ! ओं ! ॥ ९ ॥



—: अर्थ :—

हे परब्रह्म स्वरूप इन्द्रदेव ! अग्निदेव, मित्रावरुणदेव, अदितिदेव, और आदित्य देव, पृथ्वी के देव, स्वर्ग के देव, मरुत देव, पर्वत देव, वरुण देव, विष्णुदेव, पूखा देव, ब्रह्मणस्पति देव, भगदेव, और सवितादेव, अे सर्व देवका हम ध्यान वन्दन स्तुति पूजन करतें है ! ॥ ९ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेतीस (३३) मंत्र उनपचास (४९) प्रमाणम्



!! ओं !! इन्द्रवायू बृहस्पतिम्मित्राग्निम्पूखणम्भगम्। आदित्यान्मारुतं गणम्॥१०॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मस्वरूप ! इन्द्रदेव, वायुदेव, बृहस्पतिदेव, मित्रदेव, अग्निदेव, पूखादेव, भगदेव, बार आदित्यदेव, उन पचास मरुतगणदेव, अे सर्व देवका हम ध्यान वन्दन स्तुति पूजन करते हैं ! ॥ १० ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय (३२) मंत्र (४५) प्रमाणम् ।



!! ओं !! जे देवा अग्निनेत्राः पुरः सदस्ते-भ्यः स्वाहा। जे देवा जमनेत्रा दक्षिणा सदस्तेभ्यः स्वाहा। जे देवा विश्वदेव नेत्राः पश्चात् सदस्तेभ्यः स्वाहा। जे देवा मित्रा वरुणनेत्रा वा मरुन् नेत्रा वोत्तरा सदस्तेभ्यः स्वाहा। जे देवाः सोम नेत्रा उपरी सदो दुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ॥ ११ ॥



—: अर्थ :—

हे परब्रह्मस्वरूप पूर्व दिशामें अग्निदेवके साथ रहनेवाले जो देव है उनको हम नमस्कार करते है.

दक्षिण दिशामें यमराजा को साथ रहने-वाले जो देवो है उनको हम नमस्कार करते है.

पश्चिम दिशामें विश्वेदेवको साथ रहने वाले जो देवो हैं उनको हम नमस्कार करते है.

उत्तर दिशामें मित्रावरुण और मरुत देवको साथ रहनेवाले जो देवो है उनको हम नमस्कार करते हैं.

देवलोकके उपर सोमदेवको साथ रहनेवाला देवो है उन सर्व देवको हम नमस्कार करते हैं. ॥ ११ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय (९) मन्त्र (३६) प्रमाणम् !



!! ओं !! जे देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्या मध्येकादशस्थ। अप्सुक्षितो महिनैका दशस्थ ते देवासो जज्ञमिमं जुरवध्वम् ॥१२॥



—: अर्थ :—

हे परब्रह्म स्वरूप ! महान् ऐश्वर्यवाला जो देवताओ स्वर्गलोकमें ग्यारा स्वरूपमें रहते है, महान् ऐश्वर्यवाला जो देवताओ अन्तरीक्ष लोकमें ग्यारा स्वरूपमें रहते है. महान् ऐश्वर्यवाला जो देवताओ पृथ्वोमें ग्यारा स्वरूपमें रहते है. वह सर्वदेवो हमारा यज्ञ का सुरक्षण करो और हमारा परम कल्याण करो ॥ १२ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय सात (७) मन्त्र उन्नीस (१९) प्रमाणम् !



। ओं । जे देवा मनोजाता मनोयुजो दक्ष क्रतवस्तेनो वन्तु तेनः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥

हे परब्रह्म स्वरूप ! जो देवो हमारा मन से उत्पन्न हुवा है और जो देवो हमारा मनमें सदा निवास करते है. जो देवो हमको दिव्य पुण्य सत्कर्म करनेको प्रेरणा करते है. वह सर्व देव हमारा सुरक्षण करो और हमारा परम कल्याण करो ॥ १३ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चार (४) मंत्र ग्यारा (११) प्रमाणम् !!



!! ओं !! अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयन् तन् मे राध्यताम् ।
इद महमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ १४ ॥

— : अर्थ : —

हे परब्रह्म स्वरूप ! व्रतपति अग्निदेव ! में व्रत करता हुं, वह व्रत संपूर्ण करनेमें समर्थ शक्तिवान् में रहुं, और मेरा किया

हुवा घृत मुझको अच्छा रीतसे सिध्ध हो जाय यह असत्य नाशमान संसारसे में सत्य स्वरूप परंब्रह्मको पाउं वैसा करो ॥ १४ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय अेक (१) मंत्र पांच (५) प्रमाणम् !



!! ओं !! तनुपाअग्नेसि तन्वम् मे पाहि आयुर्दा अग्ने स्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि अग्ने जन्मे तन्वा ऊनन् तन् म आपृण ॥ १५ ॥



–: अर्थ :–

हे परंब्रह्म स्वरूप अग्निदेव ! शरीरका रक्षण करनेवाळा आप हमारा शरीरका रक्षण करो ! हे अग्निदेव ! आयुष्यकी वृध्धि

करनेवाला आप हमारा आयुष्यकी सदा वृध्धि करो ! हे अग्निदेव ! तेजको देनेवाला आप हमको सदा तेजकी वृध्धि करो ! और हे अग्निदेव ! हमारा शरीर मन्दिरमें जो तत्व अपूर्ण हो आप सदा वो सर्व तत्व को संपुर्ण वृध्धि करो ॥ १५ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तीन (३) मन्त्र सत्तर (१७) प्रमाणम् !



!! ओं !! आकूति मग्निम् प्रयुजगुं स्वाहा मनो मेधा मग्निम्र प्रयुजगुं स्वाहा चित्तं विज्ञात मग्निम् प्रयुजगुंस्वाहा वाचो विधृति मतिमग्निम् प्रयुजगुं स्वाहा प्रजापतये मनवेस्वाहाग्नये वैश्वानराय स्वाहा ॥ १६ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! अखिल विश्वमें व्यापक प्रकाशक आप है. सर्व प्राणी मात्रके आत्मबलको उन्नति करनेवाला आप है, मनुष्य का मनोवल और बुध्धि शक्ति की वृध्धि करनेवाला आप है. चित्तको विचार शक्ति का प्रकाश करनेवाला आप है. वाणीकी प्रवचन शक्तिकी वृध्धि करनेवाला आप है, प्राणी मात्रका शरीर मंदिरमें वैश्वानर अग्निस्वरूप आप है, सर्व प्रजाका पालन रक्षण करनेवाला आप है, ऐसा परंब्रह्मदेव को हम सप्रेम नमस्कार करते है ॥ १६ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय ग्यारा (११) मन्त्र सोल (१६) प्रमाणम् !



!! ओं !! अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्जो ज्योति र्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्जो वर्चो ज्योति र्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्जः सूर्जो ज्योतिः स्वाहा ॥ १७ ॥



—: अथ : —

हे परंब्रह्मदेव ! आप अग्निदेवमें चैतन्य प्रकाश स्वरूप हे, और सूर्यदेवमें चैतन्य ज्योति स्वरूप है, सूर्य अग्नि तेज स्वरूप आप परंब्रह्मदेवका हम यजन पूजन करते है. ॥ १७ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तीन (३) मन्त्र नव (९) प्रमाणम् !



!! ओं !! अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ १८ ॥

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप ! अग्निदेव, वायुदेव, सूर्यदेव, चन्द्रदेव, अष्टवसुदेव, ग्यारा रुद्रदेव, बारा आदित्यदेव, उनपचास मरुत गणदेव विश्वेदेवादेव, बृहस्पतिदेव, इन्द्रदेव, वरुणदेव, हे सर्व देवो ! यज्ञ करनार यजमानो का और हमारा परम कल्याण करो ॥१८॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौदा (१४) मन्त्र वीस (२०) प्रमाणम्!

!! ओं !! यावन्तो देवास् त्वयि जातवेदस् तिर्यन्चो घ्नन्ति पुरुषस्य कामान्। तेभ्योहं भागधेयं जुहोमि ते मा तृप्ताः सर्वैः कामैस् तर्पयन्तु स्वाहा ॥

या तिरश्चो निपद्यते हं विधरणी इति। तां त्वा घृतस्य धारया यजे संराधनी महद्युं स्वाहा ॥ १९ ॥

—:अर्थ:—

हे परंब्रह्म स्वरूप ! अग्निदेव में निवास करनेवाला हे तिर्यच देवो ! और हे तिर्यच देवीयो ! आप सर्व मनुष्यका भाग्योदयमें विघ्न करते है, और मनुष्योका मनकी सर्व ईच्छाओका नाश करते है हम वह सर्व

तिर्यंच देवोको और तिर्यंचदेवीयो को भाग मिले अैसो घीकी धारासे अग्निमें होम आहुति देते हैं, वह आहुतिसे तृप्त हुये सर्व तिर्यंच देवो और तिर्यंच देवीयो हमारा पर प्रसन्न होकर हमारी सर्व ईच्छाओको संपूर्ण करो हमारा परम कल्याण करो. ॥ १९ ॥



शुक्ल यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मण चौद कान्ड (१४) वृहदारण्यक उपनिषद्‌ अध्याय (६) ब्राह्मण तीन (३) मंत्रअेक (१) प्रमाणम् !



!! ओं !! प्रजापते नत्व देतान् न्यनून्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव । जत् कामास्ते

जुहुमस् तन्नो अस्तु वयगुं स्याम पतयो रईणाम् ॥ २० ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप प्रजापति देव ! आप से दुसरे अनेक जातिके अनेक रूपके भूत भविष्य, वर्तमानके कोईभि देव हमको विघ्न दुख करे नहि. हम ऐसी भावनासे मंत्र पढ करके अग्नि में आहुति देते है. हमारी सर्व ईच्छाओ आप संपूर्ण करो. हमारा जोवन ऐश्वर्यवान् धनवान् पुत्रवान् करो हमारा परम कल्याण करो ॥ २० ॥



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेवीस (२३) मन्त्र पांसठ (६५) प्रमाणम् !



!! ओं !! अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्न । जुजोध्यस्मज् जुहुराणमेनो भूयिष्ठान् ते नम उक्ति विधेम ॥ २१ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप प्रकाशक अग्निदेव ! हमको ऐश्वर्य सुख और ब्रह्मज्ञान आपो. हमारा सर्व कार्य आप जानते है. हमारा घोर महापाप कर्मका नाश करो. हम आपको अनंत कोटि नमस्कार प्रार्थना करते है. ॥ २१ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय पांच (५) मंत्र छत्रीस (३६) अध्याय सात (७) मन्त्र तेंतालीस (४३) अध्याय चालीस (४०) मंत्र सोल (१६) प्रमाणम् !



!!प्राणप्रतिष्ठा मंत्रदर्शन !!७३!!



!! ओं !! पुनर्मनः पुनरायु र्म आगन् पुनः प्राणः पुनरात्माम आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रम् म आगन् न। वैश्वानरो अदब्ध स्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्‌-॥२२॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप अग्निदेव ! इस शरीर सें चला गया हुवा मन फिर सें पिछे आओ, इस शरीर सें चला गया हुवा आयुष्य फिरसें पिछे आओ, इस शरीरसें चला गया हुवा (नेत्र) चक्षु फिरसें पिछे आओ, इस शरीर सें चला गया हुवा कान फिरसें पिछे आओ. इस शरीर मंदिरमें से चल गया हुवा वैश्वानर अग्निदेव फिरसें पिछे आओ, चेतन शरीरका रक्षण करनेमें महासमर्थ हे अग्निदेव! हमारा शरीर सें किये हुवे सर्व पापसे मुक्त करो हमारा परम कल्याण करो ॥ २२ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चार (४) मन्त्र पन्दरा (१५) प्रमाणम् !

!! सर्व पाप नाशक मन्त्र दर्शन !! ७४ !!



!! ओं !! जद्देवा देव हेडनन् देवा सश्चकृमा वयम्। अग्नि र्मा तस्मा देनसो विश्वान् मुंचत्वग्ुं हसः !ओं! स्वाहा ॥२३॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप अग्निदेव ! हे सर्वदेव! हमने कोइभि देवोका अपराध किया हो वह पापसे और सर्व महापापसे हमको परं पवित्र करो हमारा परम कल्याण करो ॥२३॥



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय बीस (२०) मन्त्र चौदा (१४) प्रमाणम् !



!! ओं !! जदि दिवा जदि नक्त मेना-ग्ंसि चकृमा वयम् । सूर्जो मा तस्मा देनसो विश्वान् मुंचत्वग्ं हसः !! ओं !! स्वाहा ! !! २४ !!



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप वायुदेव ! हे सर्वदेव! हमने दिनमें और रात्रिमें कोइभि पापकर्म किया हो वह पापसें अन्य सर्व महा पापसें हमको परं पवित्र करो हमारा प॰ कल्याण करो, ॥ २४ ॥



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय वीस (२०) मन्त्र पंदरा (१५) प्रमाणम् !



!! ओं !! जदि जाग्रद्द यदि स्वप्न अेना-गुंसि चकृमावयम्। सूर्जो मा तस्मा देन सो विश्वान् मुंचत्वगुं हसः !!ओं!! स्वाहा ! ॥२५॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप सूर्यदेव ! हे सर्वदेवो ! हमसे जाग्रतमें और स्वप्नमें कोई भि पाप कर्म हुआ हो वह सर्व पाप और महापाप से हमको परं पवित्र करो. हमारा परम कल्याण करो. ॥ २५ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय वींस (२०) मन्त्र सोला (१६) प्रमाणम् !



!! ओं !! जद्ग्रामे जदरण्ये जत् सभायां जादिन् द्रिये। जच्छूद्रे जदर्जे जदेनश्‌ च-कृमा वयम्। जदे कस्याधि धर्मणि तस्या-वय जनमसि !! ओं !! स्वाहा ! ॥ २६ ॥



— : अर्थ : —

हे परं ब्रह्मदेव! हमसें जो देशमें गांवमें नगरमें शहेरमें वनमें महावनमें और स्त्री पुरुषोकी महासभाओमें शरीरको ज्ञानेन्द्रियोसे कर्मेन्द्रियोसे अशुभ मन संकल्पसे बुध्धिके दुष्ट विचारसे वाणिके असत्य, निन्दा, चाडी, श्राप, विभत्स दुष्ट भाषणसे, नेत्र की कुदृष्टि देखनेसे कानसे दुष्ट वचनो सुनने

से, वेदशास्त्रसे अशुध्ध अभक्ष पदार्थ खानेसे पीनेसे सुंघनेसे, स्पर्श करनेसे शरीर इन्द्रियोसे दुष्ट कार्य करनेसे स्त्री पुरुषके धर्म अेकतामें विघ्न करनेसे वैश्यजातिसे, शुद्र जातिसें जो हमने पाप कर्म किये हो, वह सर्व महापापो से हमको परं पवित्र करो और हमारा परं कल्याण करो. ॥ २६ ॥

! शुक्ल यजुर्वेद अध्याय वीस (२०) मंन्त्र सत्तर (१७) ! प्रमाणम् !



!! ओं !! देवकृतस्यै नसो वयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोवयजनमसि पितृकृतस्यै नसो वयजनमस्यात्मकृतस्यै नसो वयजनमस्येनस अेनसो वयजनमसि । जच्चाह-

मेनोविद्वांश् चकार जच्चाविद्वांस् तस्य सर्वस्यै नसो वयजनमसि!! ओं !! स्वाहा! ॥ २७ ॥



— : अर्थ : —



हे परं ब्रह्मदेव! हमने देवोका अपराध पाप किया हो वह सर्वसे हमको परं पवित्र करो.

सर्व मनुष्यके किये हुअे अपराध पापोसे हमको परं पवित्र करो.

पितृदेवके किये हुअे अपराध पापोसे हम को परं पवित्र करो, और अपने देहसे किअे हुअे छोटे वडे सर्व पाप महापापसे हमको महान् परं पवित्र करो. !

और अन्य दुसरे जान करके अजान कर के सर्व किये हुवे पाप महापापसे हमको परं पवित्र करो हमारा परम कल्याण करो ॥२७॥

! शुक्ल यजुर्वेद् अध्याय आठ (८) मंत्र तेरा (१३) ! प्रमाणम् !



!! ओं !! मुंचन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्या दुत। अथो जमस्य पडवीशात् सर्वस्माद् देवकिल्विपात् !! ओं !! स्वाहा ! ॥ २८ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव! हमको सर्व प्रकारका श्रापो से पापो से मुक्त करो.

और जलमें किअे हुअे वरुणदेवका पापो

से और यमराजा का आज्ञाभंग किये हुवे पापो से अन्य सर्व प्रकारके पापो से महा पापो से हमको मुक्त करो परं पवित्र करो. हमारा परम कल्याण करो. ॥ २८ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय बारा (१२) मन्त्र (९०) प्रमाणम् !



!! द्रुपदा गायत्रि मन्त्र दर्शन !! ७५ !!



!! ओं !! द्रपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतम् पवित्रेणे वाज्य मापः शुन्धन् तु मेनसः !! ओं!! स्वाहा ॥२९॥



—:अर्थ:—

हे परंब्रह्म स्वरूप वरुणदेव ! स्नान करने से मनुष्य शरीरके मल पापसे परं पवित्र होता है.

अग्निमें उष्ण करनेसे और छाननेसे घी परं पवित्र होता है, पेढसे पका हुवा फल मुक्त होता है.

हे वरुणदेव ! वैसे हमारा सर्व पापको दूर करो हमको परं पवित्र करो ॥ २९ ॥ शुक्ल यजुर्वेद अध्याय वीस (२०) मंत्र वीस (२०) प्रमाणम् !



!!महापावन मन्त्र दर्शन !!७६!!

!! ओं !! पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहि मा ॥ ३० ॥

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मस्वरूप सर्वदेवो ! हमको परं पवित्र करो. हमारा मन हमारी बुध्धि परं पवित्र करो.

हे अग्निदेव ! हमको सर्व मनुष्यो को महान पवित्र करो हमारा परं कल्याण करो ॥ ३० ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय उन्नीस (१९) मंत्र उनचालीस (३९) प्रमाणम् !

!! ओं !! चित् पति र्मा पुनातु वाक्पति र्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्जस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य जत् कामः पुने तच्छ-केयम् ॥ ३१ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप ! चित्तकादेव ! हमको पवित्र करो, हे वाणीकादेव ! हमको पवित्र करो, हे सविता देव ! हमको पवित्र करो, हे पवित्रपते ! हे परंब्रह्मदेव ! भगवान् सूर्य-देवका संपूर्ण तेजस्वी रश्मी किरणो से हमको

पवित्र करो. हमारी सर्व इच्छाओ संपूर्ण करो हम सर्वका परं कल्याण करो. ॥३१॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चार (४) मन्त्र-चार (४) प्रमाणम् ।

!! ओं !! मनसः काम माकूर्ति वाचः सत्य मशीय । पशूनागुं रूप मन्नस्य रसो जशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥३२॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! हमारी वाणी सत्य कहति हे हमको उत्तम यश, किर्ति, श्री, लक्ष्मी, प्रापूत हो. सुन्दर गौ, वलद, हथ्थी, घोडा, वाहन सुख प्राप्त हो. हमारो आत्म शक्ति

वलवान हो. हमारां मनकी सर्व इच्छा, संपूर्ण करो. ॥३२॥

शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय उनचालीस (३९) मन्त्र चार (४) प्रमाणम् !

!!सर्व रक्षण मन्त्र दर्शन !!७७!!

!! ओं !! जतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥३३॥

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव ! विश्वमें आपकी सर्व प्रकारकी महाशक्ति विभूतियोका भयसे सर्वत्र हमारा सुरक्षण करो.

हमारी सर्व प्रजाओंका, सर्व प्रकारके भयसे रोग दुखसे हमारा रक्षण करो परम कल्याण करो.॥३३॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय छत्तीस (३६) मन्त्र बाईस (२२) प्रमाणम् !

!!सुवर्ण महिमा मन्त्र दर्शन!७८!

!! ओं !! आयुष्यं वर्चस्य गुं रायस् पोख मोद् भिदम् । इदगुं हिरण्यं वर्चस्व जेत्राया विशता दुमाम् ॥३४!!

—: अर्थ :—

यह सुवर्ण हमको जय देनेवाला है

आयुष्य की तेजको धनको वृध्धि करनेवाला है आत्मबलकी जाग्रति करके अैश्वर्य सुख आनंदका प्रकाश देनेवाला है ॥३४॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चोत्तीस (३४) मन्त्र पांच (५) प्रमाणम् !

!! ओं !! न तद् रक्षागुंसी न- पिशाचास् तरन्ति देवाना मोजः प्रथमं जगुं ह्येतत्। जो विभर्ति दाक्षायणगुं हिरण्यगुं स देवेषु कृणु ते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणु ते दीर्घमायुः ॥३५॥

—: अर्थ :—

यह सुवर्ण सर्व देवोका मुख्य तेज है.

सिध्ध किये हुवे वेद मन्त्रोसें सुवर्ण अलंकार शरीर पर धारण करने वालोको भूत, प्रेत, पिशाच्, राक्षस, रोग, दुःख, कष्ट नहि दे सक्ते हैं सुवण भस्म, मात्रा, वर्ख खानेसे देवलोकमें मनुष्यलोकमें समर्थ शक्तिवान् होता है दीर्घकाल संपूर्ण आयुष्य संपूर्ण करता है. ॥३५॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चोत्तीस (३४) मंत्रअेकावन (५१) प्रमाणम् !

!! ओं !! जदा वधनन् दाक्षायणा हिरण्यगुं शतानीकाय सुमनस्य मानाः । तन्म आवध्नामि शत शारदायायुष्मान् जर दष्टि र्जथासम् ॥ ३६ ॥

— : अर्थ : —

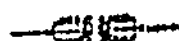
सिध्ध किये हुअे वेद मन्त्रसे सुवर्ण अलंकार शरीर पर धारण करनेवाले स्त्री पुरुष आरोग्यवान् आनंदवान् वलवान् होकर सो वर्षका आयुष्य संपूर्ण करते है.

वह सुवर्ण अलंकार आरोग्य, आनंद, वल, शुक्र-सो वर्ष दीर्घायु संपूर्ण करनेको हम धारण करते है. ॥३६॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चोत्तीस (३४) मन्त्र बावन(५२) प्रमाणम् !



!परब्रह्म मन्त्र ज्ञान दर्शन !७९!



!! ओं !! वेदाहमेतं पुरुषं महान्त मा

दित्य वर्णन् तमसः परस्तात् । तमेव विदि-त्वाती मृत्यु मेती नान्यः पन्था विद्यते यनाय ॥३७॥



— :अर्थ :—

मायासे पर सूर्य सम तेजोमय महान् परंब्रह्म देवको हम जानते है.

वह परंब्रह्मदेव में हुं अैसा अभेद अैक्य ज्ञान जान करके जन्म मर्णवाला भव संसार तर जाते है. मुमुक्षु मनुष्यो को मोक्षपद पानेको दुसरा कोई माग नहि हैं, ॥३७॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय अेकत्तीस (३१) मन्त्र अठारा (१८) प्रमाणम्!



!! ओं !! ब्रह्म सूर्य्य समं ज्योतिः ॥३८॥



—: अर्थ :—

परंब्रह्म देव भगवान् प्रत्यक्ष सूर्य सम अपार चैतन्य महान् ज्योति प्रकाशक व्यापक है ॥ ३८ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेवीस (२३) मंत्र (४८) प्रमाणम् ।



!! ओं !! द्यावा भूमीन् जन यन् देव अेकः ॥३९॥

—: अर्थ :—

स्वर्ग आदि सात लोक पृथ्वी आदि सात पाताल लोक अखिल ब्रह्मांड को उत्पन्न करनेवाला अद्वितीय सर्व व्यापक परंब्रह्मदेव अेकहि है. ॥३९॥

शुक्ल यजुर्वेद. अध्याय सत्तर (१७) मंत्र (१९) प्रमाणम् !



!! ओं !! न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः ॥४०॥



—: अर्थ :—

यह परंब्रह्मका महान् यश अखिल ब्रह्माडमें सर्वव्यापक है ! वह परंब्रह्म देवकी मन कल्पित प्रतिमा मूर्ति नहि हो सकि है. ॥४०॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय बत्तीस (३२) मन्त्र (३) प्रमाणम् !



!! ओं !! ईशा वास्य मिदगुं सर्वम् ।।४१।।



— : अर्थ : —

अखिल ब्रह्मांड में परंब्रह्म देव सर्व व्यापक है. ।।४१।।



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चालीस (४०) मंत्र (१) प्रमाणम् !



!! ओं !! खं ब्रह्म ! ।।४२।।



— : अर्थ : —

परंब्रह्म देव आकाश के समान सूक्ष्म और सर्व व्यापक है! ब्रह्म मन्त्र ओम्कार का में ब्रह्म हुं लक्ष्य के साथ जप करो ! ।।४२।।

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय (४०) मंत्र (१८) प्रमाणम् !



!!यजमान आशीर्वाद मन्त्र दर्शन !!८०!!



!! ओं !! ध्रुवासि ध्रुवोयं जजमानोस्मिन् नायतने प्रजया पशुभि र्भूयात् ॥४३॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! जैसे स्वर्गलोकमें ध्रुव मंडॅल स्थिर और सुखमय है. वैसे देव ब्राह्मणका यजन पूजन करनेवाला यह यजमान यह लोक यह स्थान में गौ, वलद,

घोडा, हाथो, राजेश्री सुखोसे और पुत्र प्रजाका आनन्दसें सदा सुखरूप स्थिर रहो. ॥४३॥



शुक्ल यजुर्वेद अध्याय पांच (५) मंत्र (२८) प्रमाणम् !



!!महादेव मन्त्र दर्शन!!८१!!



!! ओं !! नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥४४॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप ! भगवान् शंकर

महादेव हम आपको नमस्कार करते है.

सर्वको सुख देनेवाले, सर्वको शांति देनेवाले, महामोक्ष देनेवाले हमारा परम कल्याण करनेवाले, भगवान् शकर महादेवको हम अनेक नमस्कार करते है. ॥४४॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय सोल (१६) प्रमाणम् !



!! ओं !! त्र्यम्बकं जजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुक मिव वन् धनान् मृत्यो मुंक्षी यमामृतात् ॥४५॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप ! त्रिनेत्र धारी भगवान् शंकर आपका हम यजन पूजन करते है

आप हमारी सुकिर्ति और ऐश्वर्य की वृध्धि करो. जैसे पेढसे पका हुवा फल मुक्त होता है वैसे हमको संसार बन्धनसें मुक्त करो हम सर्वको परंब्रह्म पद प्राप्त करो. ॥४५॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तीन (३) मंत्र (६०) प्रमाणम् !



!! ओं !! हराय मृडाय शर्वाय शिवाय भवाय महादेवायोग्राय भीमाय पशुपतये रुद्राय शंकरायेशानाय स्वाहा ॥४६॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्म स्वरूप ! सर्व भक्तोका दुःख दूर करनेवाला, सर्वको सुख देनेवाला,

सर्वको शान्ति देनेवाला, सर्वको आनंद देनेवाला, सर्वको मोक्ष देनेवाला, दुष्टोको दमन करनेवाला, महान् देवोका देव, सत् पुरुषोका रक्षण करनेवाला, सर्व पाप, दुखको नाश करनेवाला, ईशान दिशाका अधिपति, महारुद्र भगवान् शंकरको हम सप्रेम नमस्कार करते है. ॥४६॥

ऋग्वेद आश्वलायन गृह्यसूत्र ४-९-१७ प्रमाणम् !



!!सर्प नागदेव मन्त्र दर्शन!!८२!!



!! ओं !! नमोस्तु सर्पेभ्यो जे केच पृथ्वी

मनु ! जे अन्तरिक्षे जे दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥४७॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मस्वरूप ! सर्व सर्प नागदेवो ! महावन, उपवन, महागंगा, गंगा. गिरि, पहाड पर्वत, मेरुमंडल पृथ्वी, सप्त पाताल लोकमें रहनेवाले आपको हम नमस्कार करते है.

मृत्युलोकमें, अन्तरीक्ष लोकमें, भुवर्लोकमें, सूक्ष्म सृष्टिमें रहनेवाले आपको हम नमस्कार करते है.

स्वर्गादि सप्तलोक, कैलासलोक वैकुंठलोक अखिल ब्रह्मांड, दिव्यलोकमें रहनेवाले

आप सर्व सर्प-नागदेवोको सप्रेम हम नमस्कार करते हे. ॥ ४७ !!

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेरा (१३) मंत्र (६) प्रमाणम् !

!! ओं !! जाइखवो जातुधानानां जेवा वनस्पतींरनु । जेवा वटेखु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ४८ ॥

— : अर्थ : —

हे परब्रह्मस्वरूप ! सर्व सर्प नागदेवो ! आप मृत्युलोकमें अपार मनुष्योको तिक्ष्ण डंस करके महा दुःख देनेवाले हे.

यातुधान नामके सर्प भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षसोका रूप धारण करके महा कष्ट देते है.



सुन्दर सुगंधवाला शीतल चन्दन वृक्षमें रहनेवाले, वटवृक्षके मूलमें रहनेवाले वृक्ष की डालोमें फिरनेवाले नागरवेल और वेलीओमें फिरनेवाले वनस्पतियोमें रहने वाले, पृथ्वीके पोलमें सोनेवाले, विषधर, फणिधर, मणिधर, सर्व सर्प नागदेवको सप्रेम हम नमस्कार करते है ॥ ४८ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेरा (१३) मन्त्र-(७) प्रमाणम् !



!! ओं !! जे वा मीरोचने दिवो जे वा सूर्जेस्य रश्मिखु । जे खामप्सुसदस् कृतन् तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ४९ ॥



— : अर्थ : —

हे परब्रह्म स्वरूप ! सर्व सर्प नागदेवो ! आप दिव्य तेजोपुंज लोकमें रहनेवाले है. मनुष्योसे अद्रश्य रहनेवाले है.

भगवान् सुर्यदेवके तेजोपूंज रश्मिकिरणो में रहनेवाले है.

महागंगा महासरोवर जलसृष्टिमें रहनेवाले है.

सर्व सर्प नागदेवको हम सप्रेम नमस्कार करते है. ॥ ४९ ॥

! शुक्ल यजुर्वेद अध्याय तेरा (१३) मन्त्र (८) ! प्रमाणम् !



!! स्वस्ति मन्त्र दर्शन !!८३!!



!! ओं !! स्वस्ति न इन्द्रो वृध्धश्रवाः स्वस्ति नः पूरवा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ता रक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर् दधातु ॥ ५० ॥



—: अर्थ :—

हे परब्रह्मस्वरूप ! महान् किर्तिवाला, स्वर्गलोकके देवोका महाराजा इन्द्रदेव ! हमारा परम कल्याण करो,

हे सर्वज्ञ पुरवादेव ! हमारा परम् श्रेय करो, दुखको दुर करनेवाला हे गरुडदेव ! हमारा सर्व प्रकारसे शुभ करो.

सर्व देवोका सद्गुरुदेव हे बृहस्पतिदेव ! हमारा सदा सुमंगल करो ॥ ५० ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय पचीस (२५) मन्त्र (१९) प्रमाणम् !

!! भद्र मन्त्र दर्शन !! ८४ !!

!! ओं !! भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम् पश्ये माक्षभि र्यजत्राः ! स्थिरै रंगै स्तुष्टु वांसं सस्तनू भि र्व्यशे महिदेव हितं जदायुः ॥ ५१ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्म स्वरूप ! सर्वदेवो ! हम कान से अच्छा सुने, हम नेत्रोसे अच्छा देखे, हम शरीरके बलवान् अंगोसे आपका यजन पूजन स्तवन करे, हमारा आयुष्य रहे वहां तक आप हमारा पर सदा सुप्रसन्न रहो. ॥ ५१ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय पचीस (२५) मंत्र (२१) प्रमाणम् !

!! स्तुति मन्त्र दर्शन !! ८५ !!

!! ओं !! जनूमे छिद्रं चक्षुखो हृदयस्य

मनसो वाति तृणम् बृहस्पति में तद्द् दधातु।
शन्नो भवतु भुवनस्य जस्पतिः ॥ ५२ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! हे अखिल ब्रह्मांडना अधिपति ! हमारा शरीरसे, नेत्रोसे, मनसे, बुध्धिसे, चंचल चित्तसे, जो कोई दोषहुवा हो वह दूर करो, हमारा सर्व कार्य संपूर्ण करो, हमारा परम कल्याण करो. ॥ ५२ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय छत्तीस (३६) मन्त्र दो (२) प्रमाणम् !

!!सुखशान्ति मन्त्र दर्शन!!८६!!

!! ओं !! शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा। शन् न ईन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः ॥ ५३ ॥

— अर्थ —

हे परंब्रह्मस्वरूप ! हे मित्रदेव ! हमको शान्ति दो, हे वरुणदेव ! हमको सुख दो ! हे अर्यमादेव ! हमको आनन्द दो. हे इन्द्र देव ! हमको सुमंगल दो, हे देवगुरु बृहस्पतिदेव ! हमारा परं श्रेय करो, हे उरुक्रम विष्णु भगवान् ! हमारा कल्याण करो ॥५३॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय छत्तीस (३६) मन्त्र नव (९) प्रमाणम् !

!! सुमंगल आशीर्वाद मन्त्र दर्शन !! ८६ !!

!! ओं !! आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायता माराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धि जोंखा जिष्णु रथेष्टाः स भेयो जुवास्य जजमानस्य वीरो जायतान् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वरे खतु फलवत्यो न औखधयःपच्यन् तां जोगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ५४ ॥

— : अर्थ : —

हे परं ब्रह्मदेव ! हमारा देशमें तप करने वाले, वेद पढनेवाले, यज्ञ करनेवाले, ब्रह्म तेजवाले, ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मणो उत्पन्न हो.

धनुर्विद्यामें धनुष्य बाण चढानेमें कुशल शत्रुओका नाश करनेमें महासमर्थ रथमें बैठ कर युध्ध करनेमें चतुर, चेतन, महारथी पराक्रमी क्षत्रि राजाओ उत्पन्न हो.

सुन्दर दुध देनेवाली गौ उत्पन्न हो,

बलवान् श्रेष्ठ बलद उत्पन्न हो,

तीव्र वेगसे चलनेवाले सुन्दर घोडाओ उत्पन्न हो.

सुन्दर स्वरूपसद्गुण संपन्न महासती स्त्री देवीयो उत्पन्न हो.

युध्ध प्रसंगे रथमें बैठके जय जय विजय प्राप्त करनेवाले अनेक महापुरुषो उत्पन्न हो.

यज्ञ करनेवाले यजमानके वहां सभाको शोभावे ऐसे समर्थ वीरपुत्रो उत्पन्न हो. हमारा देशमें हमारी ईच्छा अनुकुल समये समये सुन्दर वर्षा वर्षो, यव गेहु, डांगर, मुंग, चना, ऐसे अन्न, और सुन्दर फल आम, जांबु, अनार, द्राक्ष, रामफल, रंभाफल, सीताफल, जमरुख, श्रीफल, वृक्षवेलीयो उत्पन्न हो.

हमारा देशमें नूतन नवीन अनेक ईच्छीत वस्तुओ हमको प्राप्त हो.

और हमको जो मिला है वह सर्वका सदा है परंब्रह्मदेव सुरक्षण करो ॥ ५४ ॥

! शुक्ल यजुर्वेद अध्याय बावीस (२२) मंत्र (२२) ! प्रमाणम् !

!! सर्वदेव शान्ति मन्त्र !!
!! दर्शन !! ८७ !!

!! ओं !! द्यौः शान्तिरन्तरिक्षगुं शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोखधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर् विश्वेदेवाः शान्तिर् ब्रह्मशान्तिः सर्वगुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ५५ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप ! स्वर्गलोकके सर्व-देव ! हमको सुख शान्ति द्यो, हे अन्तरीक्ष लोकके सूक्ष्म सृष्टिके महासिध्ध देवो ! हमको सुख शान्ति द्यो, हे पृथ्वीके देव ! तपस्वि ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मणो ! हमको सुख शान्ति द्यो. जलके वरुणदेव ! हमको सुख शान्ति द्यो. हे सिध्ध औषधीके देव ! हमको सुख शान्ति द्यो. हे सिध्ध वनस्पतिके देव ! हमको सुख शान्ति द्यो. हे विश्वे देवा देव ! हमको सुख शान्ति द्यो. हे ब्रह्मदेव हमको सुख शान्ति द्यो. हे अखिल ब्रह्मांडके सर्व देव ! हमको सुख शान्ति द्यो. हे परं ब्रह्म-देव ! हमको सदा सनातन शान्ति द्यो.

हमको सर्वदा अविनाशी सुख शान्तिकी वृध्धि करो. ॥ ५५ ॥

शूक्ल यजुर्वेद, अध्याय छत्तीस (३६) मन्त्र सत्तर (१७) प्रमाणम् !

!सूर्यदेवस्तुति मन्त्र दर्शन !८८!

!! ओं !! उद्वयन् तमसग् परिस्वः पश्य न्तउत्तरम् । देवन् देवत्रा सूर्जमगन्मज्योति रुत्तमम् ॥ ५६ ॥

—: अर्थ :—

हे परब्रह्मदेव स्वरूप ! प्रत्यक्ष मंगलमूर्तिभगवान् सूर्यदेव । आप सर्व जगतके अन्धकारको दूर करके महान् प्रकाश करते है.

स्वर्गलोकमें सर्वदेवमें आप महान् प्रकाशक है. श्रध्धाभक्तिसे हम आपका सदा ध्यान पूजन दर्शन वन्दन करते है. आप हमारा परम कल्याण करो. ॥ (५६)

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय (२७) मन्त्र (१०)
अध्याय (३५) मन्त्र (१४)
अध्याय (३८) मन्त्र (२४)
प्रमाणम् !

॥ओं॥ उदुत्यन् जातवेद् सन्देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥ ५७ ॥

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेवस्वरूप ! प्रत्यक्ष मंगलमूर्ति भगवान् सूर्यदेव ! सर्व जगतमें आप महान् प्रकाशक है. सर्व मनुष्यका मन संकल्पको आप जानते है.

हम आपका श्रध्धा भक्तिसे ध्यानपूजन दर्शन वन्दन् करते है.

आप हमारी सर्व ईच्छाओको संपूर्ण करो. हमारा परम कल्याण करो. ॥ ५७ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय आठ (८) मन्त्र (४१) प्रमाणम् !

!! ओं ।। चित्रन् देवाना मुद्गादनी कन् चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावा पृथ्विअन्तरिक्षशुं सूर्ज आत्मा जगतस्तस्तु- खश्च ॥ ५८ ॥

—ः अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप ! प्रत्यक्ष मंगलमूर्ति भगवान् सूर्यदेव ! आप सर्व जगतका अंन्धारको दूर करके महान् प्रकाश करते है.

मित्रदेव ! वरुणदेव ! अग्निदेव ! अे सर्व देवके नेत्रमें आप चैतन्य प्रकाश देते है.

भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोकमें सर्व प्राणी मात्रका जीवनमें प्रकाश करते है.

सर्व जगतका मन संकल्पको आप जानते है.

स्थावर जंगम जगतके आत्मा आप है.

श्रध्धा भक्तिसे हम आपका ध्यान पूजन दर्शन वन्दन करते है.

आप हमारी सर्व ईच्छा संपूर्ण करो.

हमारा परम कल्याण करो. ॥ ५८॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय सात (७) मंत्र (४२) प्रमाणम् !

!! ओं !! तच्चक्षुर् देवहितम् पुरस्ताच् छुक्र मुच्चरत् पश्येमशरदः शतं जीवेम शरदः शतगुं शृणुयाम शरदः । शतम् प्रब्र-

वाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्
भूयश्च शरदः शतात् ॥ ५९ ॥

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप! प्रत्यक्ष मंगलमूर्ति भगवान् सूर्यदेव! परंब्रह्मदेवने आपको पूर्व दिशा में उंचे आकाशमें स्थापन किये है. आप प्रात: कालमें प्रगट होकर प्रकाश देकर सर्व जगतको महान् पवित्र करते है.

हम श्रध्धा भक्तिसे आपका ध्यान पूजन दर्शन वन्दन करते है.

हमारा आयुष्य सो वर्षका संपूर्ण हो.

हमारा नेत्रो सो वर्ष संपूर्ण देखो.

हमारा कान सो वर्ष संपुर्ण सुनो.

हमारा मुख सो वर्ष संपुर्ण प्रिय मधुर वचन बोलो.

हमारा सो वर्ष संपूर्ण महा अैश्वर्य सुख का अनुभव करो. सो से अधिक वर्ष हम संपूर्ण सर्व सुखका अनुभव करे.

आप हमारी सर्वे इच्छाओ संपूर्ण करो. हमारा परम कल्याण करो. आशीर्वाद द्यो. श्रध्धा भक्तिसे हम आपको वारंवार नमस्कार करते है ॥ ५९ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय छत्तीस (३६) मन्त्र चोवीस (२४)

॥ शिव संकल्प मन्त्र दर्शन ॥ ८९ ॥

॥ ओं ॥ जज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवन् तदु सुप्तस्य तथैवैति । दुरं गमन् जोतिखां ज्योतिरेकन् तन् मे मनः शिव संकल्प-मस्तु ॥ १ ॥ ६० ॥

— : अर्थ : —

हे परब्रह्मदेव ! यह मन जाग्रत अवस्था में महान विचार करता है.

यह मन स्वपना अवस्थामें जाग्रत जैसा अनेक प्रकारका आनन्द अनुभव करता है.

सुषुप्ति अवस्थामें भि शान्ति सुखका अनुभव करता है.

भूत, भविष्य, वर्तमान, आत्मज्ञान, स्मरण करता है.

प्राणी मात्रका शरीरमंदिरमें इन्द्रियो को प्रेरणा और प्रकाश करनेवाला मात्र मन अेक है.

वह हमारा मन मैं ब्रह्म हुं अैसा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ १ ॥ ६० ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौतीस (३४) मन्त्र अेक (१) प्रमाणम् !



!! ओं !! जेन कर्माण्यपसो मनिखिणो

जज्ञे कृण्वन्ति विदथेखु धीराः । जद् पूर्वे जक्ष मन्तः प्रजानान् तन् मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ २ ॥ ६१ ॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव! यह मन कर्मनिष्ठ पुरुषो को अनेक यज्ञ सत्कर्म कराता है.

ब्रह्मनिष्ठ पुरुषो को ज्ञानयोगमें ब्रह्म-ज्ञान बढाता है.

यह मन महासमर्थ है प्राणीमात्रका शरीर मंदिरमें सूक्ष्म और गुप्त है.

वह हमारा मन में ब्रह्म हुं ऐसा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ २ ॥ ६१ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौत्तीस (३४) मन्त्र दो (२) प्रमाणम् !



!! ओं !! जत् प्रज्ञान.मुत चेतो धृतिश् च जज् ज्योति रन् तर मृतम् प्रजासु । जस् मान् न ऋते किं चन कर्म क्रियते तन् मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ ३ ॥ ६२ ॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव ! यह मन महान् ज्ञान देनेवाला है. धैर्यवान् है. चेतन स्फुरणा देनेवाला है.

यह मन प्राणीमात्रको हृदय मन्दिर में ज्ञानेन्द्रियोको प्रकाश देनेवाला है.

यह मन परंब्रह्मदेवको प्राप्त करता है.

यह मन विना जगत्का कोई भि कार्य होता नहि है.

वह हमारा मन में ब्रह्म हुं ऐसा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ ३ ॥ ६२ ॥

शुक्ल यजुर्वेद् अध्याय चौत्तीस (३४) मन्त्र तीन (३) प्रमाणम् !



!! ओं !! जेनेदम् भूतम् भुवनम् भविस्यत् परिग्रहीत ममृते न सर्वम् ।॰ जेन जज्ञस् तायते सप्तहोता तन् मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ ४ ॥ ६३ ॥



हे परंब्रह्मदेव ! यह मन अखिल ब्रह्मांड का भूत, भविष्य, वर्तमानका ज्ञान, परं-ब्रह्मदेवका ज्ञान जाननेवाला है.

यह मन से यज्ञ करनेवाले यजमान अनेक प्रकारके महायज्ञ करते है.

वह हमारा मन में ब्रह्म हुं असा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ ४ ॥ ६३ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौत्तीस (३४) मन्त्र चार (४) प्रमाणम् !



!! ओं !! जस्मि नृचः साम जजुगुंखी जस्मिन् प्रतिष्ठिता रथाना भाविवाराः ।

जस्मिन् श्चितगुं सर्वं मोतम् प्रजानान् तन्
मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ५ ॥ ६४ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव! जैसे रथचक्र की नाभिमें चक्रके आरा अेकरूप रहता है. वैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, सर्व प्रकारका ज्ञानं यह मनमें रहता है. सर्व प्राणी पदार्थका सूक्ष्म ज्ञान यह मनमें रहता है.

वह हमारा मन में ब्रह्म हुं अैसा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ ५ ॥ ६४ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौत्तीस (३४) मन्त्र पांच (५) प्रमाणम् !.



॥ ओं ॥ सुखारथि रश्वाजिवजन् मनुष्या-न्ने नीयते भीशुभिर्वाजिन इव । हृत् प्रतिष्ठन् जदजिरन् जविष्ठन् तन् मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ ६ ॥ ६५॥



—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव ! जैसे रथ चलानेवाला बुध्धिवान् सारथी अपना निश्चय किया हुवा मार्गमें महावेगवान् सुन्दर बलवान् घोडाओको लगामदोरी की चालन चतुराइसे ले जाता है.

सर्व प्राणीमात्रका शरीरमें हृदयमन्दिर में रहा हुवा महासमर्थ यह मन है.

बलवान् विषयसुखमें वेगवान् इन्द्रिय वृत्तियोको चलानेवाला चंचल चतुर यह मन है.

वह हमारा मन में ब्रह्म हुं ऐसा शुभ संकल्पवाला हो. ॥ ६ ॥ ६५ ॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय चौत्तीस (३४) मन्त्र छो (६) प्रमाणम् !



!! शुक्ल यजुर्वेद ब्रह्मविद्या मन्त्र दर्शन !! ९० !!



!! ओं !! ईशावास्य मिदगुं सर्वं जत् किं च जगत्यां जगत । तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम ॥ १ ॥ ६६ ॥



— : अथ : —

यह स्थावर जंगम जड चेतन प्राणी पदार्थ मात्र और सर्व जगत, परंब्रह्मदेव स्वरूप है.

कोई भि प्राणी पदार्थ मेरा है ऐसा मनसे सत्य मानो नहि और आसक्तिका त्याग करके सर्व सुखका धर्मसे अनुभव करो. ॥ १ ॥ ६६ ॥

—

!! ओं !! कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषे-च्छतगुंसमाः । अेवन् त्वयि नान्यथे तोस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ २ ॥ ६७ ॥

— : अर्थ : —

यह मनुष्य लोकमें सर्व कर्म ब्रह्मार्पण करो. ब्रह्मार्पण कर्म करनेसे जन्म मरण

वन्धन छुट जाता है. वासनासे सकाम कर्म करनेसे जन्म मरण दुःख वढता है. अविनाशी ब्रह्मधाम नहि मिलता है.

हित मित पथ्य भोजन करो सो वर्ष आयुष्य पूर्ण करो. ॥ २ ॥ ६७॥



!! ओं !! असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः । तांस् ते प्रेत्यापि गच्छन्ति जे के चात्महनो जनाः ॥ ३ ॥ ६८॥



— : अर्थ : —

सर्व प्राणी पदार्थ मेरा है यह देह में हुं ऐसा अज्ञान से आसक्ति माननेवाला यह

शरीर मन्दिर में चैतन्य आत्मा ब्रह्मस्वरूप में हुं ऐसा ज्ञान विज्ञान नहि जाननेवाला. मनुष्यो आत्मघाती महापापी कहलाते है. और वह मरण हुये जड चेतन लक्ष चौराशी प्राणीमें जन्म धारण करके अनंत प्रकारके महान् घोर दुःख भोक्ते है ॥ ३ ॥ ६८ ॥



!! ओं !! अनेज देकम् मनसो जवीयो नैनद् देवा आप्नुवन् पूर्व मर्शत। तद्धा-वतो न्या नत्येति तिष्टत् तस्मिन् नपो मा-तरिश्वा दधाति ॥ ४ ॥ ६९ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! आप चैतन्य सूक्ष्म सर्व व्यापक है.

देह देवल के मन इन्द्रियो के देवको परं ब्रह्मदेवका दर्शन नहि होता है.

वायुदेव, वरुणदेव, सर्वदेव, परंब्रह्मदेव की चेतनाशक्तिसे सर्वे कार्य करते है.

वह परंब्रह्मदेव में ब्रह्म हुं ऐसा ध्यान धरो. ॥ ४ ॥ ६९ ॥



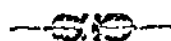
!! ओं !! तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ! तदन् तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य वाह्यतः ॥ ५ ॥ ७० ॥



— : अर्थ : —

वह परंब्रह्मदेव प्रेरक प्रकाशक है, स्थीर है, दुर है. समीप है. अंतरयामि है सर्वत्रं ब्रह्मांड में सुप्रसिध्ध व्यापक है. ॥ ५ ॥ ७० ॥

!! ओं !! यस्तु सर्वाणि भूतान्यात् मन्ये चानुपश्यति । सर्वे भूतेखु चात्मानन् ततो न विचिकित्सति ॥ ६ ॥ ७१ ॥



—: अर्थ :—

अद्वितीय अेक परंब्रह्मदेव सर्व व्यापक हैं. प्राणीमात्र परंब्रह्म स्वरूप हैं, सर्व प्राणी में परंब्रह्मदेव विराजमान है. अैसा ब्रह्मज्ञान दृढ होनेसे अज्ञान संशय नाश होता हैं. ॥ ६ ॥ ७१ ॥



!! ओं !! यस्मिन् सर्वाणि भूतान् यात् मेवाभूद् विजानतः । तत्र को मोहः कः शोक अेकत्व मनु पश्यतः ॥ ७ ॥ ७२ ॥

—: अर्थ :—

सर्व प्राणी मात्र ब्रह्मस्वरूप है. आत्मा ब्रह्म अेक स्वरूप है, आत्मा ब्रह्मकी अेकता जान लिया वहां कोई भि मोह शोक रहता नहि है. ॥ ७ ॥ ७२ ॥

!! ओं !! सपर्जगाच्छुक्र मकाय मव्रण मस्ना विरयुं शुध्ध मपाप विध्धम् ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम् भूर् जाथा तथ्य तोर् थान् व्यद्धाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥ ७३ ॥

-: अर्थ : -

वह परंब्रह्मदेव सर्वव्यापक है. परंब्रह्मदेव मनुष्य समान नव द्वारवाला, नाडीओवाला सप्त धातुका, कर्मका फल सुख दुख भोगने वाला मृत्यु धर्मका स्थुल शरीरवाला नहि है.

सत्य चैतन्य आनन्द स्वरूप है. सर्वका दृष्टा, सर्वत्र अखिल ब्रह्मांडका अधिपति सर्वेश्वर स्वयंभू अविनाशी परंब्रह्मदेव है.

अनंतकाल तप करके परंब्रह्मज्ञान प्राप्त करनेवाले ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ परंब्रह्मदेवको प्राप्त करते है. ॥ ८ ॥ ७३ ॥

.॥ओं॥ अन्धन् तमः प्रविशन्ति जे सम्भूति मुपासते। ततो भूय इव ते तमो जउ सम् भूत्यागुं रताः ॥ ९ ॥ ७४ ॥



— : अर्थ : —

क्षणभंगुर नाशमान् संसार के प्राणी पदार्थ का क्षणीक सुखकी इच्छावाले मनुष्यो वासनाओसे काम्यकर्म करके देवताओकी उपासना करते है. वह दुःखमय जन्ममरण संसारमें वारंवार प्रवेश करते है.

जो मनुष्य वेदशास्त्रोक्त ब्रह्मार्पण कर्म नहि करते हे वो भि जन्म मरण संसारमें वारवार आते है.

जो मनुष्य वेद धर्मशास्त्रका धर्म नियम पालन नहि करते है. और केवल वेदान्त ज्ञानके पुस्तककी वातो करते है ऐसे धर्म, कर्म ब्रह्मार्पण ज्ञानरहित ब्रह्मनिष्टाके अनुभवरहित स्वच्छंदि स्वेच्छाचारी जन्म मर्ण संसारमें वारवार आते है, अनन्त दुखको पाते है. ॥ ९ ॥ ७४ ॥



!! ओं !! अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात । इति सुश्रुम धीराणां जेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥ ७५ ॥



–: अर्थ :–

प्राचीन महर्पियोका प्रवचन उपदेश

सुनते हैं 'कि सनातन वेदशास्त्रके नित्य नैमित्तिक कर्म ब्रह्मार्पण करनेसे मन, वुध्धि, चित्त, परं पवित्र शुध्ध होता है. और ऐश्वर्य विभूति रीध्धि सिध्धि प्राप्त होता है.

मैं ब्रह्म हुं ऐसा आत्मा ब्रह्मको अेकता रूप ब्रह्म ध्यान धरता है, वो मोक्ष ब्रह्मपद को पाता है, जीवनमुक्त पुरुपो ऐसा कर्म, ज्ञान को साथ साधन करता है. ॥१०॥७५॥



॥ ॐ ॥ सम्भूतिं च विनाशं च जस् तद् वेदो भयगुं सह । विनाशेन मृत्युन् तोर्त्वा सम्भूत्यामृत मश्नुते ॥ ११ ॥ ७६ ॥



—: अर्थ :—

मुमुक्षु और जीवन्मुक्त मनुष्योः—

सनातन वेदशास्त्रमें कहेहुये नित्य नैमेत्तिक कर्म ब्रह्मार्पण करनेसे मन, बुध्धि, चित्तकी सर्व वासना शांत विराम होती है.

और में आत्मा ब्रह्म हुं ऐसा ध्यान भजनका तीव्र अभ्यास करनेसे परंब्रह्मरूप हो जाता है. यह कर्मज्ञान समुच्चय साधन प्राचीन महर्षियोका उपदेश है.

यह उपदेश ब्रह्मर्षि वसिष्ठ ऋषि, ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य ऋषि, राजर्षि जनक, राजर्षि राम, कृष्ण आदि अनेक राजर्षियो पालन कर गये है. ॥ ११ ॥ ७६ ॥

॥ ओं ॥ अन्धन्तमः प्रविशन्ति जे

विद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो ज उ
विद्यायागुं रताः ॥ १२ ॥७७॥

— : अर्थ : —

यह भु, मृत्युलोक, स्वर्गलोक के शरीर इन्द्रिय सुखकी इच्छासे काम्यकर्म करते है नाना प्रकारके तान्त्रिक उपासना साधना ओ करते हे. वह वारवार जन्ममरण संसार के दुःख पाते हैं.

सनातन वेदशास्त्रकी वर्णाश्रम धर्मकी आज्ञा प्रमाण ब्रह्मार्पण सत्कर्म करते नहि.

और केवल वेदान्त ज्ञानकी वातो करते हे ऐसे धर्म, कर्म, ज्ञान, हिन पढत मूर्ख

पंडित अभिमानी लोक जन्म मर्ण संसार दुःखमें गिरते है. ॥ १२ ॥ ७१ ॥

!! ओं !! अन्यदेवाहुर् विद्याया अन्यदाहुरविद्यायाः इति शुश्रुमधीराणां जेनस् तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥ ७८ ॥

—ःअर्थः—

प्राचीन प्रज्ञावान् महर्षि ब्रह्मर्षियोका प्रवचन उपदेश हमने सुना है.

यह लोकके परलोकके शरीर सुखवासना से देवताओकी साधना उपासना तप व्रत धर्म कर्म करनेसे जन्म मरण फल मिलता है.

नित्य, नैमेत्तिक, वेदशास्त्रोक्त ब्रह्मार्पण कर्म करनेसे मन पवित्र होकर आत्मज्ञान पाता हैं.

आत्मा ब्रह्मकी अेकता करके में ब्रह्म हुं अैसा ब्रह्मज्ञान धृढ करनेसे परंब्रह्मको पाता हे. ॥ १३ ॥ ७८ ॥

— : अर्थ : —

प्राचीन प्रज्ञावान् महर्षि ब्रह्मर्षियो का प्रवचन उपदेश हमने सुना है.

यहलोकके परलोकके शरीर सुखवासनासे देवताओकी साधना उपासना तप व्रत धर्म कर्म करने से जन्म मरण फल मिलता है.

नित्य नैमित्तिक वेदशास्त्रोक्त ब्रह्मार्पण कर्म करनेसे मन पवित्र हो कर आत्मज्ञान पाता है.

आत्मा ब्रह्मकी अेकता करके में ब्रह्म हुं अेसा ब्रह्मज्ञान धृढ करनेसे परंब्रह्मको पाता है. ॥ १३ ॥ ७८ ॥

!! ओं !! विद्यां चाविद्यां च जस् तद् वेदो भयशुं सह । अविद्यया मृत्युन् तीर्त्वा विद्यया मृत मश्नुते ॥ १४ ॥ ७९ ॥

— : अर्थ : —

विद्या—में आत्मा ब्रह्म हुं अेसा द्दढ ब्रह्म ज्ञानको कहते हे.

अविद्या–सनातन वेदशास्त्रोक्त कर्म करनेको कहते हैं.

वह दो अेक साथ करनेवाले कर्मसे चित्त शुध्धि पाते है.

कृत कृत्य होते है. और परंब्रह्म ज्ञानसे अमृत मोक्षपदको पाते है. ॥ १४ ॥ ७९ ॥

॥ ओं ॥ वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तगुं शरीरम् । ओ....म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतगुं स्मर ॥ १५ ॥ ८० ॥

— : अर्थ : —

ओमूकार मन्त्रका सदा जप करनेसे,

में ब्रह्म हुं ऐसा ध्यान धरनेसे, मनुष्य मरण समये ब्रह्मस्वरूपको पाता हे.

वह पवित्र मनुष्यका देह अग्निमें भस्म होता हे. ॥ १५ ॥ ८० ॥

!! ओं !! अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । जुजोध्य-स्मज् जुहुराणमेनो भूयिष्टान् ते नम उक्तिम् विधेम ॥ १६ ॥ ८१ ॥

— : अथ : —

हे परंब्रह्मस्वरूप ! प्रकाशक अग्निदेव ! हमको ऐश्वर्य सुख और ब्रह्मज्ञान दो ! हमारा सर्व कर्मको आप जानते हैं.

हमारा घोर तीव्र महापाप कर्मका नाश करो, हम आपको अनन्त कोटि नमस्कार प्रार्थना करते है. ॥ १६ ॥ ८१ ॥

!! ओं !! हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । जोसावादित्ये पुरुखः सो सा वहम् ॥ १७ ॥ ८२ ॥

—: अर्थ :—

वह तेजोमय सूर्यदेवके प्रत्यक्ष ज्योति मंडलमें भगवान् परंब्रह्मदेव विराजमान् दर्शन देते है.

सूर्यमंडलमें जो परंब्रह्मदेव है. वह परं-ब्रह्मदेव में हुं असा सदा ध्यान भजन करो.-
॥ १७ ॥ ८२ ॥



!! ओ....म् खं ब्रह्म !! १८ ॥ ८३ ॥

— : अर्थ : —

हे सर्व मनुष्यो ! वह परंब्रह्मदेव ! आकाशके जैसा सूक्ष्म, निर्लेप, निर्विकार, निराकार सर्वव्यापक है.

ओम् ब्रह्म मन्त्रका जप करो !

में परंब्रह्म स्वरूप हुं असा सदा ध्यान करो ! ॥ १८ ॥ ८३ ॥



!! ओं !! परंब्रह्मदेवस्वरूप प्रत्यक्षदेव भगवान् सूर्यदेव उपदेशितम् महर्षि याज्ञ-ल्क्य ब्रह्मर्षि अधितम् उपदेशितम् ईश मन्त्रोपनिषदम् ॥

शुक्ल यजुर्वेद माध्यन् दिन वाजसनेयि संहिता दीर्घपाठ उपनिषद् ब्रह्मविद्या अठारह मन्त्र (१८)का अध्याय चालीस (४०) संपूर्णम् प्रमाणम् ! !

शुक्ल यजुर्वेद ब्रह्मविद्या ईश मन्त्रोपनिषद् मन्त्रदर्शन संपूर्णम्

!! जय ओं नमः !!



सूर्यमंडलमें जो परंब्रह्मदेव है. वह परंब्रह्मदेव में हुं असा सदा ध्यान भजन करो.
॥ १७ ॥ ८२ ॥



!! ओ....म् खं ब्रह्म !! १८ ॥ ८३ ॥

—: अर्थ :—

हे सर्व मनुष्यो ! वह परंब्रह्मदेव ! आकाशके जेसा सूक्ष्म, निर्लेप, निर्विकार, निराकार सर्वव्यापक है.

ओम् ब्रह्म मन्त्रका जप करो !

में परंब्रह्म स्वरूप हुं असा सदा ध्यान करो ! ॥ १८ ॥ ८३ ॥



!!शांतिमन्त्र स्तुति दर्शन !!९२!!



!! ओं !! पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मे वाव शिष्यते ॥ ८५ ॥



— : अर्थ : —

यह परंब्रह्मदेव पूर्ण सर्व व्यापक है, यह अखिल ब्रह्मांड संपूर्ण ब्रह्मस्वरूप है. संपूर्ण जगत परंब्रह्मसे प्रगट होता है, चैतन आनन्द ब्रह्म प्रभावसे यह जगत चलता है. यह जगत परंब्रह्ममें अनुभवसिध्ध अन्तमें विलय होता है. ॥ ८६ ॥



!!सामवेद मन्त्र दर्शन !!९१!!



!! ओं !! सोमं राजानं वरुणमग्नि मन-वारभा महे । आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ ८४ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मस्वरूप! देव महाराजा सोमदेव, वरुणदेव, अग्निदेव, आदित्यदेव, विष्णुदेव, सूर्यदेव, ब्रह्मादेव, बृहस्पतिदेव, सर्व देवोका हम ध्यान पूजन नमस्कार करते है. सर्व देवो हमारा परम कल्याण करो ! ॥८४॥

॥ सामवेद प्रमाणम् ॥



हे वरुणदेव ! हमको शान्ति सम्प्रदान करो.

हे अर्यमादेव ! हमको आनन्द प्राप्त करो.

हे इन्द्रदेव ! हमको ऐश्वर्यसुख सम्प्रदान करो.

हे देवगुरु बृहस्पतिदेव ! हमको परम मंगल सुख प्राप्त करो.

हे उरुक्रम भगवान् महाविष्णुदेव ! हमको मोक्षका महासुख समर्पण करो.

हे परंब्रह्मदेव ! हम आपको नमस्कार करते हैं.

हे वायुदेव ! आपको हम वन्दन करते हैं.

!! ओं !! शन्नो मित्रः शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्यमा, शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णु रुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे, नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन् मा मवतु, तद्वक्तार मवतु, अवतु माम्, अवतु वक्तारम् ॥ ८७ ॥

! ओं ! शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मस्वरूप ! हे मित्रदेव ! हमको सुख सम्प्रदान करो.

संकल्पवाला हो. सर्व कर्म ब्रह्मार्पण करने वाला हो. में ब्रह्मस्वरूप हुं ऐसा सदा सुनिश्चय चिन्तनवाला हो. हमको सदा सुख, शान्ति, आनन्द अर्पण करो. हम आपको नमस्कार करते है. ॥ ८७ ॥

ऋग्वेद मंडल दस (१०) सूक्त वोस प्रमाणम् !

॥ऋग्वेद उपदेश मन्त्र दर्शन॥

!! ओं !! सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥ ८८ ॥

आप प्रत्यक्ष परंब्रह्म है.

आपको हम प्रत्यक्ष प्रगट परंब्रह्म कहते है.

हम वार वार प्रार्थना करते है.

हमारा शिष्योका और उपदेशक सद्‌गुरुदेवका महारक्षण करो, परम कल्याण करो. ॥ ८६ ॥



!!ओं!! भद्रन्नो अपिवातय मनः ॥९७॥
!!ओं!! शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

—: अर्थ :—

हे परंब्रह्मदेव ! हमारा मन शुभ शिव

संकल्पवाला हो. सर्व कर्म ब्रह्मार्पण करने वाला हो. में ब्रह्मस्वरूप हुं असा सदा सुनिश्चय चिन्तनवाला हो. हमको सदा सुख, शान्ति, आनन्द अर्पण करो. हम आपको नमस्कार करते है. ॥ ८७ ॥

ऋग्वेद मंडल दस (१०) सूक्त वोस प्रमाणम् !

॥ऋग्वेद उपदेश मन्त्र दर्शन॥

!! ओं !! सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवाभागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥ ९८ ॥

— : अर्थ : —

हे सज्जनो ! आप सर्व परस्पर प्रेमसे मील करके कार्य काम वर्तो. परस्पर प्रेमसे बोलो. मनका विचार प्रेमसे जानो, आचार, विचार, उच्चारमें सर्वसे अेकता करो. प्राचीन समयमें ज्ञानीजनो परस्पर प्रेमसे मिलकर सर्व कार्य करते थे. आप सर्व वर्तमान समयमें अैसा करो. ॥ ८८ ॥

ऋग्वेद मंडल दस (१०) सूक्त (१९) प्रमाणम् ॥



!! ओं !! समानो मन्त्रः समितिः समानि समानं मनः सह चित्त मेषाम् ।

समानं मन्त्र मभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ८९ ॥



—: अर्थ :—

हे सज्जनो! आप सर्वका बिचार अेक हो.

आप सर्वकी सभा अेक विचारवाली हो.

आप सर्वका मन संकल्प अेक हो.

आप सर्वका कर्तव्य निश्चय अेक हो.

आप सर्वको अेक होनेकी अेकमतसे कार्य करनेकी हम आज्ञा करते है. ॥८९॥



!! ओं !! समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः । समान मस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति ॥ ९० ॥



— : अर्थ : —

आप सर्वके संकल्प अेक हो. आप सर्वके हृदयवल अेक हो. आप सर्वकी मनोवृत्तियों अेक हो. आप सर्व परस्पर सुन्दर सहायता से कार्य करनेवाले हो. ॥ ९० ॥

ऋग्वेद मंडल दस (१०) प्रमाणम् ।



!! अथर्ववेद उपदेश मन्त्र !!

!! दर्शन !! ९३ !!



!! ओं !! स हृदयं सां मनस्य म विद्वेषं कृणोमि वः । अन्यो अन्य मभि हर्यत वत्सं जात मिवाघ्न्या ॥ ९१ ॥



—: अर्थ :—

हे सज्जनो ! आप सर्वको परस्परमें द्वेष नहि करनेका और अेकमनसे अेक हृदयके विचारसे रहनेका हम उपदेश करते है.



गौ अपना जन्म दिया हुवा वछडा पर प्रेम करती है आप सर्व परस्परमें वो प्रेमसे रहो कार्य करो. ॥ ९१ ॥

अथर्ववेद काण्ड तीन (३) सूक्त मन्त्र तीस (३०)

!! ओं !! अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः । जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्ति वाम् ॥ ९२ ॥

—: अर्थ :—.

पुत्र पितानी अनुकुल आज्ञा पालन करने वाला हो.

पुत्र माताकी आज्ञा सप्रेम पालन करनेवाला हो.

धर्मपत्नि स्त्रीदेवी पतिदेवकी आज्ञापालन करनेवाली हो.

और प्रिय मधुर वाणी बोलनेवाली हो.
तुम सर्व शान्ति सुखको प्राप्त हो. ॥९२॥

अथर्ववेद काण्ड तीन (३) सूक्त मन्त्र तीस (३०) प्रमाणम्

!!ओं!! मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसार मुत स्वसा । सम्यं च स व्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥ ९३ ॥

—: अर्थ : —

हे सज्जनो ! आप सर्व भाई भाई साथ परस्पर द्वेष न करो. बहेन बहेन साथ द्वेष न करो. सुशील स्वभाववाळा हो परस्पर प्रेमसे रहो. सत्य प्रिय हित मधुर वचन बोलो. ॥ ९३ ॥

अथर्ववेद काण्ड तोन (३) सूक्त मन्त्र (३०)

!! ओं !! समानी प्रपा सहवोन्न भागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि । सम्यं चोग्निं सपर्य तारा नाभि मिवाभितः॥९४॥

—: अर्थ : —

हे सज्जनो ! आप सर्व परस्पर प्रेमभाव से खाओ पीओ सर्व साथ मिल कर सर्व

कार्य करो. आप सर्व अनन्य प्रेमसे परंब्रह्म देवकी पराभक्ति करो. आप सबको हमारा यह उपदेश है. ॥ ९४ ॥

अथर्ववेद काण्ड तीन (३) सूक्त मन्त्र (३०)

!! कृष्ण यजुर्वेद उपदेश !!

मन्त्र दर्शन !! ९४ !!

!! ओं !! सह ना ववतु, सहनौ भुनक्तु, सहवीर्यं करवा वहै, तेजस्वीनावधीतमस्तु, मा विद् विषावहै ॥ ९५ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव ! हमारा दोनोका अच्छी रीतसे सुरक्षण करो. हम दोनो सदा आनन्द सुखका अनुभव करे अैसा करो. हम दोनो बलवान होकर पुरुषार्थ करे अैसा करो, हमारा दोनोका अभ्यास किया हुवा ज्ञान विज्ञान तेजस्वी रहो.

हम दोनो परस्पर में द्वेष न करे अैसा करो. हमारा दोनोका सर्व प्रकारे परम कल्याण करो. ॥ ९५ ॥

कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय उपनिषद् ब्रह्मानंदवल्ली दो (२) अनुवाक् दस (१०) भृगुवल्ली तीन (३) प्रमाणम्.

॥सर्वदेव मन्त्र ब्रह्मधाम॥

॥ दर्शन ॥ ९५ ॥



!! ओं !! यत्र ब्रह्म विदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । अग्नि र्मा तत्र नयत्वग्निर् मेधा दधातु मे अग्नये स्वाहा ॥ ९६ ॥



—: अर्थः —

हे परंब्रह्मदेवस्वरूप अग्निदेव ! हमको तेजस्वो मेधा बुध्धि अर्पण करो. यज्ञ, दान, तप, घृत, दीक्षा धारण करनेवाले तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि,

परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है, वह परंब्रह्मदेव का धाममें हमको ले जाओ, श्रध्धा भक्ति से हम आपको यज्ञमें आहुति देते है. नमस्कार करते है, ॥९६॥

अथर्ववेदकाण्ड (१९) मन्त्र सूक्त (४३) प्रमाणम्

!! ओं !! यत्र ब्रह्म विदो यान्ति दीक्षया तपसा सह। वायु र्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे वायवे स्वाहा ॥ ९७ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेवस्वरूप वायुदेव ! हमको महान् प्राण बल आत्मशक्ति अर्पण करो. यज्ञ, दान, तप, व्रत, दीक्षा धारण करनेवाले

तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है, वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ, श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञमें आहुति देते है. नमस्कार करते है. ॥ ९७ ॥

अथर्ववेद काण्ड उनीस (१९) मन्त्र सूक्त (४३) प्रमाणम् ।



!! ओं !! यत्र ब्रह्म विदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे सूर्याय स्वाहा ॥ ९८ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेवस्वरूप सूर्यदेव ! हमको दोनो नेत्रोमें सुन्दर दर्शन करनेका महान्

तेज अर्पण करो.

यज्ञ, दान, तप, वृत, दीक्षा धारण करनेवाले तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है. वह परंब्रह्मदेवका धाममें हमको ले जाओ. श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञमें आहुति देते है, नमस्कार करते हैं. ॥ ९८ ॥

अथर्ववेद काण्ड (१९) मन्त्र सूक्त (४३)

!! ओं !! यत्र ब्रह्म विदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश् चन्द्रो दधातु मे चन्द्राय स्वाहा ॥ ९९ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेवस्वरूप चन्द्रमादेव ! हमारा

सर्व संकल्प सिध्ध हो अैसा महान् मनोबल अर्पण करो. यज्ञ, दान, तप, वृत, दीक्षा धारण करनेवाले तपस्वो, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ. श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञ में आहुति देते है नमस्कार करते है. ॥९९॥

अथर्ववेद काण्ड (१९) मन्त्र सूक्त (४३)प्रमाणम्!



!! ओं !! यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे सोमाय स्वाहा ॥ १०० ॥

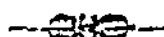


— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप सोमदेव ! हमको दुध, दहीं, मख्खन्, घी सहत (मध) सक्कर प्रिय मधुर अमृत भोजन अर्पण करो.

यज्ञ, दान, तप, वृत दीक्षा धारण करने वाले तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ. श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञमें आहुति देते है नमस्कार करते है. ॥१००॥

अथर्ववेद काण्ड (१९) मन्त्र सूक्त (४३) प्रमाणम् !



!! ओं !! यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह। इन्द्रो मा तत्र नयतु बल मिन्द्रो दधातु मे इन्द्राय स्वाहा ॥ १०१ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप इन्द्रदेव ! हमको संकल्प सिध्धिवाला सर्व प्रकारका महान् ऐश्वर्यबल अर्पण करो.

यज्ञ, दान, तप, व्रत, दीक्षा धारण करनेवाले तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है. वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ. श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञ में आहुति देते है, नमस्कार करते है. ॥ १०१ ॥

अथर्ववेद काण्ड १९ मन्त्र सूक्त ४३ प्रमाणम्

!! ओं !! यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह। आपो मा तत्र नयन्त्वमृत मोपतिष्ठतु अद्भ्यः स्वाहा ॥ १०२ ॥

—: अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप वरुणदेव ! हमको प्रिय मधुर शीतल तेजस्वी महा वलवान् अमृतजल अर्पण करो.

यज्ञ, दान, तप, व्रत, दीक्षा धारण करने वाले तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, परंब्रह्मदेवके धाममें जाते है.

वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ श्रध्धा भक्तिसे हम आपको यज्ञ में आहुति देते है, नमस्कार करते है. ॥ १०२ ॥

अथर्ववेद कांड १९ मन्त्र सुक्त ४३ प्रमाणम् !

!! ओं !! यत्र ब्रह्म विदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा दधातु मे ब्रह्मणे स्वाहा ॥ १०३ ॥



— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मदेव स्वरूप ब्रह्मादेव ! हमको महान् ब्रह्मविद्याका में ब्रह्म हुं ऐसा ब्रह्मज्ञान अर्पण करो. यज्ञ, दान, तप, वृत, दीक्षा धारण करनेवाले तपस्वी ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मर्षि, महर्षि, राजर्षि, देवर्षि परंब्रह्मदेव के धाममें जाते है. वह परंब्रह्मदेवके धाममें हमको ले जाओ. श्रध्धा भक्तिसे हम आप को यज्ञमें आहुति देते है. नमस्कार करते है. ॥ १०३ ॥

अथर्ववेद काण्ड १९ मन्त्र सूक्त ४३ प्रमाणम् !



॥ अग्निदेव आशीर्वाद मन्त्र दर्शन ॥ ९६ ॥



!! ओं !! भद्रं वद दक्षिणतो भद्र मुत्तरतो वद । भद्रं पुरस्तान् नो वद भद्रं पश्चात् कपिन् जल ॥ १०४ ॥

!!ओं!! भद्रं वद पुत्रै र्भद्रं वद गृहेषु च। भद्र मस्माकन् नो वद भद्रन् नो अभयं वद ॥ १०५ ॥

!! ओं !! भद्र मधस्तान् नो वद भद्र मुपरिष्टान् नो वद् भद्रन् भद्रन् न आवद भद्रन् नः सर्वतो वद ॥ १०६ ॥

!! ओं !! कपिल ज़टीन सर्व भक्षन् चाग्निम् प्रत्यक्ष देवतम् । वरुणं च वशास्यग्रे मम पुत्रांश्च मम पुत्रांश्च रक्षतु ओं नमः ॥ १०७ ॥

— : अर्थ : —

हे परंब्रह्मस्वरूप ! प्रत्यक्ष मंगलमूर्ति भगवान् अग्निदेव ! हमको दक्षिण दिशासे आशीर्वाद देकर हमारा कल्याण करो !

हमको उत्तर दिशासे आशीर्वाद दे कर हमारा कल्याण करो !

हमको पूर्व दिशासे आशीर्वाद दे कर हमारा कल्याण करो !

हमको पश्चिम दिशासे आशीर्वाद देकर हमारा कल्याण करो ! ॥ १०४ ॥

हमारा गृह मन्दिरमें सौभाग्यवंतां धर्मपत्नि श्रीदेवी और पुत्र पुत्रिको आशीर्वाद देकर हमारा परं कल्याण करो !

अखिल ब्रह्मांडके सर्व भयको दूर करो.

हम सर्वको आशीर्वाद देकर हमारा परं कल्याण करो ! ॥ १०५ ॥

हे अग्निदेव ! आप पृथ्वीपरसे आशीर्वाद देकर हमारा कल्याण करो !

आप स्वर्गलोकसे आशार्वाद देकर हमारा कल्याण करो !

हे परंब्रह्म स्वरूप ! भगवान् अग्निदेव !

हम आपको यज्ञसे आहुति देते है. हम आपका यजन, पूजन, ध्यान, दर्शन, वन्दन करते है. आप हमारी सर्व इच्छा संपूण करो ! सुप्रसन्न हो. वरप्रदान आशीर्वाद दे कर हमारा परम कल्याण करो ! ॥ १०६ ॥

हे परंब्रह्मस्वरूप ! भगवान् अग्निदेव ! वेदमन्त्रोसे सर्व देवताओकी आहुति आपको देते है आप स्वीकार करते है.

हे परंब्रह्मस्वरूप ! वरुणदेव ! अग्निदेव ! सर्वयज्ञ शुभ कर्म में आप दोनो देवोका ध्यान पूजन होता है आप सुप्रसन्न वरप्रद हो हमारा पुत्रपरिवारका सदा सुरक्षण करो !

आपको हम ! ओं नमः ! मन्त्र पढ कर के नमस्कार करते है ! ॥ १०७ ॥

ऋग्वेदसंहिता परिशिष्ट खिलसुक्त प्रमाणम् !



सतीदेवी आशीर्वाद दर्शनं ॥९७॥



!! ओं !! सु मंगला भव वर्षाणि शतं सार्धं तु सुव्रता । तेजस्वी च यशस्वी च धर्मपत्नी पतिव्रता ॥ १०८ ॥

!! ओं !! जनयद् वहु पुत्राणि मा च दुःखं लभेत् क्वचित् । भर्ता ते सोमपा नित्यं भवेद् धर्म परायणः ॥ १०९ ॥

!! ओं !! अष्ट पुत्रा भव त्वं च सुभगा च पतिव्रता । भर्तुश्चैव पितुर्भ्रातु हृदयानन्दिनी सदा ॥ ११० ॥

!!ओं!! इन्द्रस्य तु यथेन्द्राणी श्रीधरस्य यथा श्रिया । शंकरस्य यथा गौरी तद् भर्तु रपि भर्तरि ॥ १११ ॥

!! ओं !! अत्रे र्यथानुसूया स्याद् वसिष्ठ-स्याप्यरुन्धती । कौशिकस्य यथा सती तथा त्वमपि भर्तरि ॥ ११२ ॥

—: अर्थ :—

हे सुमंगल स्वरूप ! सौभाग्यवती सती देवी ! तुमारा पतिदेव साथे तुम सो वर्षका आयुष्य संपूण करो ! हे पतिव्रता ! पति-देवको धर्मपत्नि सतीदेवी तुम सदा तेजस्वी यशस्वी हो ! ॥ १०८ ॥

हे सतीदेवी ! तुम सदा अनेक पुत्रोको माता हो ! तुमारा सर्व दुःख दूर हो ! हे सतीदेवी ! तुमारी साथ तुमारा पतिदेव नित्य सदा महायज्ञोसे भगवान् परंब्रह्मदेवका यजन पूजन करनेवाला हो ! सनातनवेदधर्म पालन करनेवाला हो! ॥१०९॥

हे सतीदेवी ! तुम सदा सौभाग्यवंता पतिव्रता रहो. और आठ पुत्रोकी माता हो, तुमारा पतिदेव, तुमारा पिताश्री, तुमारा भाईश्री, सर्वको सदा हृदयमें आनन्द देनेवाली हो ॥ ११० ॥

हे सतीदेवी ! जैसे तेजोमय स्वर्गलोकमें सर्वदेवोका महाराजा इन्द्रदेवको साथ सौभाग्यवंता महासती इन्द्राणीदेवी पति-

वृता धर्मसे रहते है. वैसे तुम भि है सौभाग्यवंता सतीदेवी तुमारा पतिदेवकी साथ पतिवृता धर्मसे रहो.

जैसे तेजोमय वैकुंठलोकमें भगवान् विष्णुदेवके साथ सौभाग्यवंता महासती लक्ष्मीदेवी ! पतिवृता धर्मसे रहते है. वैसे तुम भी हे सौभाग्यवंता सतीदेवी तुमारा पतिदेवकी साथ पतिवृता धर्मसे रहो.

जेसे तेजोमय कैलासलोकमें भगवान् शंकर महादेवके साथ सौभाग्यवंता महासती गौरीदेवो, पतिवृता धर्मसे रहते है. वैसे तुम भि हे सौभाग्यवंता सतीदेवी, तुमारा पतिदेव को साथ पतिवृता धर्मसे रहो ॥ १११ ॥

जैसे महर्षि ब्रह्मर्षि अत्रिऋषिके साथ सौभाग्यवंता महासती अनसूयादेवी ! पतिवृता धर्मसे रहते है. वैसे तुम भि हे, सौभाग्यवंता सतीदेवी ! तुमारा पतिदेवके साथ पतिवृता धर्मसे रहो.

जैसे महर्षि ब्रह्मर्षि वसिष्ठ ऋषिके साथ सौभाग्यवंतां महासती अरुन्धतीदेवी ! पतिवृता धर्मसे रहते हे. वैसे तुम भि हे सौभाग्यवंता सतीदेवी ! तुमारा पतिदेवके साथ पतिवृता धर्मसे रहो.

जैसे महर्षि ब्रह्मर्षि कौशिक ऋषिके साथ सौभाग्यवंता महासती सतीदेवी ! पतिवृता धर्मसे रहते है. वैसे तुम भि हे सौभाग्यवंता

सतोदेवी तुमारा पतिदेवके साथ पतिव्रता धर्मसे रहो. ॥ ११२ ॥

ऋग्वेद संहिता परिशिष्ट खिल सूक्त प्रमाणम् ।

॥ वेद मन्त्र अर्थ दर्शन संपूर्णम् ॥

॥ भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम् ॥

—: अर्थ :—

हे मन सदा ओम् ब्रह्मका ध्यान भजन करो.

॥ जय ओम् नमः ॥



ओं

!जयःहिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि!

!ओम्कार भजन दर्शन!

!ग्रंथकर्तानामस्थानदर्शन!!९८!!

—:o:—

राग गजलः—प्रभुने पामवा माटे अजब आ मार्ग सिधो छे.

निवासी स्तम्भ तीरथना
टोळकीया विप्र छे पोते,
टोळकीया विप्रनी वाडी
समोपे अे सदा रहे छे ॥ १ ॥

अटक छे छिन्डोया पंडया
गोत्र शांडिलना अे छे,
प्रवर छे त्रण तेओना
शांडिल–असित, देवल अे ॥ २ ॥

वाजसनेयी माध्यन्दिनी
शाखा तेओनी कहेवाअे,
शुक्ल यजूर्वेदना
वेदान्ती तेह पुरा छे ॥ ३ ॥

हरेराम सुन्नराम
ब्रह्मर्षिना पुत्र अे छे,
गुरुदेव परमसिध्ध,
योगेन्द्र ब्रह्मनिष्ठ छे ॥ ४ ॥

सनातन वेद धर्मनो
सदुपदेश सदा दे छे,
रहे छे देश गुर्जरमां
अमदावाद साभरतीरे ॥ ५ ॥

सारंगपुरमां पंडितपोळे
ऋषिआश्रम गुरुद्वारे,
संवत ओगणीसें नव्वाणु
अपाडी गुरुपूर्णिमा ॥ ६ ॥

ब्रह्म प्रेरणा गवाए आ
मुमुक्षु भक्तना माटे,
ब्रह्म मुहूर्ते भजे ब्रह्म
ऋषि गुरुदेव गावे छे ॥ ७ ॥



!! जयहिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार !!

!! भजन दर्शन !!



!!शुभग्रन्थ संरक्षण दर्शन !!९९!!



तैलाद्, रक्षेद्, जलाद्, रक्षेद्, रक्षेद्, छिथिल बंधनात्। मुर्खहस्ते न दातव्यम् एवं वदति पुस्तकम् ॥ १ ॥

विश्वके विवेकवंत सर्व स्त्री पुरुषो को यह पुस्तक ऐसा कहता है किः—

तेलके सर्व चिकना पदार्थो सें मेरा रक्षण करना, पानीके सर्व प्रवाही तत्वो सें मेरा अखंड रक्षण करना!

मेरे रहने के लिये अच्छी सुरक्षित भूमि में सुन्दर शोभायमान कोमल प्रिय आसन में सप्रेम बंधन बांधके मेरा रक्षण करना!

ज्ञान रहित तामसी विचारके मूर्ख मनुष्यो के हाथमें मुझे रखना नहि!

सर्व प्रकार से सुन्दर रीतसे मेरा सदा रक्षण करना!



!! जय हिन्द श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि ओम्कार !!

!! भजन दर्शन !!



!!ग्रन्थ पूर्ण मंगल दर्शन!! १ ० ० !!



जयहिन्द सनातन वेद धर्मो विजयतेतराम् !!

जय हिन्दका सदा जय हो !

अखिल विश्वमें सनातन वेद धर्मका जय जय विजय हो !! ओं !!



!!ओं!! गणपतिं, प्रियपतिं, निधिपतिं, हवामहे !!

विश्वके परमेश्वर, आन्दके महेश्वर, ऐश्वर्य के सर्वेश्वर, ऐसे परंब्रह्म भगवान् का ध्यान धरकेः—

!! जय हिन्द् श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि ओंकार भजन दर्शन !! नामका ग्रन्थ हम संपूर्ण करते है !!

!! श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि उपदेश !!

मानव जन्म धर्या का मान,
करना तप यज्ञ बहु दान;
धरना ब्रह्म स्वरूप का ध्यान,
करना ओम् मन्त्रका गान;

मात पिता गुरु जनको मान,
सूर्य अग्नि को सन्मान;
चेतन चतुर पुरुषको ज्ञान,
गुरुदेव ब्रह्मर्षि विज्ञान. ॥ १ ॥

सतचित् आनंद सुखकंद,
जय जय ओम् निरंजन ब्रह्म. ॥१॥

जय ओम् नमो जय ओम् नमो,
जय ओम् नमो जय ओम्. ॥ २ ॥

भज मन ओम् ब्रह्म निरन्तरम्. ॥ ३ ॥

अर्थः—हे मन ! सदा ओम् ब्रह्मका ध्यान भजन करो. ॥ ४ ॥

!! शिख धर्म खड्ग महाशक्ति स्तोत्र दर्शन !!१०१!!

खग खंड विहंडम्, खल दल खंडम,
अटर न मंहम्, वरभंडम्,
भुज दंड अखंडम्, तेज प्रचंडम्,
ज्योनि अधंडम्, भानु प्रभाम्;
सुखसन्ता करणम्, किल विख हरणम्,
दुर्मति दलनम्, अति शरणम्;
जय जय जग कारण, स्रृष्टि उभारण,
मम प्रति पालन, जय तेगम् ! ॥ १ ॥

ओं श्री गुरु गोविंदसिंहजी शिख खालसा धर्मगुरु विरचितं तेग (तलवार) स्तोत्रम् संपूर्णम्.

!! जय ओं नमः !!